मूल्य : ₹ 25

तीरभुक्ति

वर्ष : 1, अंक : 4, अप्रैल-जून 2019

अखिल भारतीय मिथिला संघक शोध पत्रिका

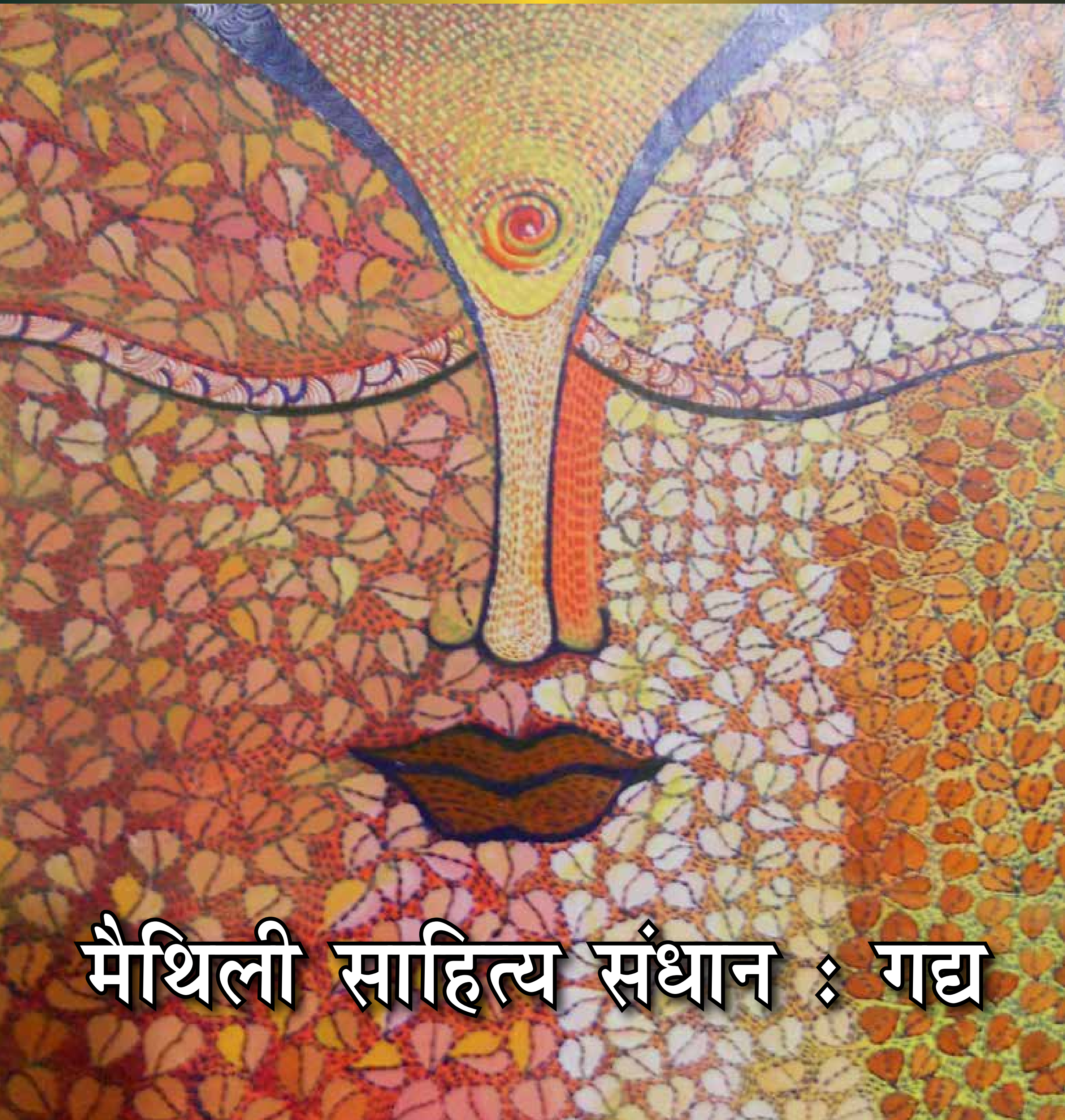

मैथिली साहित्य संधान : गद्य

अखिल भारतीय मिथिला संघक प्रकाशन अब ऑनलाइन कीनू

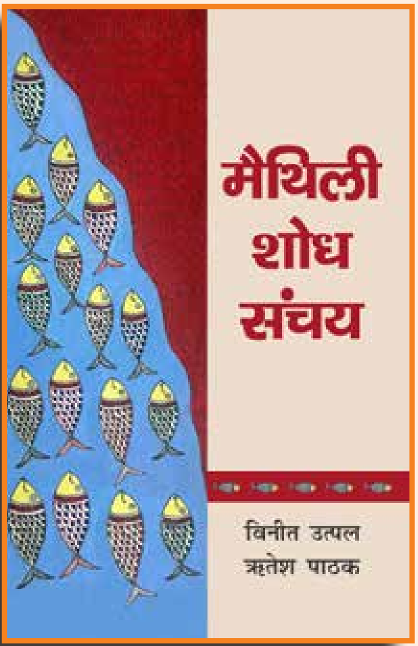

मैथिली शोध संचय

संपादन : विनीत उत्पल, ऋतेश पाठक

मूल्य : ₹ 200, पृष्ठ : 224

'मैथिली शोध संचय' पोथीमे एक दिस मिथिलाक अनमोल संस्कृतिक व्यापकता भेटत तं दोसर दिस मिथिलाक औद्योगिक विकास, मिथिलाक पृथक राज्यक अवधारणा पर सुचिन्तित विमर्श, एक दिस संविधान मे मैथिलीक प्रवेशक पछातिक दशा-दिशा तं दोसर दिस मिथिला विकास बोर्डक गतिविधिक संकेत, एक दिस मिथिलाक व्यापक लोक संस्कृतिक भव्य चित्र तं दोसर दिस मिथिलाक महान दार्शनिक उदयनाचार्यक अवदानक विस्तृत कथा, पाबनि-तिहारक विशिष्टताक संग सीता आ जनकपुरक गौरवशाली आख्यान। एहि सभक अतिरिक्त मैथिली साहित्यक अनेक विधा पर गंभीर आलेखक संग्रह सेहो पाठक-मन पर अपन गंहीर छाप छोड़बामे समर्थ होयत, से सहजहिं विश्वास कयल जा सकैत अछि। एहि शोध पोथीक स्वागत सभतरि होयत, से हमर अपन मोनक आशा थिक।

— केदार कानन

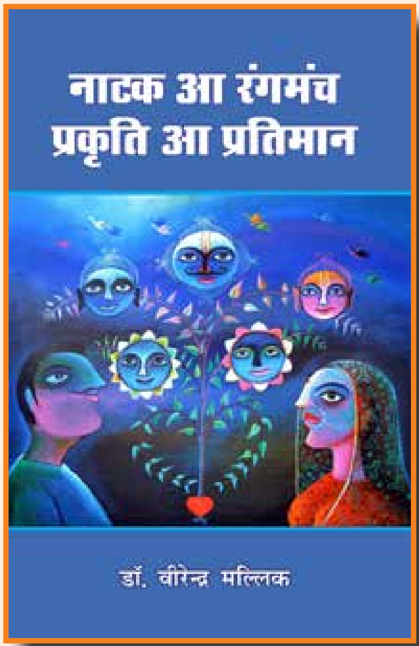

नाटक आ रंगमंच प्रकृति आ प्रतिमान

लेखक : डॉ. वीरेन्द्र मल्लिक

मूल्य : ₹ 300, पृष्ठ : 260

'नाटक आ रंगमंच : प्रकृति आ प्रतिमान' मैथिली नाटकक संपूर्ण परिचय दैत अछि। गामक नाटक सं ल' क' कोलकाता, दिल्ली मे होमय बला नाटकक समीक्षा सभ, नाटकक प्रकृति आ प्रतिमानक संपूर्ण दस्तावेज ई पोथी मे अछि।

— विनीत उत्पल

नाटक आ रंगमंच : प्रकृति आ प्रतिमान
पोथी किनय लेल लॉन ऑन करू :
https://www.flipkart.com/natak-aa-rangmanch-prakriti-pratiman/p/itmfdpp748ztpyxx?pid=9788193952900

मैथिली शोध संचय
पोथी किनय लेल लॉन ऑन करू :
https://www.flipkart.com/maithili-shodh-sanchay/p/itmfdpqyhnytdgek?pid=9788193952917

तीरभुक्ति

अखिल भारतीय मिथिला संघक शोध पत्रिका

मूल्य : ₹ 25

वर्ष : 1, अंक : 4

अप्रैल-जून 2019

संरक्षक
प्रभात झा
सांसद, राज्य सभा

संस्थापक
विजयचन्द्र झा
अध्यक्ष, अ.भा.मि.सं.

संपादक
विनीत कुमार झा उत्पल*
ऋतेश पाठक

संपादक मंडल
रौशन झा, भास्कर ज्योति, स्वाती शाकम्भरी, डॉ. प्रवीण कुमार झा, त्रिपुरारी ठाकुर

उप संपादक
गोविन्द कुमार झा

प्रबंध संपादक
विद्यानंद ठाकुर

प्रबंधन मंडल
पं. कौशल झा, अंजनी कुमार झा, ओम चौधरी, शंकर कुमार झा

आवरण चित्र
अर्चना झा

डिजाइनर
मणिशंकर कुमार

स्थायी पता
म.नं.-435-ई, गली नं. 7, ई-ब्लॉक, संगम विहार, नई दिल्ली-110062

पत्राचार पता
20, कोपरनिकस लेन, मंडी हाउस, नई दिल्ली-110001

फोनः सं.: 9911364316
प्र.: 9650461788, 9717539000
ईमेलः teerbhuktimaithili@gmail.com

*प्रेस आ पोथी अधिनियमक अधीन

(उपरोक्त सभ टा पद मानद आ अवैतनिक अछि)

विषय सूची

- संपादकीय 5

विषय प्रवेश
- समकालीन मैथिली कथाक परिदृश्य / *सत्यनारायण प्रसाद यादव* 7

अन्वेषण
- मैथिली कथा परंपरा / *प्रो. अभिलाषा* 12

विश्लेषण
- मैथिली उपन्यास : अतीत एवं वर्तमान / *रमाकान्त राय 'रमा'* 17

वाद-विवाद-संवाद
- विद्यापति आ खेतीबारी / *रमण कुमार सिंह* 26

प्रसंगवश
- राजकमलक कथा : विषय आ शिल्प / *डॉ. ललितेश मिश्र* 27

बहस
- भारतीय कथा साहित्यक विशिष्ट विधा : बिहनिकथा / *मनोज कर्ण 'मुन्ना जी'* 31
- मैथिली लघुकथाक मादे / *डॉ. सत्येन्द्र कुमार झा* 35

आत्मकथा
- आत्माक कथा थिक 'किस्त-किस्त जीवन' / *प्रमोद कुमार पासवान* 38

विशेष
- चंदा झाक मिथिला भाषा रामायण मे स्त्री-पक्ष / *डॉ. बिभा कुमारी* 40

व्यक्तित्व
- सर्वतंत्र स्वतंत्र पं. धर्मदत्त (बच्चा) झा / *देवानन्द मिश्र* 45

हम किएक लिखैत छी?
- साहित्यक क्षुधा मेटाबय लेल लिखैत की / *अमित मिश्र* 48

कविता
- *नन्द कुमार झा, सदरे आलम गौहर, सोनी नीलू झा* 49

सोशल मीडिया
- कविता, भाषा आ बिम्ब (2) 50

अनुवाद
- बथान (एनिमल फार्म) / *जॉर्ज ऑर्वेल,* अनुवाद : *विनीत कुमार झा* 54

पत्रिकामे प्रकाशित आलेख आ रचनामे व्यक्त विचार आ दृष्टिकोण लेखक केर छनि। संपादक अथवा प्रकाशक कें ओहिसं सहमत होयब आवश्यक नञ अछि।

दलान

विनीत उत्पल जी, देशक राजधानी के जगमगाहटि सं भरि देवक जे काज अहाँ सभक माध्यम सं भऽ रहल अछि ओ बेसि महत्वक अछि। अपने लोकनिक सजगता सं मैथिली - मिथिलाक आनो - आनो क्षेत्रक लोक सभ मे जागृति लहरि उठतनि, तकर आशा तऽ कयले जा सकैछ।

सामग्री - संचयन सं लऽ कऽ गेटअप धरि "तीरभुक्ति" अतिशय आकर्षित - आह्लादित करैत आश्वस्तिदायक लागल। तैं एहि मंडली मे शामिल एक - एक सदस्यक प्रति आभार।

अहाँ सभक दुनू काज (समय संकेत आओर तीरभुक्ति) प्रेरित-प्रभावित आ भविष्यक संभावनाक प्रति आश्वस्त करए बला लागल। दिल्ली अतेक आश्वस्तिदायक हैत से नहि बूझल छल! आत्मतृप्तिक अनुभूति भेल। अहाँ लोकनिक भाषा, संस्कृति आ समाजक प्रति आसक्ति देखि मोन द्रवित भऽ उठल। ई विश्वास सेहो जागल जे दिल्लीक हृदयमे मां मैथिली कें प्रवेश करा कऽ अहाँ सभ देशक मानचित्र पर मिथिलाक माथ कें उठएबाक महत्वपूर्ण भूमिकाक निर्वहन दिस सत्ते डेग उठा चुकल छी। जकर फल बहुत जल्दिए लोकक समक्ष उपस्थित हेतनि से आशा जगैत अछि। अनेकशः मंगल कामनाक संग...

– नरेन्द्र झा

325-सी, ओल्ड ए. जी. कालोनी, कडरु,

पोस्ट -डोरंडा, रांची-834002 (झारखंड)

मो. 9471371317

श्रद्धांजलि

हरेकृष्ण झा

(24 अप्रैल, 2019)

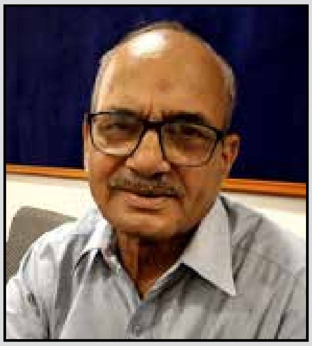

नरेश मोहन झा

(17 अप्रैल, 2019)

अखिल भारतीय मिथिला संघ कें अपन प्रयास सभमे अपने सभक सहयोगक अपेक्षा अछि। संस्था कें प्रदत्त वित्तीय सहयोग आयकर अधिनियमक धारा 80जी के तहत करमुक्त रहत। संघक सहयोगक लेल बैंक विवरण निम्नलिखित अछि-

बैंक खाता विवरण

नाम	:	अखिल भारतीय मिथिला संघ (A khil Bhartiya Mithila Sangh)
खाता संख्या	:	11084229861
आईएफएससी कोड	:	SBIN0000691
एमआईसीआर कोड	:	110002087
बैंक	:	स्टेट बैंक ऑफ इंडिया
शाखा	:	पार्लियामेंट स्ट्रीट, नई दिल्ली

संपादकीय

मैथिली भाषाक मानकीकरण पर अक्सर मास-दू-मास पर कियो नै कियो एहन गप करैत छथि जे बहसक मुद्दा बनि जायत अछि। सभ कियो अपना हिसाबे किछु शब्द के मानकीकरण क' दैत अछि आ दोसरा के लिखल के 'गलत' कहि के गर्वान्वित महसूस करैत अछि। एक-दोसर के खोट निकालब नीक गप नहि। एकर बनिस्पत भाषाके मानकीकरणक लेल डेग बढायब मैथिली भाषा आ मैथिल समाजक लेल बेसी नीक होयत। ई काजक लेल हजार सलाह दय बला बड़ लोक छथि मिथिला मे। मुंह सं जरूर सलाह देत, मुदा लिखित मे मांगला पर सांप सूझि जायत छनि। मुदा मैथिली भाषा के मानकीकरण लेल पहिलुक डेग के बढाओत से यक्ष प्रश्न अछि, जेकर जवाब किनको लग नहि अछि।

आइ धरि मैथिली भाषा के ओहि तरहे मानकीकरण नहि भेल जहि पर सब विद्वान सहमत हुए। ई बात सत्य अछि जे मैथिली भाषा एक सीमित इलाका के भाषा अछि। नेपाल सहित भारत के मधुबनी, दरभंगा, समस्तीपुर, मुजफ्फरपुर, सहरसा, पूर्णिया, कटिहार, सुपौल, मधेपुरा, बेगुसराय, भागलपुर, मुंगेर, खगड़िया, सीतामढी आदि में मैथिली बाजल जाइत अछि मुदा भिन्न। अंगिका, बज्जिका, ठेठी मैथिली आ शुद्ध मैथिली जेहन भाषा एही ठाम बाजल जायत अछि। ऐना मे सवाल ई अछि जे एहन छोट सन भूभाग मे बाजल जाय बला भाषा यानी मैथिली के सर्वमान्य मानकीकरण किये नहि भेल अछि। जखन कि अंगरेजी भाषा सेहो ब्रिटिश, अमेरिकी, कनाडा, ऑस्ट्रेलिया मे अलग-अलग तरहे सं बाजल आ लिखल जायत अछि आ ओकर मानकीकरण अछि। हिन्दी सेहो अलग-अलग राज्य मे अलग तरहें बाजल जायत अछि मुदा ओकरो मानकीकरण भेल अछि।

भाषा के मानकीकरण के अर्थ होयत अछि जे ओ "बोली" के स्थानीय विशेषता सं ऊपर उठि के एकटा एहन उच्च स्तरक सशक्त, केन्द्रीय भाषाक रूप मे विकसित होयब, जे कोनो सभ्य समाज या राष्ट्रक अलग-अलग औपचारिक काज मे समान रूप सं बुझल, बाजल प्रयोग कयल जाय। एही मानकीकरणक तीन टा रूप होयत अछि। पहिलुक स्तर पर सब भाषा अपन मूल रूप मे कोनो सीमित क्षेत्रक जनसाधारणमे बोलचालक रूप मे प्रचलित 'बोली' होयत अछि। एही स्थानीय, आंचलिक आ क्षेत्रीय भाषाक शब्द-भंडार सीमित होयत अछि। एकर अपन कोनो नियमित व्याकरण या भाषाशास्त्र नहि होयत अछि। दोसर स्तर पर ओकर लिखित आ व्याकरणिक रूप विकसित होयत अछि। ओ शिक्षा, प्रशासन, साहित्य आदि के माध्यम सेहो बनय लागैत अछि। बोली के संज्ञा पाबि लेब भाषा के मानकीकरणक प्रक्रियाके दोसर सोपान अछि। तेसर स्तर पर मानकीकरण तखन पूर्ण भ' जायत अछि जखन शिक्षित समाज द्वारा शिक्षा माध्यम के रूप मे ओहि भाषा के प्रयोग होयत अछि। ओकर प्रयोग साहित्य आ पत्र-पत्रिका मे होयत अछि। मानक भाषा के संकल्पना मे व्याकरण सम्मत, एकरूपता आ जीवन्तता सन तीन तत्व प्रमुख होयत अछि।

पिछला बरख भारत सरकार के मानव संसाधन विकास मंत्रालय मैथिली भाषा आओर तकर लिपिक संवर्धन आ संरक्षणक लेल रिपोर्ट बनेबाक लेल एकटा समिति के गठन कयने छल। समिति के रिपोर्ट के मुताबिक, कामेश्वर सिंह संस्कृत विश्वविद्यालय वा ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय मे एकटा स्क्रिप्ट आ पाण्डुलिपि केंद्र स्थापित होयत। भारतीय भाषा सभक प्रौद्योगिकी विकास (टीडीआईएल) द्वारा मिथिलाक्षर के यूनिकोड लिपि सं सम्बंधित काज होयत आ मिथिलाक्षर लिपि पढ़बैक लेल ऑडियो-वीडियो पाठ्य सामग्री तैयार होयत। मुदा सवाल एतय ई अछि जे पाठ्य सामग्री तैयार होयत ओकर मानक की? ओहि दिशा मे काज करय बला लोक भाषा के स्तर पर सिर्फ एकटा सीमित क्षेत्र के देखत या समूचा मिथिला भूभाग के?

मैथिली के मानकीकरण संग आब एही बातक आवश्यकता अछि जे मैथिली मे बेसी सं बेसी कथा आ उपन्यास लिखल जाय। इम्हर प्रो. वीणा ठाकुर, प्रो. ललितेश मिश्र, रमेश, सुष्मिता पाठक, मन्त्रेश्वर झा, दिलीप कुमार झा, कुमार पद्मनाभ, शुभेंदु शेखर, उमेश मंडल, अभिलाषा, सोनू कुमार झा, अखिलेश कुमार झा, सन युवा लोकक कथा आ उपन्यासक अलावा कोनो लेखकक कृति या ते नै आयल वा देखा नै पड़ल। एक दिस कविता संग्रह खूब आबि रहल अछि जेना किसुन संकल्प लोक, सुपौल सं एक्के दिन दर्जनों कविताक पोथी के विमोचन भेल मुदा कथा आ उपन्यासक स्थिति सुखल अछि। हाँ, एकटा नव गप ई भेल अछि जे मैथिली मे लघुकथा आ बिहनि कथा के बीच नव संकल्पना आयल अछि, जाहि मे एक दिस मनोज कर्ण "मुन्नाजी" छथि ते दोसर दिस अनमोल झा, मुदा छोट कथा खूब लिखल जा रहल अछि।

'तीरभुक्ति' के ई अंक समकालीन गद्य पर आधारित अछि जहि मे समकालीन मैथिली कथाक परिदृश्य, मैथिली कथा परंपरा, बिहनि कथा आ लघुकथाक मादे, मैथिली उपन्यास संग चंदा झाक मैथिली भाषा रामायण मे स्त्री पक्ष पर विचार कयल गेल अछि। नियमित स्तम्भ ते एछियै। अप्रैल मासमे अखिल भारतीय मिथिला संघक अध्यक्ष आ 'तीरभुक्ति' शोध पत्रिका के संस्थापक श्री विजयचन्द्र झाक बाईपास सर्जरी भेल, ओ जल्दी स्वस्थ होथि आ दोबारा मैथिली समाजक उत्थानक लेल सक्रिय होथि, से कामना अछि। एहि अंकमे विज्ञापनक दर सेहो उपलब्ध अछि। ग्राहक फार्म सेहो। 'तीरभुक्ति' शोध पत्रिकाक नम्हर उम्रक लेल विज्ञापन आ ग्राहक दुनू आवश्यक अछि। कोनो पत्रिका लेखकक श्रम सं सफल होयत अछि, ताहि सं आग्रह अछि जे अपन स्तरीय शोध सामग्री निसंकोच 'तीरभुक्ति' के पठाऊ। ई अंक केहन लागल, अपन प्रतिक्रिया सेहो जरूर पठाऊ। ■

– विनीत उत्पल

तीरभुक्ति मे विज्ञापन द प्रबुद्ध मैथिल समाज तक पहुंचाउ अपन सनेश

विज्ञापनक दर

बैक कवर पेज (कलर)	:	50,000
फ्रंट कवर इनसाइड पेज (कलर)	:	30,000
बैक कवर इनसाइड पेज (कलर)	:	30,000
डबल स्प्रेड पेज (कलर)	:	40,000
इनर पेज (श्वेत/श्याम)	:	20,000
हाफ पेज (श्वेत/श्याम)	:	10,000

विज्ञापन राशि अखिल भारतीय मिथिला संघ केर नामे चेक/डिमांड ड्राफ्ट/एनईएफटी कएल जाए।
संघक बैंक विवरण निम्नलिखित अछि-

बैंक खाता विवरण

नाम	:	अखिल भारतीय मिथिला संघ (A khil Bhartiya Mithila Sangh)
खाता संख्या	:	11084229861
आईएफएससी कोड	:	SBIN0000691
एमआईसीआर कोड	:	110002087
बैंक	:	स्टेट बैंक ऑफ इंडिया
शाखा	:	पार्लियामेंट स्ट्रीट, नई दिल्ली

समकालीन मैथिली कथाक परिदृश्य

✍ सत्यनारायण प्रसाद यादव

लेखक सत्यनारायण प्रसाद यादव मैथिली साहित्यक विशिष्ट अध्येता छथि। हालहि मे यू.जी.सी. नेट-जे.आर.एफ. परीक्षा उत्तीर्ण भेलथि अछि। मैथिली साहित्यक अध्ययन आ अध्ययनोपरांत लिखब हिनक व्यसन छनि।

'कथा' सूक्ष्म सं सूक्ष्म स्थितिक परिवेशमे, क्षणिक सं क्षणिक मानसिक उहापोहमे आ क्षुद्र सं क्षुद्र अनुभूतिक आवेगमे उपजल एकटा लोकप्रिय गद्य विधा अछि। जे प्रवाहमय जीवनक कोनो मार्मिक घटना, मनोगत भावना, अनुभवक आधार पर सत्यक चयन आ अतिरंजनक रूपें कलात्मक रीति सं संक्षेपमे प्रतिबिंबित होइत अछि। पहिने कोनो श्रेष्ठ कथाक हेतु कथानक, चरित्र आओर ओकर चरम स्थिति आवश्यक बूझल जाइत छल, मुदा आब एकर स्थान परिवेश (वातावरण), मन:स्थितिक बिन्दु विशेष, कथ्य ओ प्रभाव ल' लेलक।

सामाजिक असमानता, जीवनक यथार्थमूलक अवमूल्यन, पारिवारिक विघटन, सभ प्रकारक सम्बन्धमे अनास्थाक भाव, सामाजिक आधारशीलाक विकेन्द्रीकरण, राजनीतिक प्रपंच, प्रशासनिक अकर्मण्यता, बेकारी, भ्रष्टाचार आदि परिवेशक आस-पास कोनो साहित्यक कथा घूमैत रहैत अछि। संभवत: मैथिली कथा सेहो एहि सं फराक नहि भ' सकैत अछि।

स्वतंत्रताकालीन मैथिली कथा सेहो कालोचित परिवर्तनक कें आत्मसात कयने, कौतुहल तथा घटना-चमत्कार परित्यागक समकालीन जीवनक सूक्ष्म सं सूक्ष्म तथा कटु सं कटु सत्यक व्यंजना हेतु, मनोवैज्ञानिक आधार सं युक्त समकालीन चरित्रक सूक्ष्मताक उद्घाटन करैत एकटा सर्वथा नव आकृतिक संग मैथिली पाठकक समक्ष प्रस्तुत भेल अछि। यथार्थ दृष्टिक जीवन्त स्पर्श सं युक्त समकालीन संपूर्ण सामाजिक व्यवस्था, अर्थव्यवस्था, राजनीति, धर्म, न्याय, रूढि, रीति आदिक मार्मिक, महत्त्वपूर्ण एवं गलत अंश समकालीन मैथिली कथाक शब्द-शब्दमे बाजि रहल अछि।

आजादी भेटलाक बादो भारतीय समाज सामन्ती स्वरूपमे ओझरायल छल, कारण वातावरण ओ संस्कार तोड़ि बहरायब बड़ कठिन होइत छैक। ताहूमे मैथिल समाज तं आओर बेसी एहि तरहक बन्हनमे बान्हल छल। संपूर्ण समाजक संरचने ऐहन छलैक, जे समाजमे पैघ आ छोट लोकक धारणा कायम छल। श्रमिक वर्ग छोट छल, शोषित होइत छल आ एकर लाभ उठाब' बला पैघ लोक कहबैत छल, कारण सामन्ती वर्गक यैह सिद्धांत छल जे छोट कें आओर छोट बना क' राखल जाय। एहिमे ओ अपन पैघत्वक रक्षा बुझैत छल। एहि तरहक परिस्थिति सं सामना करबाक आ शोषित वर्ग कें उचित जीवन जीबाक लेल प्रेरित आ उत्साहित करैत कार्ल मार्क्सक दर्शन विश्वक कतेको देशमे प्रभावमे आयल। जन आंदोलन सं साहित्य आ साहित्य सं जन आंदोलन मुखरित भेल। एहिसं एहिठामक साहित्यकार सेहो अप्रभावित नहि रहलाह। यैह कारण छल जे ओहि कालमे कार्ल मार्क्सक दर्शन एहि देशक साहित्य लेल प्रासंगिक भ' गेल छल।

संपर्क : पितामह-श्री पुलकित यादव, ग्राम+पोस्ट-भौर (राजग्राम), भाया- लोहट, प्रखंड-पंडौल, जिला-मधुबनी, बिहार, पिन कोड-847231
Email: spyadav03021995@gmail.com, Mob: 9599303002

समय छल औद्योगिक क्रान्तिक, संपूर्ण देशमे औद्योगिक विकासक होहकारा मचल छल। कृषि सं ऊबल लोकमे मशीनी आकर्षण बढ़ि रहल छल। बहुत रास नव नगर आ शहरक निर्माण भेल। मिथिला प्रत्यक्ष रूपें कहियो ब्रिटिशक शासनमे नहि रहल, ताहि कारणसं एतय कोनो विशेष तरहक उद्योगक स्थापना नहि भेल छल। औद्योगिक विकासक समयमे मिथिलाक भूमि पर कोनो तरहक एहेन उद्योग स्थापित नहि भेल जे हजारो-हजार लोक कें रोजगार दैत। परिणामतः लोक मिथिला सं दूर जाय लागल। नौकरी खेती सं नीक होइत अछि तकर बोध सभकें होमय लगलैक आ नौकरी शहर मे भेटैत छैक तें लोकमे शहरक प्रति आकर्षण बढलैक। एम्हर सरकार-प्रशासन सुविधाक लेल विभिन्न कार्यालयक स्थापना कयलक, स्कूल-कॉलेजक निर्माण, सड़कक पक्कीकरण, छोट-छोट बजारक निर्माण, सवारी गाड़ी आदि सुविधा एहूठाम भेल। मिथिलाक धरती पर जे एहि प्रकारक परिवर्तन भेलैक ताहिसं साहित्य- स्त्रष्टा कोना नहि अवगति रहितथि? यैह कारण छल जे समाजक सामंती संरचनामे जे शोषण छलैक आ तत्कालीन सरकारी व्यवस्था सं जे नव विकृति आयल छलैक ओहि सभकें मैथिली कथा देखार कर' लागल। एहि क्रममे समाजक आर्थिक ओ यौन शोषण, कथाक मुख्य विषय बनल। मार्क्स ओ फ्रायडक दर्शन रूपें कथाकार जीवनक ओहि तत्त्व सभकें खोज करए लागल जे विकासक लेल बाधक छल वा साधक भ' सकै छल। एहि कालमे फराक-फराक विषय वस्तु कें उठबितो विभिन्न कथाकरक कथामे समान युगक धड़कन छल। अंततः कहि सकैत छी जे स्वतंत्रताक बादक कथाक परिदृश्य मैथिली कथा लेल समकालीन भेल। एहि कालक कथाकारमे प्रमुख छथि- ललित, राजकमल चौधरी, सोमदेव, मायानंद मिश्र, धीरेश्वर झा 'धीरेन्द्र', रामदेव झा, हंसराज, लिली रे आदि।

मैथिली कथा अपन आधुनिक स्वरूपकें निस्सन्न भ' क' सभसं पहिने ललितक कथामे चिन्हलक। मशीनीकरण जुग अयलाक बाद परिवेशमे सेहो बेस परिवर्तन भेल। ललितक 'रमज़ानी' कथामे एहि आधुनिकीकरण कें देखल जा सकैछ। रमज़ानी अपन घोड़ा बेचि क' रिक्शा लेब' चाहैए, कारण रिक्शा बेसी सहूलियत भ' सकैत छल। एहि कथाक पांति देखू- मुसलमान कें नै पीबाक चाही... दुत्... ने हम्म हिन्नू छी ने मुसलमान। मजूर छी मजूर... लूटि आनू कुटि खाउ, कोन पन्नित मोलबी अबैत अछि काज? एहिठाम समाजिक समरसताक चेतना सं भरल एहि श्रमिक दृष्टिकोण कें कथाकार आगू अनलनि।

मैथिली कथा अपन आधुनिक स्वरूपकें निस्सन्न भ' क' सभसं पहिने ललितक कथामे चिन्हलक। मशीनीकरण जुग अयलाक बाद परिवेशमे सेहो बेस परिवर्तन भेल। ललितक 'रमज़ानी' कथामे एहि आधुनिकीकरण कें देखल जा सकैछ। रमज़ानी अपन घोड़ा बेचि क' रिक्शा लेब' चाहैए, कारण रिक्शा बेसी सहूलियत भ' सकैत छल।

ललित नीक जकां एहि बातकें बुझैत छलाह जे बिना जातिक घेरा टपने सर्वहाराक गोल नहि बनि सकैत अछि। ललितक प्रसिद्ध कथामे 'रमज़ानी', 'ओवरलोड', 'कंचनियां', 'मुक्ति', 'जानवर' आदि अछि। ओवरलोडमे वर्गीय इमानदारीक सोझां तात्कालिक व्यक्तिगत समस्या पैघ नहि होइछ आ क्षुद्र स्वार्थ कोनो महत्व नहि रखैत अछि, एहि सत्य कें बड़ सहज आ स्वाभाविक शैलीमे प्रस्तुत कयल गेल अछि। ललित स्वयं अपन कथा- संरचना विषयमे कहैत छथि जे ओ कथाक बहिरंगमे मार्क्सवादक स्थूल मांसलता एवं अन्तरंगमे फ्रायडक सूक्ष्मता ओ लक्ष्य मे उपनिषदीय अमृत-पुत्र देबाक प्रयास कयलनि। ललितक मुक्ति आ राजकमलक फुलपरासवाली कथा कें देखी तं जतय मुक्ति मे बीसो बाबूक पत्नी अपन काम वासनाक पूर्ति हेतु धर्मशालाक दरबान संग भागि जाइत छथि ओतहि फुलपरासवालीक कामक आवेग मिथिलाक सांस्कृतिक अर्जित संस्कारमे दबि जाइत अछि आ अपन दिओर कें मना करैत कहैत अछि जे ओ सात जुग तक अपन पतिक प्रतीक्षा करतीह। कंचनियांमे सेहो यौन शोषण देखाओल गेल अछि, मुदा एतौ एहि सं बचबाक कोनो उपाय नहि बताओल गेल। अंततः कहि सकैत छी जे ललित समय कें नीक जकां जनलनि, ओहि समाजक सामन्ती विकार कें देखार कयलनि, ओहि सं बचबाक बोध देलन्हि मुदा ओहि सं मुक्त होयबाक बाट नहि बना सकलाह।

जं राजकमल कें बात करि तं हुनक कथा पात्रमे कोनो बन्हन तोड़बाक पात्रता तं अछि मुदा ओ पात्रता ओकर अपन अस्तित्व निर्माण लेल बेसी सहायक नहि भ' पबैछ। कारण ताकब त' पाओब जे ओहि जुगक अपन सीमा छल। जाहि जुगमे शोषण के मात्र देखार करब कथाकारक उद्देश्य रहल। राजकमलक प्रमुख कथा- 'फुलपरासवाली', 'किरतनियां', 'माछ', 'दयमन्ती', 'घड़ी', 'पनिडुब्बी', 'परम प्रिये निरमोही बालम हमर प्रानपती', 'सांझक गाछ' आदि अछि। किरतनियां कथा समाजक मनोवृत्ति पर व्यंग्य करैत अछि जे ई समाज जीबैत कें रोटी नहि देत मुदा पुण्यक नाम पर मुर्दा हेतु कफन जरूर देत। दयमन्ती मे ओ पेट लेल अपन देह बेचैत अछि। मलाह टोल'क पिरितिया कें जखन ओकर स्वामीक दोस्त ओकर समक्षमे बलात्कार क' लैत छैक आ ऐकर स्वामी ओकर रक्षा नहि क' पबैत अछि तं ओ ओहि बलात्कारीक संग ध' लैत अछि। किएक तं पिरितिया एहि पुरुष पात्रक समाजमे अपन रक्षा लेल सबल पुरुषक आवश्यकताक बोध करैए

जे ओकरा अनका सं सुरक्षित रखतैक। पिरितियाक माध्यम सं कथाकार ओकर स्वबोध कें आगू नहि बढा पबैत छथि। नारीकें अपन पैर पर ठार होयबाक बोध नहि द' पबैत छथि, जखन कि पिरितिया आ एकटा दोसर पात्र कमली मे ओ पात्रता झलकैत छल। सांझक गाछमे राजकमल दू तरहक स्त्रीक खोज कए पबैत छथि। पहिल, जे सभ पीड़ा सहैत पतिक छोहमे मरि जाइए आ दोसर जे अपन इच्छाक पूर्ति हेतु बाजारक वस्तु बनि जाइए। राजकमल एहि सभक दोष सामाजिक व्यवस्था पर मरहैत छथि।

एकर बाद एहि पीढ़ीक कथाकारमे प्रमुख छथि- मायानंद मिश्र, सोमदेव, धीरेन्द्र, हंसराज, लिली रे, रामदेव बाबू आदि। मायानंद मिश्रक कथामे पीढ़ीक अन्तर, पिता- पुत्र सम्बन्ध, दू पीढ़ीक बीच उपजल कुंठा, आक्रोश, सामंजस्यक अभाबक चित्रण भेल अछि। हिनक प्रमुख कथामे - 'मिझाइत दीप', 'चन्द्रबिन्दू', 'कालरेत', 'गाड़ीक पहिया', 'भांगक लोटा', आगि मोम पाथर आदि अछि। मनोवैज्ञानिक विश्लेषण, फ्लैशबैक शिल्पक आधुनिक प्रयोग, नवमूल्यक स्थापनाक संग- संग गद्यमे छन्दक लय, गति हिनक कथाक अपन विशेषता छैन्हि। मिझाइत दीप'क एकटा पांति देखू आ विचार करू- "भरि-भरि राति बाट तकिते रहि जाथि... दोसरा राति जखन भेंट होइनि, तं बुझबामे अबनि जे दलान पर लोक बहुत राति धरि जगले रहि गेलै आ तकरा बाद अपने निन्न भ' गेलनि... कते राति आंखि लागि जाइ छलनि, तखन अबै छलथिन चोर जकां नुका क' खराम हाथमे लेने आ फेर भिनसरबे...।''

सोमदेवक कथामे आर्थिक आ सामाजिक दृष्टिसं पछुआयल लोकक संवेदनापूर्ण भाव भेटैत अछि। हिनक दैन्य जीवनक व्याख्या अद्‌भुत संवेदना जगबैत अछि। हिनक कथामे भात, अंगा, चोर, आगि ताम्बुल वनमे, द्रोपदीः बन बीसम शताब्दी'क आदि प्रमुख अछि।

एहिकालक कथामे धीरेन्द्रक कथा महत्त्वपूर्ण अछि। ओ अपन कथामे मनुक्खक अनुरागक बात कहलनि। ओ मानैत छथि जे मनुक्ख लेल मनुक्खता चाही आ ओहि लेल सामाजिक जीवनक अनुराग। सामान्यतः आर्थिक संघर्षमे लोकक जीवन 'अनुराग' सं कात भ' जाइत अछि। ओहि अनुराग कें बचा क' राखब कोनो आर्थिक क्षति सं बेसी जरूरी छैक। बिना मानवीय अनुरागके मनुक्ख, मनुक्ख नहि रहि सकैत अछि। मामी, दादीमां, सभ्यलोक, सुगरक बाप, गुम्मा थापर आदि हिनक चर्चित कथा छैन्हि। एहि पीढीमे आदर सं नाम लेब' वाली कथाकार थिकीह-लिली रे। ई विशिष्ट कथाकार सामन्ती जीवन ओ नारीक विपन्न स्थिति कहैत संवेदना कें ओहि स्थिति पर जगबैत छथि जाहिठाम

स्वतंत्रताक बाद एहि कथाकार लोकनिक कथा सं पूर्व वा बादो किछु एहन कथाकार छथि जे लोकनि स्वतंत्रताक बादे कथाकार रूपमे चिन्हल गेलाह। एहन कथाकारक कथा किछु भिन्न रहितो समकालीन अर्थ मे अछि जे ई लोकनि परम्परा कें नव अर्थमे देखलनि।

सं उचित- अनुचितक वैचारिकताक प्रश्न उठैत अछि। सभक अपन-अपन सुख- दुःख छैक किन्तु ओहि सुख आ दुखक कारणमे सामाजिक व्यवस्था आ ओहि व्यवस्थामे अर्जित संस्कार छैक। एहि संस्कार सं छुटकारा पायब कठिन छैक किन्तु मनुक्ख जेना बाहरी संसार सं संघर्ष करैए ओहिना जं ओ अपन भीतरक संसार सं संघर्ष करय तं ओ बहुत किछु सं मुक्त भ' सकैत अछि। एहि सभ बात कें आगू बढबैत लिली रे अपन कथा सं, सामन्ती जीवन जखन पूंजीवादी व्यवस्थामे शामिल होइत अछि,तखन कोन रूपें विद्रूपता नव रूप ल' लैत अछि, आदि सभ बात कें स्पष्ट कयलनि अछि। हिनक कथामे- रंगीन परदा, अन्तराल (दीर्घ कथा), पर्यटक, सुखी व्यक्ति आदि महत्वपूर्ण अछि। स्वतंत्र भारतमे आर्थिक संघर्षक संग सामाजिक संघर्ष प्रारंभ भेल। शोषणक विरोध होमय लागल। एहि विरोध कें शान्ति ओ धैर्यपूर्ण निर्वहन कयलनि रामदेव बाबूक कथा। हिनक 'मनुक संतान' एतेक समर्थ भ' गेल अछि जे ओ बेगार करब नहि स्वीकारैत अछि। सब सं प्रमुख गप्प ई जे हिनक कथा दलितक ओहि चेतनाक बात करैत अछि जाहि चेतनामे दलित संग-संग रहब सीखि लेलक। हिनक मुख्य कथामे मनुक संतान, धरतीमाता, एक खीरा-तीन फांक, दोहरी दीप आदि अछि।

स्वतंत्रताक बाद एहि कथाकार लोकनिक कथा सं पूर्व वा बादो किछु एहन कथाकार छथि जे लोकनि स्वतंत्रताक बादे कथाकार रूपमे चिन्हल गेलाह। एहन कथाकारक कथा किछु भिन्न रहितो समकालीन अर्थ मे अछि जे ई लोकनि परम्परा कें नव अर्थमे देखलनि। किन्तु युगीन स्थितिक वर्णन करितो वैचारिकताक आधार पर परम्पराक मोह नहि छोड़लन्हि जाहि सं कथामे युग तं अछि, किन्तु ओकर तेवर युगीन नहि अछि तें समकालीन रहितो भिन्न अछि। एहन कथाकारमे छथि-शैलेन्द्र मोहन झा, राधा कृष्ण बहेड़, रामकृष्ण झा किसुन, मणिपद्म ओ गोविन्द झा। जं गत शताब्दीक सातम दशकक बात करि तं ओहि समयक कथामे लड़ाई (शोषक सॅ शोषितक लड़ाई) अछि, मनुक्खक ह्रासमान सौजन्यक प्रति दुख अछि, सामाजिक ओ राजनीतिक अव्यवस्था पर घोर चिंता अछि, मुदा ई सभटा रहितहुँ ओहि सं बाहर होयबाक रस्ता नहि अछि। धूमकेतु, राजमोहन झा, रमानंद रेणु, प्रभाष कुमार चौधरी, बलराम, जीवकान्त, गंगेश गुंजन आदि एहि समयक प्रमुख कथाकार छथि।

हिनका लोकनिक कथा अपन पूर्व

पीढ़ी सं आगू बढ़बाक प्रयास करैत अछि। ओना ओहू समयक कथाकार स्वयं अपन सीमा कें नहि तोड़ि पबैत छथि। धूमकेतुक प्रसिद्ध कथा 'अगुरबान' मैथिली साहित्यक प्रसिद्ध कथाक अग्रणी पांतिमे शामिल कथा अछि। एहि कथामे बूढ आ अपंग पंडितक युवा पत्नीक विवशता देखाओल गेल अछि। अपंग पंडित अपन जीह आ पेटक कारणे पत्नी के हवेली जयबाक लेल, देह बेचबाक लेल विवश करैत अछि। पंडितक पूर्व पत्नीक बेटा अर्थात ओकर सतौत एहि बातक विरोध करैत अछि। ओ अपन सतमाय'क इज्जति के एहि अवस्थामे नहि देखि पबैत छल। ताहि कारण सं ओ अन्न जुटेबाक हेतु चोर बनि जाइत अछि। अगुरबान भ' जाइ छैक। एम्हर विवश सतमाय यौन शोषणक कारणे गर्भवती भ' जाइ छैक। ई बात बेटा के बर्दास्त नहि होइछ आ ओ ठेंठी कोदारि सं अपन सतमाय के दोखरि दैत छैक। एहिठाम सोचनीय गप्प ई थिक जे ओकर सतमायके यौन शोषणक लेल विवश ओकर बाप करैत अछि आ भुगत' सतमाय के पड़ैत छैक। ओ अपन बाप कें किएक नै दोखरि पबैए? पुरुषवादी समाजमे पतित नारी होइए, पुरुष नहि। इहो कथा पुरुषवादी मानसिकता कें नहि तोड़ि पबैए। जीवकांत अपन इंकिलाबमे प्रतिरोधक स्थिति बना क' मात्र रहि जाइत छथि। तैयो, एहि कालक कथा जाहि रूपे जीवनक विभिन्न पक्ष ओ समय कें रखैत अछि, से अप्रतिम अछि।

एकर बादक पीढ़ीक कथामे एकटा खास परिवर्तन आयल। दलित वर्ग अपन जीवन कें अपन हिसाबे सोच' लागल। ओकरा लोकनिमे पैघ लोकक छायाक मोह टूटल आ अपन दुख-दुनियाक विषयमे सोच' लागल। ओहि चेतना कें स्वर देबय वला कथाकार लोकनिमे प्रमुख छथि- सुभाषचन्द्र यादव, महाप्रकाश, सुकांत आदि। सुभाष मिथिलाक निम्नवर्गीय गमैया समाजक भाषाक प्रयोग करबाक क्षमता रखैत छथि। हिनक कथा जीवनके साक्षात चित्र अंकित करबाक पूर्ण क्षमता रखैत अछि। मात्र अधिकार बुझब पर्याप्त नहि थिक, आवश्यक अछि ओहि अधिकार के कोना प्राप्त क' सकी। एहि दृष्टिमे सुभाषक घरदेखिया, काठक बनल लोक, डर, महाप्रकाशक देवाल, धृतराष्ट्र वध आ सुकांत'क त्रिशंकु आदि महत्वपूर्ण कथा अछि।

एहि सं अगिला पीढीक महत्वपूर्ण कथाकार लोकनिमे छथि- विनोद बिहारी लाल, विभूति आनंद, मनमोहन झा, नीता झा, शेफालिका वर्मा, नीरजा रेणु, उषाकिरण खान, अशोक, शिवशंकर श्रीनिवास, शैलेन्द्र आनंद, तारानंद वियोगी, रमेश, केदार कानन, प्रदीप बिहारी, विभा रानी, जगदीश प्रसाद मंडल, देवशंकर नवीन, शैलेन्द्र कुमार झा, सुष्मिता पाठक, ज्योत्स्ना चन्द्रम, वीणा ठाकुर, गौरी मिश्र, सुशीला झा।

मात्र अधिकार बुझब पर्याप्त नहि थिक, आवश्यक अछि ओहि अधिकार के कोना प्राप्त क' सकी। एहि दृष्टिमे सुभाषक घरदेखिया, काठक बनल लोक, डर, महाप्रकाशक देवाल, धृतराष्ट्र वध आ सुकांत'क त्रिशंकु आदि महत्वपूर्ण कथा अछि।

मैथिली साहित्यमे सामाजिक यथार्थक एक-सं-एक विशिष्ट कथा लिखल गेल, मुदा तैयो चेतना आ समस्या सं बहराइत एकटा अलग बाट बनायब पर कथा कम अछि। वस्तुत: कोनो समाजमे सामाजिक चेतना तखने अबैत अछि जखन समाज प्रतिगामी संस्कार के तोड़ि सकबाक सामर्थ्य हासिल करत। जा'धरि भाग्यवादी सोच जमल रहत, आर्थिक-विसंगतिक लड़ाइकें आगू बढ़ेबाक लेल सहज स्वभाव अपनाओल जाएत, ता'धरि विसंगति सं मुक्ति असंभव अछि। तें आवश्यक अछि जे हम अपन ओहि संस्कार सं मुक्त होइ,जे संस्कार हमर प्रगतिकामी दृष्टिके छेकि क' रखैत रहल, जे हमर सोंच के बाधित करैत रहल। एहि सभ बातकें नीक सं बुझलनि आ स्थितिकें तोड़ि क' समाजक सम्मुख अनलनि, ओहिमे प्रमुख कथाकार छथि-अशोक, शिवशंकर श्रीनिवास, देवशंकर नवीन, विभूति आनंद आदि।

सभ गोटें सोचैत छथि जे स्त्रीक जीवनक छेका टूटै आ ओहो समाजक समक्ष पुरुष जकां जीवथि। एहि सोच के विभिन्न तरहे प्रसारितो कयल जाइत अछि,मुदा अनायास कोनो विधवा स्त्री जखन हमरा लोकनिक सोझां 'ओढने-पहिरने' अबैत छथि तं हम सभ चौंकि जाइत छी? किएक? ओ एहि हेतु जे हमरा लोकनि अखनहुं अपन पुरुष मानसिकता सं मुक्त नहि भ' पाओल छी। एहि समाजमे पुरुष विधुर भेल तं ओकरा नहि पहिचानल जा सकैछ, मुदा कोनो विधवा स्त्रीकें देखि बुझि जायब, ओकर बगए-बानि बुझा देत। अशोक'क कथा 'मामी' एहि स्थिति कें तोड़ि आगू अबैत अछि। हिनक एहि कथामे स्त्री अपन पतिक मरि गेलाक बाद भीतर सं अति संवेदित छथि किन्तु तैयो अपन जीबन जीबि रहलीह, बिना अपन पहिरन-ओढन बदललने। अशोकक प्रमुख कथामे मामी, ओहि रातिक भोर, सरिसबक साग, दस्तखत, तानपुरा, रॉड आदि शामिल अछि। शिवशंकर श्रीनिवास'क सिनुहार आ विभूति आनंदक 'लोक देखलक' विधवा अमंगलकारी दर्शनक सामाजिक स्थिति पर टिप्पणी करैत अछि। देवशंकर नवीन'क 'हाथी चलए बाजार' मे स्त्रीक संग स्त्री कोना ठाढ भ' स्त्रीकें बचौलक, तकर चित्रण अछि।

एहि तरहे विभिन्न धार्मिक संस्कार जे विभिन्न रीतिमे सन्हिया क' मानवीय विकास कें बाधित करैत अछि, ओहि रीतिक जड़ि पकड़ि मैथिली कथा सामाजिक न्यायक समक्ष ठाढ करैत,

ओहि संस्कार सं बहरेबाक बाट दैत अछि। यैह थिक सांस्कृतिक चेतना, जाहि रस्ते सामाजिक चेतना प्राप्त भ' सकए।

आइ मिथिलाक विभिन्न स्थितिमे परिवर्त्तन आबि रहल अछि, जाहि सं सामाजिक संरचना बदलि रहलैए। एहि बदलावक विभिन्न स्थितिमे संघर्ष अछि। एहि संघर्ष मे लोक संवेदनहीन भ' जाइत अछि। कथामे सेहो 'लोक-अनुराग' ओ भूमि छूटि जएबाक डर रहैत छैक, किन्तु मैथिली कथा एहि दोष सं बचल रहल अछि, से आनंदक विषय थिक। श्रीनिवास जीक कथा 'चिंता', 'चिड़ै नै मनुक्ख थिक', अशोक जीक कथा सीबन रजकक हित चिंतक, तानपुरा आ वियोगी जीक 'उड़ान' कथामे ई चिंता देखल जा सकैत अछि। रमेशक कथा 'कैलाश मंडलक फिलिप्स रेडियो' मे सामाजिक समीकरण आ समरसता केन्द्रित अछि। एम्हर श्याम दरिहरे'क कथा संग्रह 'बड़की काकी एट हॉट मेल डॉट कॉम' सेहो अपन नवीनताक लेल बेस चर्चित रहल अछि।

एकर अलावो मैथिली साहित्यमे बहुतो कथाकार अपन कथा सं साहित्य के समृद्धि प्रदान कयलनि आ अखनहुं क' रहल छथि जाहिमे उपेन्द्र दोषी, छत्रानंद सिंह झा, शौकत खलील, मंत्रेश्वर झा, प्रो इन्द्रकांत झा, पूर्णेन्दु चौधरी, साकेतानंद, मधुकान्त झा, शरदिन्दु चौधरी, राजाराम प्रसाद, प्रेमलता मिश्र 'प्रेम', अशोक कुमार मेहता, दमन कुमार झा, मेघन प्रसाद, अजित कुमार आजाद, ललितेश मिश्र, श्रीधरम, पंकज पराशर, नारायण जी, सियाराम झा 'सरस', ऋषि वशिष्ट, वीरेन्द्र झा, डॉ हीरेन्द्र झा, गजेन्द्र ठाकुर, कुमार मनीष अरविन्द, मृदुला झा, अखिल आनंद, प्रवीण भारद्वाज, आशीष चमन, राजदेव मंडल, इन्दिरा झा, माधुरी झा, कमल मोहन 'चुन्नू', पारस कुमार, पन्ना झा, दुर्गानंद मंडल, रामविलास साहु, कपलेश्वर राउत, डॉ सत्येन्द्र कुमार झा, चंदना दत्ता, दिलीप कुमार झा, अनमोल झा आदि बहुतो नाम अछि। एहि सभगोटेक रचनाकें एकटा छोट सन आलेखमे समेटब कने बेसीए कठिन अछि। युवा पीढीक कथा लेखन दिस जं नजर दौड़ाबि तं एम्हरो किछु महत्वपूर्ण कथा संग्रह भेटैत अछि जाहिमे 'ओकरो कहियो पांखि हेतै' (शुभेन्दु शेखर), 'टुटैत मनक जुड़ाव' (उमेश मंडल), 'पह' (अभिलाषा), 'गस्सा' (सोनू कुमार झा), आ 'नीर भरल नयन' (अखिलेश कुमार झा) आदि प्रमुख अछि। ऋषि वशिष्ट कहैत छथि जे आब साहित्य समाज के दर्पणेटा नहि रहि गेल अछि, बरू कोनो समाजक आलोचक सेहो अछि। ई अपन 'गाम सँ जाइत रेलगाड़ी' मे कुंठित व्यथा के बहरायबाक प्रयास कयने छथि। 'गस्सा' कथा संग्रहमे सोनू कुमार झा अपन मनक भीतर चलि रहल अन्तर्द्वन्द के बड्ड नीक सँ रखबाक प्रयास कयने छथि। ओ एहि सामाजिक परिस्थिति के देखि क' व्यथित छथि, जाहिठाम अर्थक पाछु भागि रहल लोकक लेल सामाजिक-पारिवारिक सम्बन्ध कोनो महत्त्व नहि रखैत अछि। हुनक चिन्ता छैन्हि जे जखन सामाजिक-पारिवारिक सम्बन्ध नहि त' फेर हम सभ कोन प्रकारक समाजक कल्पनामे लागल छी? अभिलाषा अपन संग्रह 'पह' के माध्यमसं स्त्रीके जीवनमे सकारात्मक ढंग सँ जीबाक लेल उत्साहित करैत छथि। एहि संग्रहमे हरेक आयु वर्गक स्त्रीक बात कयल गेल अछि। शुभेंदु शेखर अपन कथा संग्रह 'ओकरो कहियो पॉखि हेतै' के मादे ई संदेश देबाक प्रयास कयने छथि जे आब गामक परिदृश्यमे सेहो नीक बदलाव भेल अछि। ई गामक छल-छद्म सँ पर्दा सेहो उठेबाक प्रयास कयने छथि। 'नीर भरल नयन' कथा संग्रह के माध्यम सं अखिलेश कुमार झा सामाजिक पीड़ा के आत्मसात करैत अपन हृदयक संवेदना के व्यक्त करैत छथि। एहि संग्रहक कथा यथार्थक भावभूमि पर आदर्शवाद के तरफ इशारा करैत प्रतीत होइत अछि।

मैथिलीमे बिहिन कथा रूपें सेहो एक तरहक कथा लिखा रहल अछि, जाहिमे प्रमुख सक्रिय- घनश्याम घनेरो, मनोज कुमार कर्ण, विनीता ठाकुर, अरुण कुमार लालदास, कल्पना झा, विद्याचन्द्र झा बमबम, डॉ प्रमोद कुमार, ओमप्रकाश झा, डॉ ज्योति सुनीत चौधरी, डॉ भवनाथ झा, जगदानंद झा 'मनु', सोनी नीलू झा आदि लोकनि शामिल छथि।

आधुनिक रचना मे भूमंडलीकरण, वैश्वीकरण, आधुनिकीकरण, उपभोक्तावादी संस्कृति, जाति ओ धर्मक आधार पर राजनीति, शोषणक विरूद्ध संघर्ष, शहर दिस पलायन, युवा वर्गक आत्मविश्वास, स्त्री विमर्श पर चर्चा आदि अनेक सामाजिक व्यवस्थामे परिवर्तन होयबाक संकेत भेटैत अछि।

एहि रूपें कहल जा सकैत अछि जे समकालीन मैथिली कथा मार्क्स ओ फ्रायडक दर्शनक व्याख्या करैत, मार्क्सक दर्शनक अनुसार सामाजिक संघर्षक स्वर दैत, सामाजिक संरचना चाहैत आगू बढल। जाहि क्रममे कृषि संस्कृति सं औद्योगिक संस्कृति दिशि बढैत इच्छा, पुन: कृषिक उन्नति करबाक भाव संग युग चेतनाक स्वर रूपमे सोझां अबैत रहल। एहि क्रममे मानव-जीवनक विभिन्न रूपसं दर्शन भेल, आलोक आयल। अत: कहि सकैत छी जे समकालीन कथा आइ सांस्कृतिक चेतनाके मुखरित करैत अपन पूर्वक परिदृश्य के परिवर्तित करबामे सफल भेल अछि। ■

सन्दर्भ

1. मैथिली साहित्यक आलोचनात्मक इतिहास: डॉ. दिनेश कुमार झा
2. मैथिली कथाक विकास: सं. डॉ. बासुकीनाथ झा
3. मैथिली कथा संग्रह: सं. मोहन भारद्वाज आ अमरेश पाठक
4. मैथिली गद्य गौरव: सं. शरदिंदु चौधरी
5. नालन्दा ओपन यूनिवर्सिटीक एम ए मैथिलीक सामग्री।

मैथिली कथा परंपरा

✍ प्रो. अभिलाषा

लेखिका सी.एम. कॉलेज, दरभंगा केर मैथिली विभाग मे सहायक प्राचार्य छथि। प्रकाशित कृति : पह (कथा संग्रह), पोथी पाठ (समीक्षा पोथी)। चेतना समिति, पटना द्वारा प्रथम ज्योत्सना सम्मान सं सम्मानित।

प्रत्येक लेखक, विशेष क' सृजनात्मक लेखक अपन समयक प्रवक्ता होइत छथि। ओ, समयक वैचारिक आ रचनात्मक दबाव कें झेलैत, होइत परिवर्तन कें अपन सृजनशीलताक आधार बनबैत छथि। अपन लेखनीमे यथार्थक चित्रण करैत छथि। जे जतेक अधिक दृष्टि-सम्पन होइत छथि, ओ ततेक बेसी अपन समयक शब्दचित्र अपन रचनामे आनैत छथि, आ अपन पक्षधरता कें विमर्शक आधार बनबैत छथि।

हम कहब जे मैथिली साहित्यक शीर्ष पुरुष विद्यापति अपन समकालक सर्वाधिक साकांक्ष लेखक भेलाह। समाजक आकलन हुनक अद्भुत छल। जें कि ओहि कालखंडमे राजतंत्रीय शासन-व्यवस्था छल, राजा भोग-विलासमे विशेष अभिरुचि रखैत छलाह। तहिना दोसर दिस आम जनतामे धार्मिकता मुखर छल। विद्यापति दुनू स्थितिक आकलन अपन रचनाक माध्यमसं काफी साकांक्ष भ' क' कएलनि। जेना, तत्कालीन समाजमे विषमता चरम पर छल, गरीबी छल, जीवनक एकमात्र आधार कृषि छल, वैवाहिक समस्याक प्रबलता सेहो कम नहि छल। विद्यापतिक साहित्यक गहन अध्ययन करैत छी तं ओ उक्त सब तरहक स्थिति पर लेखनी चलबैत देखा पड़ैत अछि। यैह कारण अछि जे एतेक समय बीति गेलाक बादो हुनक रचना पढ़ि अर्थात् हुनक रचनाक आधार पर तत्कालीन समाजक अध्ययन क' सकैत छी। एकरा किछु उदाहरण सं स्पष्ट कएल जा सकत अछि—

"कखन हरब दुख मोर हे भोलानाथ
दुखहि जनम भेल दुखहि गमाएल
सुख सपनेहु नहि भेल, हे भोलानाथ..."[1]

* * *

कहिहुन बाबा के किनता धेनु गाइ
दुधबा पिआइ के पोसता जमाइ
नहि मोरा टाका अछि नहि धेनु गाइ
कोन विधि पोसब बालक जमाइ[2]

* * *

"हम नहि आजु रहब एहि आंगन
जओं बुढ़ होयत जमाए गे माई..."[3]
"बेरि बेरि आहे शिव हमे तोहि कहलहुं
किरिष करिअ मन लाय"[4]

एकर संगहि आधुनिक कालमे कवीश्वर चंदा झाक समकालीन चिंताक मुखर उल्लेख सेहो हुनक छिट-फुट मुक्तक सबमे देखल जा सकैत अछि। तहिना रामायणक जखन गहन अध्ययन करैत छी तं सीतारामक माध्यमसं ओ बड़ महीन रूपमे अपन समयक चिंता कें व्यक्त करैत देखल जाइत छथि। तत्कालीन सामाजिक व्यवस्था पर कवीश्वर चन्दा झा एक मुक्तक मे लिखैत छथि—

"अस्त्र शास्त्र रोक आ मामिलाक मारि
भाइ भाइकें पढ़ैछ नित्य नित्य गारि
ठक्क लोक हक्क पाव साधु के उजारि
दैव जे ललाट लेख के सकैछ टारि"[5]

* * *

तहिना तत्कालीन न्याय-व्यवस्था पर हुनक एक टिप्पणी अछि—

संपर्क : सी.एम. कॉलेज, दरभंगा
मो.: 8409408123, इमेल : jhaabhidesire@gmail.com

न्यायक भवन कचहरी नाम
सभ अन्याय भरल तेहि ठाम
सत्य वचन विरले जन भाष
सभ मन धनक हरन अभिलाष...[6]

चन्दा झाक पश्चात व्यंग्यक धार कविवर सीताराम झाक रचनामे परिलक्षित होइत अछि। देश-दशा विषयक हुनक कवितामे व्यंग्यक वक्रता देखल जा सकैत अछि–

''केश छत्ता जकां माथ हत्ता जकां
आंखि खत्ता जकां दांत फारे बुझू।
बोल रोड़ा जकां, चालि घोड़ा जकां
पेट मोरा जकां वा बखारे बुझू।
छूति नहि लाज सं, संग कय पाज सं
नित्य सत्काज सं उघारे बुझू
राक्षसी ढंग टासं करै तंग टा
संखिनी संग सहोरे बुझू''[7]

तत्कालीन युगक समाप्ति होइत-होइत रचनाकारक दृष्टिमे परिवर्तन आएल। विभिन्न समस्या दिस हुनक ध्यान जाय लगलनि, जाहिमे प्रमुख छल बाल विवाह। एहिपर यात्रीजीक पंक्ति द्रष्टव्य थीक–

परतारि क' मड़बापर बहीन ल' गेल
कीदन कहांदन भेलै बिआह भ' गेल[8]

हास्य-व्यंग्य सम्राट हरिमोहन झा सेहो अपन लेखनीमे एहि नारी समस्याकें आधार बनौलनि। उदाहरणार्थ हुनक कथा 'कन्याक जीवन'मे नारीक पीड़ा ओ ओकर आक्रोशित व्यंग्य-स्वरकें देखल जा सकैत अछि–

''हेऔ पाहुन अहां अपनासं हमरा किएक मिलान करैत छी? अहां पुरुष छी और हमरा सभ जखने कन्या भ' क' जन्म लैत छी तखने अवधारि लैत छी। जों हम सब अपन नोर बहाबय लागी तं गामक गाम दहा जायत।[9]

हमर कहबाक अभिप्राय ई जे ई क्रम कहियो अवरुद्ध नहि भेल। तमाम अनुज पीढ़ी, जेना-जेना समाज-परिवर्तन होइत गेल, आवश्यकता बढ़ैत गेल आ तहिना-तहिना समस्या सब सेहो मूड़ी अलगाब' लागल, तकर उल्लेख अपन लेखनी द्वारा करैत गेल छथि। आ से कविवर सीताराम झा होथि आकि यात्रीजी आकि हरिमोहन झा।

हमर विवेच्य विषय मैथिली कथाक समकालीनताक प्रसंग अछि। मैथिली कथा साहित्यमे समकालीन जकरा 'समसामयिक' शब्दक रूपमे प्रयोग करैत सुधांशु शेखर चौधरी लिखलनि अछि– ''विशेष समयक परिधिमे सामयिक वातावरणसं सामग्री ल' जीवंत कथा लिखैत अछि, से समसामयिक कथाकार थीक आ जकर कथा समयक जीवनकें आत्मसात् कएने रहैत अछि, सैहटा समसामयिक कथा थिकैक।''[10] मैथिली कथा साहित्य एहने सन कथाकारक लेखनीसं भरल-पुरल अछि। एत' हम उक्त कालखंडक बेसी विस्तारमे नहि जाय हरिमोहन झासं अपन विमर्शक श्रीगणेश करैत छी।

हरिमोहन झा महाकवि विद्यापतिक पश्चात् मैथिली साहित्यक सर्वाधिक लोकप्रिय रचनाकार भेलाह। हरिमोहन झा वस्तुतः मैथिलीक मौलिक कथाक पहिल लेखक भेलाह जे अपन रचनाक बलें भाषेतर पाठक वर्ग सेहो सृजित कयलनि। ओना ओ जाहि कालखंडमे साहित्यमे अएलाह, ओ कालखंड भारतक स्वतंत्रताक कालखंड छल। हुनक रचनामे तकर स्पर्श नहि भेटैत अछि।

हरिमोहन झा महाकवि विद्यापतिक पश्चात् मैथिली साहित्यक सर्वाधिक लोकप्रिय रचनाकार भेलाह। हरिमोहन झा वस्तुतः मैथिलीक मौलिक कथाक पहिल लेखक भेलाह जे अपन रचनाक बलें भाषेतर पाठक वर्ग सेहो सृजित कयलनि। ओना ओ जाहि कालखंडमे साहित्यमे अएलाह, ओ कालखंड भारतक स्वतंत्रताक कालखंड छल। हुनक रचनामे तकर स्पर्श नहि भेटैत अछि। तथापि ओ जाहि विषयकें अपन लेखनक आधार बनौलनि, ओ अद्भुत छल। ओ सोचलनि जे कोनो समाजक विकासमे स्त्री लोकनिक अहम भूमिका होइत अछि। आ हम जाहि समाजमे रहि रहल छी, ताहि समाजक स्त्रीवर्ग कूपमंडूकताक स्थितिमे अपन जीवनक आदि-अंत बूझि जीबि रहल छथि। तें ओ स्त्री-विकासक आधार लए एक-पर-एक रचना करैत समाजमे अपन एक अमिट छाप छोड़लनि। 'कन्यादान'[11] एवं 'द्विरागमन'क माध्यमसं नारी-मोनक विकासक एक अद्भुत चित्रांकन समाजक सोझां रखलनि। तहिना 'कन्याक जीवन'[12]क माध्यमसं विधवा प्रथा पर गंभीर चोट कएलनि। तं दोसर दिस 'ग्रामसेविका'[13]क माध्यमसं एकटा नव दिशाक संकेत कएलनि। एक दिस जं 'रेलक अनुभव'क माध्यमसं धार्मिक-कुण्ठा पर व्यंग्य कएलनि तं दोसर दिस 'ग्रेजुएट पुतोह'[14] सनक कथा माध्यमे समाजकें दर्पण देखौलनि। 'खट्टरकाकाक तरंग'क माध्यमसं तमाम पाखंड पर कड़गर प्रहार कएलनि। हुनक कथाकार समाजमे व्याप्त प्रत्येक ओहन परम्परा, ओहन अंधविश्वास, ओहन अराजकताकें अपन लेखनक केन्द्रबिन्दु बनौलनि जे मैथिल समाजक विकासमे बाधक सिद्ध भ' रहल छल। ओ सामाजिक आचरण हो अथवा धर्मशास्त्र, ओ ज्योतिषक अ'ढ़मे नुकाएल पाखंड हो, हरिमोहन झा सभक शल्यक्रिया करब अपन कर्तव्य बुझलनि।[15] ई छल हुनक समकाल-चिंता। समाज अन्हारसं इजोत दिस आबि रहल छल। चिंतन करोट फेरि रहल छल, देश आजाद भ' रहल छल। आजाद भइयो गेल।

आजाद भेलाक बाद एहि क्रममे एकटा नव पीढ़ीक कथा-जगतमे आविर्भाव भेल– ललित, राजकमल, मायानंद मिश्र, बलराम, सोमदेव, रमानंद रेणु, लिली रे आदिक। एहि पीढ़ीक सोच अपन ओहि पूर्वक पीढ़ीसं साफ अलग छल। यात्री जाहि प्रगतिशील चेतनाक बीज मैथिलीमे कविताक माध्यमसं बाउग कएलनि,

अथवा मैथिलीकें सामाजिकताक जमीन पर छिटलनि, तकर फल उक्त रचनाकारक कथा सबमे जगजियार भेल। बदलल समाजक बदलल स्थितिक बदलल चिंता हिनका लोकनिक कथामे नव तेवर, नव भंगिमा तथा नव शिल्पमे एकटा नव बदलावक श्रीगणेश कएलक। आ जकर अगुआ भेलाह ललित।

ललित लिखलनि 'मुक्ति'[16], जाहिमे स्त्रीक लेल पुरुषक आवश्यकताकें जरूरी मानलनि, तं राजकमल चौधरी लिखलनि 'फुलपरासवाली'[17], जाहिमे एकटा स्त्रीक चरित्र ल' क' ओकर खंडन करबाक प्रयास कएलनि, तं मायानंद मिश्रक कथा 'टूटैत किलक जांत'मे स्त्रीक चरित्रकें दोहरी भूमिकामे जीबैत देखौलनि। मुदा ई एक घटना मात्र छल। ओ पीढ़ी चीन्हल गेल ललितक 'पृथ्वीपुत्र' उपन्यास आ कथा 'रमजानी' ल' क'। 'पृथ्वीपुत्र' जं एक दिस मार्क्सवादी विचारधाराक आंचलिकताक मेनीफेस्टो साबित भेल तं 'रमजानी' कथामे कृषियुगक समाप्ति आ मशीनयुगक मानसिकता दिस अग्रसर होयबाक संकेत कएलनि।

एत' ई स्पष्ट कर' चाहब जे एकहि कालखंडमे, एकहि समकालमे तीन-तीन पीढ़ी पूर्वक, वर्तमानक आ भविष्यक, रचनाशील रहैत अछि। कहबाक अभिप्राय ई जे ललित, राजकमल, मायानंदक कालखंडमे हरिमोहन झा सेहो रचनाशील छलाह, तं प्रभास कुमार चौधरी (नव घर उठय पुरान घर खसय) गंगेश गुंजन (अन्हार-इजोत) जीवकान्त (इनक्लाब) पर्यन्त मैथिली कथाक भविष्य ल' क' उभरि रहल छलाह।

स्वतंत्रता प्राप्तिक बाद स्वतंत्र भारतक प्रति जे आम जनमे एक आशा, अकांक्षा, आवेश छलै, से धराशायी होब' लगलै। मोहभंगक स्थिति विकराल होइत चलि गेलै। जन-मानसमे सभमे बहुत तेजी सं हताशा आब' लगल। आ से ओ सब तरहक बदलाव गंगेश गुंजन, प्रभास कुमार चौधरी, राजमोहन झा, जीवकान्तक संगहि हुनक बादक पीढ़ी सुभाषचन्द्र यादव, महाप्रकाश ओ सुकांत सोम होइत बिनोद बिहारी लाल, विभूति आनन्द, मनमोहन झा, उषाकिरण खान, अशोक, शिवशंकर श्रीनिवास, शैलेन्द्र आनंद, तारानंद वियोगी, केदार कानन, प्रदीप बिहारी, नीता झा, देवशंकर नवीन, सुष्मिता पाठक, ज्योत्स्ना चंद्रम, दमन कुमार झा, अशोक कुमार मेहता, श्याम दरिहरे, कुमार मनीष अरविंद, हीरेन्द्र कुमार झा आदि धरि अबैत-अबैत कथा बेस स्पष्ट आ समाजक सोझा-सोझी होब' लागल। एत' धरि अएलाक बाद समकालीन मैथिली कथामे, ओकर चिंता

वर्तमान पीढ़ी समाजक चिंता व्यापक रूपमे क' रहल अछि। तें आजुक मैथिली कथामे विषयक फलक विस्तृत भेटैत अछि। मैथिलीमे स्त्री-विमर्श, दलित विमर्श, बेरोजगारी, उपनिवेशवादक स्थिति, ओकर कुपरिणाम आदि विविध विषयक यथार्थ कथा अकानल जाय लागल।

ओ चिंतनमे, ताहि तरहें विमर्श होब' लागल, आ एना लागल जे हरिमोहन झाक पीढ़ी आकि ललित, राजकमल, मायानंदक (त्रिपुण्ड) पीढ़ी बहुत पुरान भ' गेल अछि। वर्तमान पीढ़ी समाजक चिंता व्यापक रूपमे क' रहल अछि। तें आजुक मैथिली कथामे विषयक फलक विस्तृत भेटैत अछि। मैथिलीमे स्त्री-विमर्श, दलित विमर्श, बेरोजगारी, उपनिवेशवादक स्थिति, ओकर कुपरिणाम आदि विविध विषयक यथार्थ कथा अकानल जाय लागल।

अर्थात् मैथिली समाज एवं संस्कृति, भारतीय परम्परा एवं आदर्श आ मनुष्य जातिक अस्तित्व एवं अस्मिता पर सोचबाक, विचार-विमर्श करबाक तथा ओकर गन्तव्यक दिशा इंगित करबाक प्रशंसनीय काज आजुक कथा सभ क' रहल अछि।[18] एहि संदर्भमे कुलानंद मिश्र लिखैत छथि जे– ''परम्परागत मूल्यबोधक क्रमिक ह्रास, सामाजिक आ पारिवारिक सम्बन्ध-विघटनक यथार्थ बोध, टुटैत-बनैत सम्बन्धक पीड़ा एवं उल्लास, अपरिहार्य वर्ग-विरोधक फरीछ ज्ञान, आक्रामक हेबाक लोक-विवशता, अपरिमित आग्नेय तथा जैविक शास्त्रास्त्रक ढेरी पर बैसि बारूदी भाषामे गप्प करैत दुनियाक संत्रास आ संगहि एकटा नव दुनिया गढ़बाक नव चिंता संग जिबैत लोकक चेष्टा-कुचेष्टा ई सभ किछु एहन विशिष्ट बिन्दु थिक जकरा केन्द्रमे राखि विगत तीन दशकक कथा साहित्य-रूपाकार ग्रहण करैत रहल अछि।[19]

कहबाक तात्पर्य जे नव-नव कथ्य-शिल्प, परिवेश ल' क' कथा लिखल जा रहल अछि। मैथिली कथा अपन प्रगतिवादी लेखकक कारणे आन भाषा साहित्यक समक्ष प्रतिष्ठित भेल अछि। वर्तमानमे लेखनरत किछु एहन प्रतिनिधि कथाकारक कथाक चर्च करैत हुनक समकालीन सोच पर संक्षिप्ते, मुदा गप्प कर' चाहब, जिनका लोकनिक एकाधिक कथा-संग्रह प्रकाशमे आबि चुकल अछि, आ जाहिमे प्रमुख छथि– अशोक, शिवशंकर श्रीनवास, विभूति आनंद, रमेश, उषाकिरण खान, नीता झा, सुष्मिता पाठक, प्रदीप बिहारी आदि।

अशोक जीक कथा युगीन राष्ट्रीय अंतरराष्ट्रीय चिंता आ ताहि परिप्रेक्ष्यमे सापेक्ष मिथिलाकें देखबा-बुझबाक दृष्टि दैत अछि। हिनकर कथामे सामाजिक यथार्थ आ संघर्षक अनेक आयाम चित्रित भेटैत अछि। अपन प्रगतिवादी दृष्टिकोणसं सामाजिक यथार्थक उपस्थापन करब हिनक विशिष्टता अछि। हिनक विशिष्टताक संदर्भमे मोहन भारद्वाज लिखैत छथि–''समकालीन कथाकारमे अशोकक कथा कहबाक ढंग आ भाषा खांटी मैथिल खिसक्कड़बला

होइत अछि जे ओकर आकर्षणकें दोबर क' दैत छैक।[20] सरिसबक साग, मातबर, प्रतिलोम, मनसूबा, राग, रांड़, छल, तानपूरा, डैडीगाम, स्वाधीन आदि हिनक एहने प्रसिद्ध कथा अछि, जाहिमे समाकालीन सामाजिक, धार्मिक ओ सांस्कृतिक चेतनाक स्पष्ट स्वरूप भेटैत अछि।

कथा 'स्वाधीन'[21] मे अदौसं पुरुष द्वारा मात्र उपभोगक वस्तु बूझल जाय बाली स्त्रीक सशक्त ओ बदलैत स्वरूप कें अशोक जीक एहि कथामे देखल जा सकैत अछि। कथामे नारी-इच्छाक आगां पुरुषकें झुकब बाइसम सदीक नारी सशक्तीकरण कें दर्शबैत अछि। ओ पुरुषक अनुगामिनी नहि, अपितु संगिनी बनि रह' चाहैत अछि—

''—'हम ई संतान नहि चाहैत छी।'

—'से किए?'

—'ई संतान हमर इच्छाक विरुद्ध अछि। एकर माय हम नहि बनि सकैत छी। पतिक बलात्कारसं उत्पन्न संतानक माय हम नहि बनय चाहैत छी।''[22]

एहि क्रममे एक नाम अछि 'रमेश'। हिनक कथा मैथिली कथा साहित्यक परिधि-विस्तार करैत अछि। हिनक कथामे समाजक पीड़ा आ चिंता, चिंतन करैत भेटैत अछि। लाल टरेस आंखि, गुनाह कबूल, युग-सत्य संकेतक, भूआ, जनेउ आदि हिनक प्रसिद्ध कथा अछि, जाहिमे वर्तमान जनजीवनक यथार्थक चित्र भेटैत अछि, जकर कथाकार महीनीसं वर्णन कएने छथि।

गाम, नगर-महानगर दिस भागि रहल अछि। मैथिली कथाक ई सौभाग्यक गप्प अछि जे किछुए कथाकार गाममे रहि क' गामक समस्या, गामक विकास, गामक राजनीति आदि पर अपन कलम चला रहल छथि, जाहिमे एकटा प्रमुख नाम अछि शिवशंकर श्रीनिवासक। सही अर्थमे शिवशंकर श्रीनिवास ग्रामीण कथाकार छथि। हिनकर अधिकांश कथामे गाम जे करोट फेरि रहल छै, तकर वर्णन करैत अछि आ जकर निदान ओ अपन प्रगतिशील सोचसं करैत छथि। हिनक एकटा कथा अछि 'धरती उपर उठि गेलीह' जाहिमे नारीक चेतनामे आएल बदलावकें देखल जा सकैत अछि। एहि कथाक नायिका गाममे रहि अर्थोपार्जन हेतु टैम्पू चलबैत अछि। हिनक कथा परंपरागत जड़ताकें तोड़ैत नवताक आरंभ करैत अछि। सामाजिक-सांस्कृतिक चेतनाकें हिनक कथा 'सतभैंया, गुण-कथा, सीतापुरक सुनयना' आदिमे देखल जा सकैत अछि। जेना—

''बौआ हौ, ई समाज जाति-धर्मक नामपर मनुक्ख के बड़-बड़ विकट परिस्थितिमे देने अछि। तकर हमहूं मारल छी। हमर सक्क चलैत त' ई जाति-पांति धर्म सभ के चूल्हिमे डाहिक' भस्मक दीतियै। मात्र मनुक्ख रहितै, ओकर गुण रहितै।''[23]

गाम, नगर-महानगर दिस भागि रहल अछि। मैथिली कथाक ई सौभाग्यक गप्प अछि जे किछुए कथाकार गाममे रहि क' गामक समस्या, गामक विकास, गामक राजनीति आदि पर अपन कलम चला रहल छथि, जाहिमे एकटा प्रमुख नाम अछि शिवशंकर श्रीनिवासक। सही अर्थमे शिवशंकर श्रीनिवास ग्रामीण कथाकार छथि।

गामसं आबि शहरमे बसला पर मोनक छटपटाहटि कें गुण-कथामे मार्मिक चित्रण भेल अछि। गामक लोक शहरोमे गामे जीयब पसिन्न करै छै। उदाहरणार्थ—

—'ओत' की लेब' गेलौं?'

—हम ओत' जीब' लेल गेलहुं। एत' हम लोक बिना मरि जैतहुं।

—किएक, एत' लोक नइं छै?

—हमरा लेल नइ छै। मात्र नीक भोजन आ नीक सुविधा सं मनुक्ख नइं जीयत, मनुक्ख के मनुक्ख चाही।[24]

ओतहि प्रदीप बिहारीक कथाक कथ्य ग्रामीण आ शहरक बीच भ्रमणशील रहैत अछि। बिहारी जी ग्रामीण ट्रीटमेंट दैत शहरी आ अर्द्धशहरी कथा लिखैत छथि। हिनक अधिकांश कथा मार्क्सवादी विचारधाराक अनुरूप वर्गसंघर्ष पर आधारित रहैत अछि।

उदाहरणार्थ मोटबाह, पारिश्रमिक, गमलामे धान, सारंगिया, मौगियाह, कैक्टससं घेरायल कथामे सामाजिक चिंतन ओ आर्थिक विपन्नतामे जीबैत लोकक संघर्ष कें देखल जा सकैत अछि—

''वाह! शोषणरहित सामाजिक कल्पना! शोषण मुक्त व्यक्तिक सपना! बोनिहार पर मालिकानक अत्याचार नहि हो। पुलिसक अत्याचारक शिकार नहि होमय लोक!!! बजैत छथि ओ, दोसर द्वारा तेसर पर अत्याचारक उल्लेख तं कयने छी मुदा अपन द्वारा अपन जे शोषण क' रहल छी, से लिख' बेरमे मोन नै रहल?''[25]

समकालीन मैथिली कथाक एकटा महत्वपूर्ण हस्ताक्षर छथि विभूति आनंद। विभूति आनंद बहुविधावादी लेखक छथि। हिनकर कथामे प्रगतिशील चेतनाक भंडार भेटैत अछि। ओ समाजमे परिवर्तित भ' रहल जीवन-शिल्प, जीवन-दशाकें बहुत महिनी सं पकड़ैत छथि। स्त्री-शिक्षाक प्रचार-प्रसारसं स्त्रीक स्वावलंबी बनबाक ललक बढ़ल अछि। एहि ललकमे स्त्री आइ शादी-बियाह कें सेकेण्डरी आ नौकरीकें जीवनक प्राइमरी ध्येय मानैत अछि।

सिहकीसं आगू, एहन की भ' गेलै से!, अनमना, एकटा उड़ल फुर्र किछु हिनक प्रसिद्ध कथा अछि। कथाकार वर्तमान युवा-मोनक सोचकें कथा 'सोलकन्ह'मे बड़ यथार्थ कएने छथि।

''—'बड़का लोक'के कोनो की जात होइत हइ। ओकर जाते अल्लग हइ।

—'कोन?'

—'ऊ सब सोआरथ-जात होइत हइ। जेन्नी जेकरा से सोआरथ भेल, तेन्नी...'[26]

अर्थात् वर्तमान समाज स्वार्थक आधार पर वर्गीकृत अछि। कथा 'सिहकी' सं आगूमे नव पीढ़ीक नारीक सोच मुखर

भेल अछि। आजुक नवयौवना नारी शादी-बियाहक बातपर कहैत अछि जे—

''न बाबा न, शादी-बियाह न! हम सब न बियाह करब, आ न ओइ बंधनमे बन्हाय के सोचम! कब्भी भी!'[27]

एम्हर मैथिली कथाक भंडारमे बढ़ोत्तरी कर'मे महिला साहित्यकार लोकनिक सहभागिता बढ़ल अछि। ओ लोकनि नारी-उत्थान हेतु अपन लेखनक माध्यमे जागृति आनि रहल छथि। ओ अपन विमर्श स्वयं क' रहल छथि। एहिमे स्थापित नाम अछि— शेफालिका वर्मा, उषाकिरण खां, नीता झा, नीरजा रेणु, सुष्मिता पाठक, ज्योत्स्ना चन्द्रम्, वीणा ठाकुर, आदि। ई लेखिका लोकनि सजग ओ मुखर होइत अपन रचनाकें पर्याप्त संवेदना आ सुगढ़ताक संग विस्तृत आयाम दैत रचना क' रहल छथि। अपन परिवेश ओ समस्या सं साक्षात्कार करैत भीतरी तह धरि ढुकैत, तकर समाधान ताकि रहल छथि। परिणामतः आजुक कथा अपन समय आ समाजक जटिल, कुटिल आ बहुकोणीय यथार्थ कें व्यक्त कर९मे सफल भ' रहल अछि। किछु कथा त' ओ लोकनि एहनो लिखि रहल छथि जकरा बले मैथिली कथा आन कोनो भाषाक कथाक समक्ष ठाढ़ भेटैत अछि। उषा जीक 'कांचहि बांस', 'उलट बांसी', 'सद्गति', नीता जीक 'देश काल', अयना, 'ओ घड़ी ओ पल', विभा रानीक 'खोहसं निसकैत', 'खान साहेब', ज्योत्स्ना चंद्रम्क 'झिझिरकोना', 'शहीद', सुस्मिता पाठकक 'प्रतीक्षा', 'कथावाचक', 'राग-विराग' आदि एहने सन कथा सब अछि, जाहिमे समकालीनताक चित्र मुखर रूपें व्यक्त भेल अछि।

उदाहरणार्थ— कथा 'न्योतल बलाय'क स्त्री पुरुषकें अपन महत्व बुझबैत कहैत अछि— 'वंश बढ़त छुच्छे छौंड़ासं! जनमाउ बेटा एकबेर... उतारि लाउ अकाससं... तोड़ि लाउ ग' ताड़-खजूरक गाछसं...।[28]

एहि तरहें देखैत छी जे वर्तमान मैथिली कथा विविध विषयक यथार्थवादी कथ्यक विस्तार लए नवीन सोच आ नवीन दृष्टिकोणसं लिखल जा रहल अछि।

कहल जाइत अछि जे सार्थक साहित्य युग-जीवनक तत्व ओ संवेदनाक सघन बनावटि सं सृजित-निर्मित होइत अछि, जे अपन समयक सामाजिक, सांस्कृतिक तथा वैचारिक यथार्थकें प्रतिफलित करैत युग-जीवनक दिशा-निर्देश करैत अछि। एहि तरहक चिंतनक मूल आधार होइत अछि विचारधाराक स्पष्टता। जे रचनाकार अपन विचारमे, अपन सोचमे जतेक स्पष्ट रहैत छथि, हुनक रचना ततेक बेसी समय-सापेक्ष ओ समाज-सापेक्ष होइत अछि। आ से हमरा एखन जे मैथिली कथाक वर्तमान अछि, ताहिमे अधिक देख'मे अबैत अछि। जें कि ई पंक्ति लेखक स्वयं एहि कालखंडमे जीबैत छथि, तें एहि आकलनकें पूर्ण प्रामाणिकता संग भुक्तभोगी जकां अपन मान्यतामे स्पष्ट छथि। एकरा हमर पूर्वाग्रह नहि, स्पष्ट संवाद कहल जा सकैत अछि। ■

संदर्भ सूची

1. विद्यापतिक शिवगीत, संकलन-सम्पादन- मोहन भारद्वाज, मित्रम् प्रिंटर्स एण्ड पब्लिशर्स, 1997, पृ.- 13
2. विद्यापतिक पदावली, (सं.) : विभूति आनंद / ज्योत्स्ना चंद्रम्, जखन तखन, लक्ष्मीसागर, दरभंगा, पृ.- 51
3. विद्यापति गीतावली, (सं.) : गोविन्द झा, प्र०- मैथिली अकादमी, पटना, तृतीय संस्करण 2008, पृ.- 16
4. विद्यापतिक पदावली, (सं.) : विभूति आनंद/ ज्योत्स्ना चंद्रम्, जखन तखन, लक्ष्मीसागर, दरभंगा, पृ.- 93
5. चन्द्र रचनावली, (सं.) : डॉ. विश्वेश्वर मिश्र, मैथिली अकादमी, पटना, पृ.- 309
6. तत्रैव, पृ.- 313
7. लोक-लक्षण, सीताराम झा, मास्टर खेलाड़ी लाल एण्ड सन्स, वाराणसी, पृ.- 10
8. यात्री समग्र, वैद्यनाथ मिश्र यात्री, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, पृ.- 34
9. हरिमोहन झाक साहित्य संसार, (सं.) : रघुवीर मोची, मैथिली अकादमी, पटना, 2008, पृ.- 106
10. समकालीन मैथिली कथा साहित्य, (सं.): कलानाथ मिश्र, चेतना समिति, 2010, पृ.- 90
11. कन्यादान (उपन्यास), हरिमोहन झा, जनसीदन प्रकाशन, कुमर बाजितपुर, वैशाली
12. मैथिली कथा संचयन, (सं.): शिवशंकर श्रीनिवास, नेशनल बुक ट्रस्ट ऑफ इंडिया, नई दिल्ली, 2004, पृ.- 05
13. बीछल कथा, हरिमोहन झा, चयन : राजमोहन झा, सुभाष चन्द्र यादव, साहित्य अकादेमी, दिल्ली, 1999, पृ.- 89
14. तत्रैव, पृ.- 135
15. हरिमोहन झाक रचना-कर्म, विभूति आनंद, मैलोरंग प्रकाशन, दिल्ली, वर्ष- 2016, पृ.- 67
16. ललित समग्र, (सं.): विभूति आनंद, मैथिली अकादमी, पटना, पृ.- 25
17. कृति राजकमलक, (सं.): आनंद मिश्र, मोहन भारद्वाज, मैथिली अकादमी, पटना, 1980, पृ.- 08
18. कथागोष्ठी, मोहन भारद्वाज, मैथिली अकादमी, पटना, 2008, पृ.- 27
19. तत्रैव, पृ.- 62
20. तत्रैव, पृ.- 138
21. डैडीगाम, अशोक, नवारंभ, पटना, 2017, पृ.- 24
22. तत्रैव, पृ.- 32
23. गुण कथा, शिवशंकर श्रीनिवास, नवारंभ, पटना, 2014, पृ.- 31
24. तत्रैव, पृ.- 48
25. सरोकार, प्रदीप बिहारी, चतुरंग प्रकाशन, 2005, पृ.- 19
26. एकटा उड़ल कुर्, विभूति आनंद, नवारंभ, पटना, 2018, पृ.- 79
27. तत्रैव, पृ.- 65
28. आधा आबादी, डॉ. नीता झा, प्रभात प्रकाशन, लहेरियासराय, दरभंगा, 2018, पृ.- 7

लेखक / प्रकाशकगण केर ध्यानार्थ

'तीरभुक्ति' मे समीक्षा प्रकाशनार्थ अपन नव पुस्तक अथवा पत्रिका केर कम सं कम दू प्रति समीक्षा अनुरोधक संग संपादकीय कार्यालय पठाओल जा सकैछ। विशेष जानकारी वास्ते 9911364316 अथवा 9213152822 पर संपर्क कएल जा सकैत अछि। — संपादक

मैथिली उपन्यास : अतीत एवं वर्तमान

✍ रमाकान्त राय 'रमा'

मैथिलीक वरिष्ठ साहिकार। जन्म - 11 सितम्बर 1946 ई.। सभ विधाक एक दर्जनसं अधिक कृति प्रकाशित। आधा दर्जन पोथी प्रकाशनक प्रतीक्षामे। विघापति सेवा संस्थान दरभंगा द्वारा मिथिला विभूति, (2012), मिथिला सांस्कृतिक समन्वय समिति, गौहाटी द्वारा प्रथम राजकमल चौधरी साहित्य सम्मान (2018), भारतीय साहित्यकार संसद, समस्तीपुरसं यात्री शिखर साहित्य सम्मान एवं हरिमोहनझा शिखर साहित्य सम्मान।

उपन्यास (Novel) कथा साहित्यक एकटा लोकप्रिय विधा थिक। कथा साहित्यक एहने लोकप्रिय दोसर विधा थिक लघुकथा (Short story) किंवा गल्प (गप्प)। आधुनिक मैथिली साहित्यमे कथा साहित्य तँ लोकप्रिय अछिए ओहूमे उपन्यास सेहो खूब लोकप्रियता प्राप्त कयलक अछि।

कथा साहित्य (Fiction)क प्रसंग आचार्य रमानाथ झा अपन स्पष्ट मंतव्य दैत उपन्यास (Novel) आ कथा (गप्प) (Short Story)कें नीक जकां फरिछाबैत कहैत छथि- 'कथा साहित्य थिक मनुष्यक वास्तविक जीवनक काल्पनिक चित्रण। एहिमे मानव जीवनक आनुषंगिक कथा कल्पनाक रंगमे रंगिकें गद्यमे व्यक्त कयल जाइत अछि। तथापि विकासावस्थामे एहि दूहूक सत्ता भिन्न-भिन्न बूझल जाइत अछि। ई भेद केवल आकारहिटाक नहि अछि। यद्यपि से बड़का भेद अछिए, परन्तु दूहूक रूप ओ रंगहुमे भेद अछि। उपन्यासमे मानव जीवनक एक गोट व्यापक ओ समय सापेक्ष चित्र रहैत अछि। गप्पमे ओहि जीवनक एक गोट दृश्य मात्रक चित्र अंकित रहैत अछि। उपन्यासक घटना ओ परिस्थितिक चक्र जटिल एवं सघन होइत अछि। गप्पमे ओकरा सरल होयब उचित। पात्र आ चरित्रक संख्या गप्पमे थोड़ होयबाक चाही, उपन्यासमे जतबाधरि निर्वाह कए सकी ततेक गप्पक निर्माण होइत अछि। एक गोट प्रसंग लए तथा स्वभाविक कथानकक तन्तु मध्य ओहि कथाक लक्ष्य जेना लपेटल रहैत अछि। एक गोट छोट रचनामे वर्णन ओ चित्रण, ओ चित्रणक नैसर्गिक सामंजस्य आ से पुनि कथाक लक्ष्यकें स्पष्टत: प्रकट करैत हो, शिथिल व्यापारक योजनासं नहि भए सकैछ। ताहि हेतु चाही 'ध्वनिगर्भित पुष्ट ओ वेगवती' शैली। एहिमे कथानकक योजना तेहन हो जे कोनो भाव, विचार वा समस्या ध्वनित भ' उपस्थित हो। उपरसं लादल नहि बोध हो। नाटक जकां कथनोपकथनहि द्वारा मंतव्यक प्रकाशन, परिस्थितिक चित्रण अथवा विषयक अभिव्यंजना कएला उत्तर गद्यमे प्रभावशालिता भ' सकैत छैक। वस्तु वर्णन द्वारा ई सब कएने विस्तार अधिक भ' जाएत। कथनोपकथन द्वारा एहिमे एकगोट अद्‌भुत चमत्कार उत्पन्न होइत अछि, ओ पाठक स्वत: ओहिसं अपन निष्कर्ष बहार क' सकैत छथि। गप्पक हेतु घटनाक महत्त्व चरित्रक महत्वसं न्यून छैक। ओहि हेतु चाही शुद्ध ओ स्पष्ट अभिव्यक्ति प्रवृति। विस्तृत वर्णन शक्तिक एहि हेतु प्रयोजन नहि छैक, एहि हेतु आवश्यक छैक व्यंजनाक शक्ति ओ एहन रचनामे नैपुण्य-जाहिमे एकओ गोट वाक्य अनावश्यक वा व्यर्थ नहि हो। आधुनिक साहित्य शास्त्रमे सिद्धान्तित गप्प काव्यक जे कतिपय उपकरण एतए देखओल गेल अछि ताहिसं स्पष्ट भ' जाएत जे मूलत: एक होइतहु गप्प ओ 'उपन्यास' भिन्न वस्तु थिक।'[1]

मिथिला आ बंगालक सम्बंध बड़ पुरान अछि। कोलकाता पहिनहिंसं बंगालक आ बादमे भारतक राजधानी सेहो छल। नदी बहुल होयबाक कारणे मिथिलामे प्रतिवर्ष बाढ़िक प्रकोप होइतहिं छल। वर्षमे चारि माससं छओ मास धरि लोक बाढ़िक पानिसं गछारल रहैत छल, तँ ओकरा बाद प्रखर रौदक प्रकोपसं पीड़ित रहैत छल। प्रकृतिक एहि दोहरी मारिसं मिथिलाक भूख आ बेरोजगारीसं मारल लोक अपनासं सम्पर्क क्षेत्र 'पूर्व दिस' (बंगाल, कोलकाता

संपर्क : श्री रमा निवास, मानाराय टोल, पो. नरहन, जि.-समस्तीपुर पिन-848211
मो.: 8051788976, वाट्सएपः 09931695579, ईमेलः ramakantrama35@gmail.com

दिस) जाइत छल। एहि क्रममे जन मजदूर, कृषक कारिगरसं ल' क' पढ़ल-लिखल विद्वान् धरि सहभागी होइत छलाह। मैथिली आ बंगला भाषाक लिपिक साम्यक कारणे, मिथिलाक लोक ओहिठामक लोक संग शीघ्रे आत्मीयता स्थापित करबामे सक्षम भ' जाइत छलाह।

शनैः-शनै एहिठामक प्रवासी बुद्धिजीवी बंगला साहित्यसं प्रभावित भ' ओकर अध्येता भ' गेलाह। एहि क्रममे पहिने ओ अंग्रेजी भाषासं बंगला भाषामे अनुदित उपन्यास पढ़लनि। पछाति ओहिसं विशेष प्रभावित भ' बंगला भाषाक उपन्यासक मैथिली अनुवादो कयलनि।

अतः स्पष्ट अछि जे पूर्वोत्तर भाषा-साहित्यमे सबसं पहिने बंगला भाषा आ साहित्य पाश्चात्य साहित्यसं प्रभावित भेल छल। फलतः बंगलामे जे अंग्रेजीक 'नॉवेल'क अनुकूल रचना कयल गेल तकर नाम भूदेव मुखर्जी 'उपन्यास' रखलनि। भारतीय भाषा साहित्यमे सभसं पहिने बंगलामे 1825ई-मे उपन्यासक प्रकाशन भेल। श्री भवानीप्रसाद बंध्योपाध्याय प्रथम भारतीय भाषाक उपन्यास लेखक भेलाह आ हिनक प्रथम उपन्यासक नाम छल नवलबाबू विलास। हिन्दी भाषामे प्रथम उपन्यास एकर प्रायः आधा शताब्दीक अन्तरालक बाद 1882 ई-मे छपल। परीक्षा गुरू हिन्दीक प्रथम उपन्यास छल जकर लेखक छलाह लाला श्रीनिवास दास। एहि प्रकारक एक नवीन रीतिक गद्य रचनाकें पाठक लोकनि द्वारा आह्लादपूर्वक एत' स्वागत कयल गेल।

एहिठाम ई एकटा महत्वपूर्ण बात अछि जे मैथिलीमे कहिया आ कोन उपन्यास सर्वप्रथम लिखल गेल। अनेक वाद-विवादक बाद रामदेवझा पहिने मोहिनी-मोहन (1907-08)कें मैथिलीक प्रथम उपन्यास सिद्ध कयने छलाह। मुदा बादमे वैह (डा. रामदेवझा) 'सीमन्तिनी आख्यायिका' जे मिथिला मोदक नवम्बर-जनवरी 1906-07सं आरम्भ क' कय नबम्वर-फरवरी 1922-23 ई. धरिक अंकमे प्रायः सोलह वर्ष चारि मासक सुदीर्घ अवधिमे सम्पूर्णता प्राप्त कयने छल, कें मैथिलीक पहिल उपन्यास सिद्ध कयलनि अछि।

डॉ. जयकान्त मिश्रक पूर्व धारणा जे 'स्वतंत्र कृति कहएबा योग्य' तथा 'प्रथममे किछु वर्णन बड़ विलक्षण उतरल अछि'क आधारपर सीमंतिनी आख्यायिकाकें प्रथम औपन्यासिक कृति मानब समुचित प्रतीत होइत अछि। ई सीमन्तिनी आख्यायिका श्रीरामदेवझाक सम्पादनमे प्रकाशित अछि।

एहि प्रकार ई सिद्ध होइत अछि जे मैथिली उपन्यासक प्रादुर्भाव 1906-07ई.मे भेल छल। एकर प्रायः एक वर्षक पश्चात् 'मोहिनी-मोहन' दोसर एहन कृति अछि जे अपन मुखपृष्ठपर 'मिथिला भाषा उपन्यास' लिखने दोसर मौलिक मैथिली उपन्यास कहौलक।

एहि दूटा उपन्यासक अतिरिक्त बीसम शताब्दीक पहिल दशकक शेष अवधिमे कोनो आन उपन्यास दृष्टिगोचर नहि भ' रहल अछि। कहल तँ एत' धरि जाइत अछि जे 'बीसम शताब्दीक आरम्भिक तीन दशकमे मैथिलीमे औपन्यासिक गद्य साहित्यक स्थिति अत्यन्त दुर्बल ओ लेखक गणमे उपन्यास विषयक अवधारणा अत्यन्त अस्पष्ट छल।'[2]

एकर अभिप्राय ई अछि जे प्रथम दशकक पूर्वार्द्ध 1904-05मे लिखल सीमन्तिनीक 1906-07मे प्रकाशनसं जे एकटा नव प्रकारक कथा साहित्यक द्वारि खुजल छल, से प्रथम दशकक अन्त धरि तँ गति नहिए पकड़लक प्रत्युत् दोसर आ तेसरो दशकमे टुकदुम-टुकदुम क' कय कोनहुना आगां बढ़ैत रहल। एकर अतिरिक्त मैथिली उपन्यासक एहि प्रारम्भिक कालमे बंगलासं मैथिलीमे अनुदित रचना सभ सेहो प्रकाशित भेल छल। जाहिमे जीवछमिश्रक रामेश्वर उपन्यास (1915-16) बेश प्रसिद्ध छल। बहुत लोक एकरा मौलिक आ मैथिलीक प्रथम औपन्यासिक कृति धरि कहैत छलाह। शिवानन्द चौधरीक 'कपाल-कुंडला' (1918-21) ओ 'मृणमयी' (1926), काशीनाथ झाक 'राजपूत जीवनसंध्या' (1926) आदि ओहि कालक बंगला आ अंग्रेजीसं अनुदित प्रमुख उपन्यास अछि, जे मैथिली भाषाक पाठककें अपना दिस नीक जकां आकर्षित कयने छल। डॉ. जयकान्त मिश्र अपनहुं शब्दमे एहि बातक संपुष्टि कयलनि अछि-'विकासक अग्रिम चरणमे अंग्रेजी आ बंगला उपन्यास सभक अनुवाद अबैत अछि। एहिमे शिवानन्द चौधरीक 'कपाल-कुण्डलाक' अनुवाद बेश लोकप्रिय भेल छल।'[3]

मैथिली इतिहासविद स्वीकार कर' नहि चाहैत छथि जे बीसम शताब्दीक दोसर दशकमे अनेक मौलिक ओ सामाजिक उपन्यासक प्रकाशन भेल छल। ओ सभ तेसर दशकक अंतिम वर्षमे मैथिली उपन्यासक लेखनक चातुर्यसं प्रभावित बूझि पड़ैत छथि, जखन प्रायः प्रो. हरिमोहनझाक कन्यादानक क्रमशः प्रकाशनसं सम्पूर्ण मिथिले नहि मिथिलासं बाहरो चर्चित भ' पुष्कल यश अर्जित कयने छल। 'मौलिक उपन्यास, जकरा किछुओ सफल कहि सकैत छी, बीसम शताब्दीक तृतीय दशकमे आबि लिखल जाए लागल। एहि समय धरि मैथिलीक उपन्यासकार लोकनिकें एहि बातक बड़ थोड़ ज्ञान छलनि जे मैथिली कथा साहित्यमे वस्तुतः केहन विषय उपयुक्त होयत? हुनका लोकनिकें पूर्वमे धारणा मात्र छलनि जे मिथिलाक सामाजिक आ सांस्कृतिक जीवनमे व्यंग्य-विनोद आओर चरित्र-चित्रणक अवकाश छैक। 1930क लगभग आबि ओ एहि कलामे अपन कौशल देखाएब आरम्भ कयलनि।'[4]

प्रायः आधा दर्जन मौलिक सामाजिक उपन्यासक रचयिता जनार्दनझा 'जनसीदन'क कम-सँ-कम तीनटा उपन्यासक प्रकाशन निश्चित रूपसँ दोसर दशकमे भेल छल। ओ अछि 'सतीसर्वस्व' (1912), 'निर्दयी सासु' (1914) एवं 'शशिकला' (1915-16)। कहल जाइत अछि हिनक कलियुगी संन्यासी वा बाबा ढ़कोसलानन्द सेहो हास्य-व्यंग्य प्रधान उपन्यास छल, जकर प्रकाशन मिथिला मिहिरमे प्रायः दोसर दशकक अंत 1920मे भेल छल।

जनार्दनझा 'जनसीदन' मैथिली साहित्यक एकटा एहन रचनाकार भेलाह जे साहित्यकें, विशेषक' कथा-उपन्यास साहित्यकें समाजमे व्याप्त कुरीति-कुसंस्कारक परिष्कारक निमित्त कयलनि। ओ अपन रचना कौशलसं लेखक समुदायकें समाज सुधारक गुरुतर दायित्व दिस सेहो ध्यान आकृष्ट कयलनि। जनार्दनझा 'जनसीदन' आधुनिक मैथिली गद्य साहित्यक लोकरंजक स्वरूप ओ उपन्यास साहित्यक अधिष्ठाता मानल जाइत छथि। ओ अपन विविध उपन्यास रचना द्वारा साहित्यकें एकटा नवदिशा देलनि। साहित्यकें समाजक कुसंस्कार ओ

कुरीतिक परिहारक एकटा सुशक्त साधन ओ माध्यमक रूपमे उपयोग करबाक प्रेरणा लेखक समुदायकें प्रदान कयलनि।'[5]

डॉ. रामदेवझा जनार्दनझा 'जनसीदन'जी कें बीसम शताब्दीक दोसर दशकक एकटा सशक्त उपन्यासकारक रूपमे अनेक ठाम स्वीकार कयलनि अछि-'जर्नादनझाक समग्र रचनाकाल ओ अधिकांश प्रकाशन काल बीसम शताब्दीक दोसर आ तेसर दशक रहलनि अछि।'[6]

'बीसम शताब्दीक आरम्भिक तीन दशकमे जनार्दन झाक उपन्यास व्यक्तिरिक्त औपान्यासिक गद्य साहित्यक स्थिति अत्यन्त दुर्बल ओ लेखकगणमे उपन्यास विषयक अवधारणा अत्यन्त अस्पष्ट छल।'[7] एहू पंक्तिमे 'जनार्दनझाक उपन्यास व्यक्तिरिक्त' शब्द लिखिक' डॉ. झा हुनक उपन्यास लेखन-कला एवं तत्कालीन उपन्यास लेखनक प्रति अपन स्पष्ट अवधारणा, हुनक उपन्यास विषयक चिन्तन आ उत्कर्षक प्रति संतोष एवं आन-आन लेखकक प्रति असंतोष प्रकट कयलनि अछि।

एहि कालक अर्थात् दोसर, तेसर दशकमे मैथिली उपन्यास लिखबाक मूल उद्देश्यक प्रति अपन अवधारणा व्यक्त करैत इतिहासकार कहैत छथि- 'आरम्भमे उपन्यासक मुख्य प्रवृति छल उपदेशोन्मुखता। हमरा जनैत एहि प्रवृतिक प्रेरक छल तत्कालीन मैथिल वर्गमे व्याप्त सामाजिक कुरीति सभकें दूर करबाक हेतु मैथिल महासभाक आदर्श संकल्प, दशमुखी कार्यक्रम आओर देश भक्तिक आवाह्न।'[8]

वस्तुत: जनसीदनजीक दोसर-तेसर दशकमे प्रकाशित तीनटा उपन्यास सतीसर्वस्व, शशिकला आ कलियुगी संन्यासी तथा पहिल दुनू सेहो विभिन्न सामाजिक समस्या आ कुसंस्कारकें उजागरक' ओकर समाधान दिस लोकक ध्यान आकर्षित कयलक तँ तेसर उपन्यास प्राय: हास्य-व्यंग्य प्रधान अछि। सती सर्वस्वमे संयुक्त परिवारमे स्त्रीगणक मध्य आपसी कलह, नोकरिहाराक प्रवासमे कष्टमय जीवन एवं स्त्रीकें कर्त्तव्यक वर्णन अछि। शशिकलामे तत्कालीन देशी नरेश किंवा राजा महाराजाक दरबारमे सेवानिवृत्ति कयनिहार प्रतिष्ठित पदपर कार्यरत लोकक असुविधा एवं ओकर परिवारक कष्टमय जीवनक चित्रण कयल गेल अछि। जत' निर्दयी सासुमे शिक्षिता पुतोहूसं सासुक निर्दय व्यवहार आदि देखाक' ओकर सुधारक अपेक्षा कयल गेल अछि, ओत' संतान अछैत पत्नीक मुइलापर दोसर विवाह, वृद्ध एवं अनमेल विवाह आदिक विरोध पुनर्विवाहमे भेल अछि जे विगत शताब्दीक दोसर-तेसर दशकमे मिथिलाक एकटा प्रमुख एवं ज्वलंत समस्या छल। 'तत्कालिक 'समाजक अध:पतन ओ दुर्दशाक मुख्य कारण रहल अछि अशिक्षा, तें उपन्यासकार शिक्षा-प्रसार, ताहूमे अंग्रेजी (आधुनिक) शिक्षाकें प्रचारकें अत्यधिक महत्व दैत छथि। ओ नारी जातिक सामाजिक उत्पीड़नक प्रति अत्यधिक संवेदनशील छथि। विभिन्न प्रकारक परम्परासं चल अबैत कुरीति, कुप्रथा, सामाजिक अन्यायक प्रति लेखकक विचारधाराक अभिव्यंजना उपन्यासक घटनाक माध्यमसं भेल अछि।'[9]

तेसरे दशक जकां चारिमो दशकमे अर्थात् 1940ई. धरि बहुत बेशी उपन्यासक प्रकाशन नहि भेल। मुदा जतेक उपन्यास छपल ओहिमे अधिकांश उपन्यास चिरस्मरणीय अछि। आधा दर्जनसं अधिक उपन्यासकार अपन-अपन औपन्यासिक कृति ल' क' एहि दशककें उपन्यासक क्षेत्रमे मीलक पाथर गाड़लनि। जाहिमे प्रो. हरिमोहनझाक नाम अन्यतम अछि। यदि एहि अवधिमे आन कोनो उपन्यास नहियो छपैत तैयो हरिमोहनझाक 'कन्यादान' एहि दशककें अपना नाम ओहिना लिखैने रहैत जेना किछु आन उपन्यासक अछैतो ओ उत्कर्षक उच्चासनपर आसीन अछि।

डॉ. जयकांतमिश्र एहि प्रकाशनकें मैथिली उपन्यासक नव मोड़, लाभकर व्यवसाय, कलात्मकता तथा विद्यापतिक गीत काव्य एवं उमापतिक दृश्य काव्यक धरातलक स्पर्श करब कहैत छथि- 'चारिम दशकमे आबि मैथिली उपन्यास नव मोड़ धएलक जखन जनार्दनझाक बालक प्रो. हरिमोहनझा उपन्यासक क्षेत्रमे पदार्पण कयलनि। ई उपन्यास लेखनकें एक लाभकर व्यवसाय बनओलनि आओर एकरा कलात्मकताक ओहि ऊंचाइ पर पहुंचओलनि जतए मैथिलीमे कोनो कृति ताधरि नहि पहुंचल छल। हरिमोहनझा मैथिली उपन्यासकें अपन आरम्भिक अवस्थाहिंमे, ओहि साहित्यक धरातलपर लए गेलाह जतए विद्यापति गीत काव्यकें आओर उमापति दृश्य काव्यकें पहुंचओने छलाह।'[10]

कन्यादानक ललितगर ठेठ भाषा जं खंजन चिड़ै जकां फुदिक रहल अछि तं हास्य-व्यंग्यक फुहारसं परिपूर्ण तात्कालिक समाजक दुर्गुणक चित्रण असावधान लोककें चुट्टी काटब जकां बिसबिसा दैत अछि। एहि सभक संग-संग रूढ़िग्रस्त मैथिल मानसिकताकें सुधारक निमित्त जे शिक्षाक बीहनि अछि ओ निश्चित रूपसं निद्रित-तन्द्रित मिथिलाक लोकक शिथिलता कें दूर करबामे समर्थ भेल। एकर महत्ता एहि बातमे निहित नहि अछि, जे एहिमे लेखक समाज-सुधारक, मैथिल महिलाकें शिक्षित करबाक संदेश देलनि अछि, जाहिपर लेखक स्वयं गर्व करैत छथि और परम्परावादी क्रुद्ध होइत छथि-अपितु एहि बातमे निहित अछि जे एहिमे लेखक अपन प्रखर प्रतिभा आओर मर्मबेधी दृष्टिसं सामाजिक विडम्बनाक विलक्षण चित्र सामने राखि देलनि अछि। हिनक हास-परिहास तँ व्यापक अछि किन्तु हिनक सूक्ष्म प्रेक्षण विलक्षण अछि।'[11]

मात्र उपन्यासे नहि सम्पूर्ण मैथिली साहित्यकें लोकप्रिय बनेबामे हरिमोहनझाक कन्यादानक बड़ महत्त्वपूर्ण योगदान अछि। ई मैथिलीक एहन प्रथम उन्यासकार छथि जे सामाजिक परिवेशमे मनोरंजनक सामग्रीक संग सशक्त कथानकक निर्माण सेहो कयने छथि। हिनक वर्णन सजीव, सरस, सरल, रोचक एवं मनोरंजक अछि। अपन व्यंग्यक प्रसंग ओ स्वयं कहने छथि जे 'चीनीक शर्बतमे मरीचक बुकनी छींटल अछि।' कन्यादान उपन्यासक समर्पणोमे ओ अपन मौलिक व्यंग्यसं परहेज नहि करैत छथि-'जे समाज कन्याकें जड़ पदार्थवत् दानकए देबामे कुण्ठित नहि होइत अछि, जाहि समाजकें दाम्पत्य जीवनक गाड़ीमे सरकसिया घोड़ाक संग निरीह बाछीकें जोतैत कनेको ममता नहि लगैत छन्हि, ताहि समाजक महारथी लोकनि कर कुलिशमे ई पुस्तक सविनय सानुरोध सभय समर्पित।'[12]

भाषापर उच्च अधिकार आ निर्दुष्ट हास्य-व्यंग्यक प्रयोग कयनिहार हरिमोहन झा एकमेव रचनाकार छथि, एहि बातकें आम जनता तँ निर्विवाद रूपसं स्वीकार

करिते अछि, इतिहासकारो एहि बातकें अपना ढंगसं स्वीकार कयलनि अछि। हरिमोहन बाबू जखन परम्परा प्रतिष्ठित आचार विचारमे सुधार आनबाक, वा ओकर तर्कमूलक समीक्षा करबाक प्रयाससं विरत रहि कोनो जीवंत चरित्रकें ओकर असाधारण वैयक्तिक अभिलक्षणक संग ठाढ़ करैत छथि आ ताहिसं निर्दुष्ट-हास्यक सृष्टि करैत छथि, तखन हुनकर परतर केओ आन उपन्यासकार नहि कए सकैत छथि। भाषापर हुनक अपन अधिकार छनि आ हुनक सफलतामे तकर अनेक योगदान अछि।[13]

चारिम दशकमे आन जे सभ उपन्यास छपल अछि ताहिमे प्रो. कांचीनाथझा 'किरण'क चन्द्रग्रहण, एकटा सामाजिक उपन्यास अछि। चन्द्रग्रहणक अवसरपर सिमरियाघाट मेलामे मुसलमान गुण्डा द्वारा शीलहरण हेतु मैथिल युवतीपर आक्रमण एवं स्वयं सेवकदल द्वारा ओकर बचाव एवं रक्षाक उत्तम वर्णन भेल अछि। अंधविश्वास दु:स्थिति, दुर्गति आ अध:पतनक कारण होइत अछि-ई एहि उपन्याससं शिक्षा भेटैत अछि। लक्ष्मीपतिसिंहक उपन्यास चामुण डा रूपमे एक नीक ऐतिहासिक उपन्यास पाठकक समक्ष आयल।[14] एहि मध्य कथाक संगठन, चरित्र-चित्रण एवं आत्म-मर्यादाक रक्षाक महत्वक फल प्रतिपादन करबाक दृष्टिसं विशेष उल्लेखनीय अछि।'[15] एहिमे तत्कालीन भारतीय नारी अपन सतीत्वक रक्षा हेतु प्राण उत्सर्ग करबाक हेतु सदा तत्पर रहैत छलीह-यैह देखाओल गेल अछि। मिथिलाक ललना जं दीन-हीन शोषितक लेल कल्याणकारी भवानी अछि तँ विधर्मीसं अपन सतीत्वक रक्षाक निमित्त ओ चामुण्डा भ' जाइत अछि। उपन्यासकार अपन गामेक ऐतिहासिक कथाकें औपन्यासिक स्वरूप देबामे पूर्ण सक्षम भेल छथि।

पांचम दशकमे चारिम दशकक अपेक्षा दोबरसं अधिक उपन्यासक प्रकाशन भेल। ई उपन्यास साहित्यक प्रगतिक शुभ संकेत छल। समाजिक शिक्षाक बढ़ैत प्रचार-प्रसार, मैथिली साहित्य केर पाठकक जागरूकता आ बढ़ैत मैथिली पत्र-पत्रिकाक संख्याक कारण ई प्रगति भेल। 1941सं 1950 धरि जे उपन्यास सभ प्रकाशित भेल ओहिमे हरिमोहनझाक द्विरागमन, योगानन्दझाक भलमानुष, जनसीदनजीक द्विरागमन रहस्य, उपेन्द्रझा 'व्यास'क कुमार, बैद्यनाथमिश्र 'यात्री'क पारो, शैलेन्द्रमोहनझाक प्रतिभा इत्यादि बेश चर्चित एवं उल्लेखनीय कृति सभ अछि। एदातिरिक्त गंगापतिसिंहक सुशीला, अवधनारायणझाक वनमानुष, शारदानन्दझाक जयवार, चतुराननमिश्रक कला, चौधरी कौशलकिशोरठाकुरक विकास एवं इन्द्रनारायणक लालभौजी सेहो चारिम दशकक विभिन्न वर्षमे प्रकाशित भेल छल।

एहि अवधिमे प्रो. हरिमोहनझा अपन पूर्व प्रकाशित सुप्रसिद्ध कृति कन्यादानक उत्तरार्द्ध द्विरागमन नामसं प्रकाशित क' कन्यादानमे उठाओल गेल समस्या सभक समाधान करबाक प्रयत्न कयलनि। 'कन्यादानक उत्तरकाण्ड स्वरूप उपन्यास द्विरागमन ओतेक सफल नहि भेल जतेक पहिल भेल छल, कारण जे ओहिमे ई वैलक्षण्य नहि अछि।'[16]

वैद्यनाथमिश्र 'यात्री' जी पारो उपन्यासमे भाय-बहिनक मध्य नैसर्गिक स्नेहक सरिता बहेबामे समर्थ अवश्य भेलाह अछि, मुदा आमजनमे एहि स्नेहक कल्पित चित्रांकन समाजक दृष्टि-दोष किंवा कुदृष्टिसं एकर कौचर्य सेहो भेल। एहि अवधिक सभसं अधिक चर्चित एहि उपन्यासक प्रभावसं यात्रीजी एकटा प्रगतिशील उपन्यासकारक रूपमे सुस्थापित भ' गेलाह।

अग्रिम दशक (1941-50)मे अनेक उपन्यासकार भेलाह। एहिमे हमरा जनैत श्री यात्रीक स्थान सभसं ऊंच अछि। एहि प्रगतिशील उपन्यासकारक प्रति अनैतिकताक आरोप लगएबामे कोनो विशेष औचित्य नहि देखि पड़ैत अछि। एहिमे निगूढ़ अभिव्यक्ति आ शालीनता छैक, सजीव शैली छैक आ पारिवारिक सूत्रमे बन्हाएल हृदयक स्पन्दन छैक, आओर ई सभ आइओ ग्रामीण मिथिलाक उच्चवर्गमे ओहिना देखल जा सकैत अछि।

योगानन्दझाक भलमानुस पुरुषक विवाह जयवारक कन्यासं करा क' रूढि-भंजनक काज करबौलनि अवश्य, मुदा पुन: रूढ़िवादीक प्रभावमे आबि वरक दोसर विवाह करा जयवार कन्या कें चिंताक चितामे भस्म होयबासं ओ रोकि नहि सकलाह अछि।'[17] जयकान्तमिश्र सेहो भलमानुसकें कथानकसं प्रभावित छथि।'[18]

पांचमे दशक जकां छठम दशकमे सेहो नव-पुरान प्राय: एक दर्जन लेखकक उपन्यास प्रकाशित भेल। यद्यपि संख्यात्मक दृष्टिसं एहि अवधिमे उपन्यास प्रकाशनक गति ठमकल जकां बूझि पड़ैत अछि मुदा विषय-वस्तु कथानक आ विचार-धाराक दृष्टिकोणसं निश्चित रूपसं उपन्यास साहित्य प्रगति दिस अग्रसर छल। एहि दशकमे पछिला दशकक सुप्रतिष्ठित यात्रीजी नवतुरिया, शैलेन्द्र मोहन झा मधुश्रावणी, लक्ष्मीपति सिंह सांझ परात ल' अयलाह तँ अनेक नव लेखक नव-नव भावभूमिपर अपन रचना ल' मैथिली भाषा-साहित्यक श्रृंगार करबा लेल तैयार भेलाह। एहिमे मणिपद्मजी अनलपथपर आरूढ़ भेलाह तँ राजकमल चौधरी आदि कथा कहैत अवतरित भेलाह। सोमदेव सेहो अपन पहिल उपन्यास चानोदाईक माध्यमसं उपन्यासकार मंडलमे प्रवेश कयलनि। मैथिली साहित्यमे हास्य-व्यंग्यक कवि लेखकक रूपमे सुप्रतिष्ठित पं. चन्द्रनाथमिश्र 'अमर'जी वीरकन्या उपन्यास ल' क' एहू क्षेत्रमे अपन धाख जमौलनि। बदरी नारायणदासक चन्द्रकलाकें गणेशचन्द्रझा अपन रत्नाकरसं सुशोभित कयलनि त' श्यामसुन्दरझा दाम्पत्य सौरभक सुवाससं मैथिली उपन्यास सहित्यकें सुरभित कयलनि। एहि दशकमे एक दिस जं छत्रधारीलालदास आन्दोलन चलेबाक धमकी देलनि, तँ दोसर दिस तारानन्दकंठ दुर्वाक्षत विकीर्णक' छठम दशकक प्रति शुभकामना व्यक्त कयलनि। एकसं डेढ़ दर्जन उपन्यास साहित्य छठम दशकमे सेहो प्रकाशित भेल।

डॉ. जयकान्तमिश्र राजकमल चौधरी कें एकटा महान् साहित्यकारक कोटिमे परिगणित करैत हिनका काम वासनाक नि:संकोच आ स्वच्छंद विवेचनक पक्षधर मानैत कहैत छथि-'ई महान् साहित्यकारक कोटिमे परिगणित छथि। ई काम वासनाक विषयमे नि:संकोच स्वच्छन्द विवेचनक पक्षधर छथि।'[19] 'मुदा हिनक उपन्यास आदिकथाकें ओ एकटा असफल, अनुदात्त एवं महिमाहीन कहलनि अछि- 'आदिकथा (1958)मे नायिकाक चरित्र तँ स्पष्ट रूपमे व्यभिचारिणी आ कामुकी राखल गेल अछि। ओकरासं कोनो काज नहि लए सकलाह अछि आ ने ई नायिका स्वयं कोनो उदात्तता वा महिमा पाबि सकल अछि।'[20]

मुदा डॉ. दुर्गानाथझा 'श्रीश'क विचार

एहिसं सर्वथा भिन्न छनि। ओ आदिकथाकें यात्रीजीक उपन्यास पारोक परम्परामे लिखल गेल मानैत छथि-'आदिकथाक रचना राजकमलजी यात्रीक पारोक परम्परामे कए मामि (सुशीला) ओ भागिन (देवकांत) क अनुचित प्रेम कथाक वर्णन कयल। यात्रीजीक अपेक्षा एहिमे अनुचित प्रेमक उत्तेजक रूप प्रस्तुत कयल गेलैक, मुख्यत: ओहिठाम जखन देवकान्त सुशीला दिस वासनाक ज्वारमे बढ़ैत अछि, परंच अपनाकें रोकि लैत अछि। वस्तुत: एहि उपन्यासक महत्व अछि रचना प्रणालीक दृष्टिएं। ई कथा प्रधान उपन्यास नहि थिक। एकर उद्देश्य अछि अमर्यादित सत्यक मनोविश्लेषणात्मक उद्घाटन करब। एहि मध्य कथाक विकास हेतु चरित्र निर्माण तँ अवश्य भेल अछि। मुदा कथा धरि अछि एकर निर्जीव।'[21]

नवतुरिया (1954)मे यात्रीजी बाल-वृद्ध विवाह तथा नवतुरिया लोकनिक नवजागरणक चित्रांकन कयने छथि। 60 वर्षक वृद्ध एकटा नवयुवतीसं विवाह कर' चाहैत छथि। समाजक लोक एकर विरोध करैत अछि। नवयुवक सभक प्रयासें ओकर विवाह एक नवयुवके संग करा देल जाइत अछि। एहि प्रकार यात्रीजी समस्या उत्पन्न क' ओकर समाधान सेहो एहिमे प्रस्तुत कयने छथि। जे हुनक 'नवतुरिया आबहु आगां' काव्य व्यंजनाक अनुकूले अछि। एहिमे छठम दशकसं पूर्वक मिथिलाक प्रमुख समस्या अनमेल विवाहकें नवयुगक नवजागरण द्वारा समाधान दर्शाओल गेल अछि। पुरुष एवं स्त्री पात्रकें जाहि स्वाभाविक यथार्थताक संग यात्रीजी चित्रित कयने छथि से हुनक सामाजिक जीवनक संग सूक्ष्म परिचयक द्योतक थिक। मुदा एहि यथार्थ आकलन-अंकनक सफलताक मूल साधन भेल अछि हिनक भाषा-शैली। ई लोकक स्वाभाविक भाषा लिखबामे सिद्धहस्त छथि। हिनक वाग्धारा ओ लोकोक्तिक प्रयोग केहन सटीक होइत अछि तकर हिनक प्रत्येक गद्य रचना साक्षी थिक। मुदा एहि उपन्यासमे तँ से चरम सीमापर पहुंचल अछि। हिनक नवतुरिया व्यंग्य-वक्रोक्ति, हास-परिहास, उपमा-उत्प्रेक्षा सब दृष्टिएं आकर्षक अछि।'[22]

'पहिलुक विवाहक विविध रूप देखबामे अबैत अछि। अनमेल विवाह, बाल-विवाह, बाल-विधवा, असंतुलित वैवाहिक विधि-व्यवहार, बिकौआ प्रथाक टूटैत स्वरूप आर अन्य रूढ़िवादिता आदिसं ग्रसित समाजक चित्र सभ कटाक्षपूर्ण ढंगसं प्रस्तुत कयल गेल अछि। श्रीयात्रीक नवतुरिया एहि दिशामे सबसं उत्तम ओ जागरूक उपन्यास अछि। निम्नस्तरीय गमार समाज केर मन:स्थितिक प्रसंग बहुतरास विशिष्ट चित्र नवतूरक अगुआ नेता सभ द्वारा प्रस्तुत कएल गेल अछि।'[23]

श्री अमरजीक उपन्यास वीरकन्यामे नवयुवती द्वारा साहस पूर्वक गुण्डा-तत्त्वसं संघर्ष करबाक कथा अछि जे मैथिल समाजक लेल एकटा अजगुतसं कम नहि अछि। श्री शैलेन्द्र मोहनझाक मधु श्रावणी एकटा रोमांटिक उपन्यास थिक। भैरबबाबू एकटा बूढ़-विधुरक संग अपन पुत्री नलिनीक विवाह कर' चाहैत छथि। परन्तु हुनक पत्नी बूढक संग अपन बेटीक विवाह करबासं नठि जाइत छथि।

सोमदेव चानोदाइमे अशिक्षाक कारणे उत्पन्न दूषित सामाजिक वस्तुस्थितिक चित्र प्रस्तुत कयने छथि। एहिमे समस्या उठाओल गेल अछि जे की नारी पुरुषक भोग्या ओ प्रदर्शनक साधन मात्र थिकीह? एहि प्रश्नक उत्तर देबाक चेष्टा भेल अछि। व्यक्तिपरक एहि उपन्यासमे उपन्यासकार नाटकीय कथनोपकथा सँ युक्त मनोविश्लेषणात्मक चित्रण प्रणालीक अनुशरण कयल अछि।[24] अपन रोचक उपन्यास चानोदाइ (1959) मे ओही (आदिम) समस्याकें उठएबाक चेष्टा कयलनि अछि।[25] श्रीचन्द्रनाथमिश्र 'अमर'क वीर कन्या (1950), बदरी नारायणदासक चन्द्रकला (1951) तथा बहुतरास आओरो उपन्यास रोचक अछि जे मात्र मनोरंजनार्थ लिखल गेल सस्तौआ उपन्याससं अनेक दृष्टिएं नीक कोटिक अछि। एहिमे प्रगाढ़ अनुभूति-विविधता आओर रोचकता भरल अछि, जाहिसं मैथिली उपन्यास खूब लोकप्रिय भेल।[26] दुर्वाक्षत (1958), ओ रत्नहार (1957) साधारण उपन्यास थिक। छत्रधारीलालदासक आन्दोलन (1958)मे नवयुगीन जागरणक नीक चित्रण भेल अछि।[27] मणिपद्मक विद्यापति आ मायानन्द मिश्रक बिहाड़ि पात आ पाथर दूनू पांचम दशकक अन्तिम वर्ष 1960मे प्रकाशित भेल छल। विद्यापति जत' ऐतिहासिक कथानकपर आधारित रचना अछि, ओतहि काल्पनिक कथानकक रथपर आरूढ़ बिहाड़ि पात आ पाथर एकटा सामाजिक उपन्यास अछि। अनमेल विवाहक समस्या मिथिलाक एकटा प्राचीन समस्या अछि। मैथिल समाजमे बाल एवं वृद्ध, अशिक्षित एवं शिक्षित एवं बेटी-बेचबा एवं कुलीनता जन्य अनमेल विवाहक कुप्रथा आम छलैक। 'बुभुक्षित: किं न करोति पापम्।' एहि मध्य उपन्यासकार दुर्भाग्यसं आक्रान्त विधवा युवतीक मर्म-स्पर्शी मनोविश्लेषणात्मक चित्रण कयने छथि। एहिमे घटनाक बाहुल्य नहि, चारित्रिक अन्तर्द्वन्द्वक सूक्ष्मता अछि। कखनहुं-कखनहुं रोचकता मनोविश्लेषणक त'रमे दबा तँ अवश्य जाइत अछि, मुदा से रहैत धरि अछि आद्यान्त।'[28]

परिगणन आ परिगुणन दुनू दृष्टिएं सातम दशककें मैथिली उपन्यास साहित्यक स्वर्ण- युग किंवा दशक कहल जाय तँ कोनो अत्युक्ति नहि होयत। 1961 सं 1970 धरि प्राय: साढे तीन दर्जन उपन्यास प्रकाशित भेल जे पछिला दुनू दशकसं तीन गुणा अधिक अछि। आ से केवल संख्येक दृष्टिएसं नहि प्रत्युत् एहि दशकमे अनेक उपन्यास अखन धरिक उपन्यास साहित्यमे मीलक पाथर सिद्ध भेल अछि। एहि अवधिमे अनेक प्राचीन लेखक अपन नव उपन्याससं एहि अवधिकें ऐतिहासिक बनेबामे अपन योगदान देलनि तँ अनेक नव-नव प्रतिभाशाली लेखक उपन्यास लेखन दिस प्रवृत्त भेलाह।

एकटा आर महत्वपूर्ण कारण अछि। 1960 ई. सं साप्ताहिक मिथिला मिहिरक पटनासं पुन: प्रकाशन। यद्यपि 1908सं लगातार प्रकाशित होइत मिहिर 1954ई. धरि प्रकाशित भ' क' बन्न भ' गेल छल। मात्र छओ वर्षक बाद नव कलेवरमे एकर पुन: प्रकाशन मैथिली साहित्यक इतिहासक उत्कर्षक एकटा प्रमुख कारक भेल। पहिने ई दरभंगासं प्रकाशित होइत छल, मुदा 1960ई.सं ई बिहारक राजधानी पटनासं प्रकाशित भेल। नव कलेवर, नव वातावरण, नव-नव संपादक आ देश एवं राज्यमे प्रगतिशील विचार-धाराक प्रभावसं मिहिर अपनाकें फराक नहि राखि सकल। सभ जाति, वर्ग एवं सम्पूर्ण समाजक लोक

सभ, जे मैथिली भाषा-भाषी छथि मैथिल संज्ञा आ हुनक भाषा मैथिलीक पुरजोर आंदोलन एहि अवधिमे यत्र-तत्र सर्वत्र चलल जकर अप्रत्यक्ष प्रभाव आ सहयोग मिहिरक छलैक।

ओना पूरनो मिहिर मे धारावाहिक रूपमे उपन्यास छपैत छल, परन्तु नव रंग-रूपक मिहिर धरावाहिक उपन्यास प्रकाशनकें किछु अधिके महत्व देलक। पहिने जत' मैथिल ब्राह्मण, श्रोत्रिय आ कायस्थेटा मैथिली लेखक मंडलमे रहैत छलाह, ओतहि आब सब जाति, वर्गक लोक मैथिली लेखनसं जुड़लाह। अध्ययन-अध्यापनमे मैथिलीक क्षेत्र विस्तारसं सेहो एहिमे आशातीत सफलता भेंटलैक। यैह कारण अछि जे मैथिली उपन्यास साहित्यमे 1961 सं 1970 धरि सर्वाधिक साढे तीन दर्जनसं अधिक उपन्यास प्रकाशित भेल।

मिहिर मिथिलाक जन-जागरण तथा मैथिली साहित्यक संवर्द्धनक सदैव प्रधान वाहन रहलैक। 1960 पश्चात् पटनासं प्रकाशित मिहिर द्वारा प्रयोगशील आधुनिक साहित्यकें विकासक माध्यम भेटलैक, विशेषत: कथा तथा नारी विमर्श एवं मनोरंजनक साहित्य निर्माणमे ई अपन महत्वपूर्ण योगदान देलक। पटनासँ.... साप्ताहिक मिथिला मिहिरसं आधुनिक ओ नवीन रीतिक साहित्यक नव निर्माण ओ अनेकानेक प्रतिभाशाली साहित्यकारक उदय भेल।[29] सर्वेकत्वेन ई वर्तमान (बीसम) शताब्दीमे समस्त मिथिलाकें अपन ज्योतिएं जगबैत रहल अछि।[30]

सातम दशकमे प्रकाशित मैथिली उपन्यासमे पूर्व प्रतिष्ठित उपन्यासकार मणिपद्मक अर्द्धनारीश्वर (1966), कोब्रागर्ल (1968), राजा सलहेश (1969), कनकी एवं लोरिक विजय (1970) पांचटा महत्वपूर्ण उपन्यास अछि। यात्रीजीक हिन्दीमे पहिने प्रकाशित बलचनमा 1967 ई.मे अपन मूल लेखन-भाषा मैथिलीमे छपल। पं. चन्द्रनाथमिश्र 'अमर'क विदागरी 1963मे एवं राजकमल चौधरीक आंदोलनक प्रकाशन 1968मे भेल। उपेन्द्रझा 'व्यास'क दू पत्र 1967 मे छपल। प्रभासकुमार चौधरीक अभिशप्त (1970), विद्यानाथझा 'विदित'क जोड़ल आखर: पसरल भाव (1964) ओ (1968)मे, रामदेव झाक अंगरेजीफूलक चिट्ठी एवं बहिनाक विरोग (1962), रामजोड़ी कागतक पांखिपर (1963)मे प्रकाशित भेल। हिनके एकटा बाल उपन्यास इजोतीरानी 1967मे इलाहाबादक बटुकमे प्रकाशित भेल। सुधांशु 'शेखर' चौधरीक तर पट्टा: उपर पट्टा (1961), दयानन्द मल्लिक उर्फ जयवल्लभमल्लिक केर सोनदाइक सोहाग (1963), धीरेश्वरझा 'धीरेन्द्र'क भोरूकवा (1964), ललितक पृथ्वीपुत्र (1965), श्यामानन्द झाक बिनु मायक बेटी (1967), रूपकान्त ठाकुरक नहलापर दहला (1967), रामचन्द्र चौधरीक बन्दनी बधू (1968), श्यामानन्दझाक विदेसरा (1968), शारदाचरणझाक आदर्श विवाह (1970), गौरीमिश्रक चिनगी (1970) तथा एकटा मुसमान लेखक शौकतखलीलक अर्धनारी (1970)ई.मे वैदेहीमे छपल। एहि अवधिक अधिकांश उपन्यास पटनाक मिथिला मिहरमे धारावाहिक रूपमे प्रकाशित भेल छल। बादमे किछु पुस्तकाकार छपल आ एकैसम शताब्दी धरि छपि रहल अछि।

एकटा घ्यान देबा योग्य बात अछि जे एहि दशक 1965 ई.मे भारत सरकारक स्वशासी संस्था साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली, मैथिली भाषाकें एकटा स्वतंत्र एवं साहित्यिक भाषाक रूपमे मान्यता देलक। एहि दशकक शेष छओ वर्षमे मैथिली भाषाक विभिन्न विधाक पुस्तककें सेहो आन-आन भाषा जकां साहित्य अकादेमी पुरस्कारसं सम्मानित कयल गेलैक, जाहिमे उपन्यास विधाक पुस्तक उपेन्द्रझा 'व्यास'क दू पत्र 1969मे पहिल वेर पुरस्कृत भेल। कविता, कथा, उपन्यास, इतिहास, आलोचना आदिक अपेक्षा मात्र छओ वर्षमे उपन्यासोक पुरस्कृत होयब अवश्य एहि विधाक समृद्धि एवं सुरूचिपूर्ण लेखनक प्रमाण कहल जा सकैछ।

एहि दशकक सभसं चर्चित उपन्यासकार भेलाह ब्रजकिशोर वर्मा 'मणिपद्म'। एहि दस वर्षक अवधिमे हिनक पांच-पांचटा उपन्यास प्रकाशित भ' एकटा मानक स्थापित कयलक। डॉ. वर्मा सोझे वाग्भंगीक चासनी दैत विलक्षण गप्पमे लोरिकक वीरताक बखान कयलनि अछि। लगैत अछि जे हमरा लोकनि लोरिक युगमे पहुंचि गेल होइ। आओर पाठक एहिमे प्रत्येक वस्तु प्राचीन कालक वीरताक तर्जपर देखैत छथि। हिनक सफलताक मूल-तत्त्व अछि हिनक दृष्टिक गहनता एवं अन्तर्वेधकता।[31]

हिनक अधिकतर उपन्यास लोकगाथा पर आधारित अछि, जाहिमे समय-समयपर समाजक कमजोर वर्गक नेतृत्व क्षमता, वीरता, सहयोग भावना आ सर्वत: सामाजिक उत्कर्ष हेतु सर्वस्व अर्पणक उल्लेख अछि। उपन्यासमे जीवन्त गद्य-शैली हेतु प्रसिद्ध उपन्यासकार लोकगाथामे चित्रित तत्कालीन सवर्णेतर समाजक मार्मिक चित्र प्रस्तुत कयल अछि।[32]

एहि दशकक बहुचर्चित उपन्यासमे अछि ललितक पृथ्वीपुत्र, धीरेन्द्रक भोरूकवा तथा कादो आ कोयला, मायानन्द मिश्रक खोंता आ चिड़ै। हिनक (धीरेन्द्रक) भोरूकवा (1964) ग्रामीण निम्नवर्गक स्वर्ण-प्रभातकें झलकबैत अछि तँ कोयला आ कादो (69-70)मे नगरवासी दलित निम्नवर्गक जीवनमे उद्वेगक मार्ग देखबैत अछि।[33] भोरूकवामे ग्रामीण खेतिहर मजदूरक दयनीय स्थितिक चित्रणक संग-संग युवक वर्गमे दलित पछड़लक प्रति आत्मीयताक भावनाक दिग्दर्शन कराओल गेल अछि। भोरूकवामे शोषित किसानक दयनीय अवस्थाक यथार्थ चित्रण भेल अछि जे युग-युगसं बाबू भैया द्वारा दलित होइत आबि रहल अछि। धीरेन्द्रजी एहि समस्याक समाधान बाबू भैयाक बदलैत मनोवृतिक चित्रांकन करैत कयने छथि। एहिसं ग्राम्य वातावरण मे नव जागरण उपस्थित भेल अछि। नव आशा आलोकक भोरूकवा उदय भेल अछि।[34]

डॉ. दुर्गानाथझा 'श्रीश', एहि-तीनू चारू उपन्यासमे स्वतंत्रताक बाद देशमे भेल नव-जागरण, अधिकार प्राप्तिक अभिलाषा एवं स्थानीय भूपति सभक प्रति दबल आक्रोशक अभिव्यक्तिक संगठित रूपमे प्रतिकार करब कहैत छथि, जे भोरूकवा, पृथ्वीपुत्र ओ खोंता आ चिड़ै निम्नवर्गीय ग्राम्य जीवनपर आधारित एके उपन्यासक तीन अध्यायक समान परिलक्षित होइत अछि, जकर रचनाक नेतृत्व धीरेश्वरजी कए उपन्यासक इतिहासमे एक नवीन अध्यायक सृष्टि करने छथि। [35]

एहि कथाधाराक प्रवाहमे दयानन्द मल्लिक, प्रसिद्ध जयवल्लभ मल्लिकक सोनदाइक सोहाग (1963) तथा

विद्यानाथझा 'विदित'क जोड़ल आखर : पसरल भाव सेहो नीक प्रगति अनलक। जहिना हरिमोहनझाक 'पांच पत्र'कें हुनक श्रेष्ठतम एवं सभसं गम्भीर कथा मानल जाइत अछि, तहिना ओकर बाद रामदेवझाक पत्रात्मक शैलीमे लिखल ई तीनू उपन्यास अपन एकटा विशिष्ट स्थान रखैत अछि, जकर पाठकीय औत्सुक्य मिथिला मिहिर'कें सुप्रतिष्ठित करबामे महत्त्वपूर्ण भूमिकाक निर्वहन कयने छल। एहि क्रमक दयानन्द मल्लिक एवं विदितजीक रचनाकें सेहो मूल्यांकन कयल जा सकैछ।

1967ई.मे प्रकाशित दूध-फूल उपन्यासक लेखक छथि रमानन्द रेणु। एहि उपन्यासक महानता ई अछि, जे एहिमे काम वासनाक बलिदान मूलाधार बनाओल गेल अछि। जीवनकें कसिक' पकड़ब आ स्वाभाविक रूपसं औत्सुक्य सृष्टि करब वास्तवमे वर्तमान मैथिली उपन्यासक नवीन आ स्वस्थ उपलब्धि थिक।[35]

रूपकान्त ठाकुरक नहला पर दहला एकटा जासूसी उपन्यास अछि। एहिमे उपन्यासकार शिक्षित व्यक्तिक प्रति गामक गुरुजनक दृष्टिकोण केहन रहैत छथि, तकरा बड़ यथार्थ रीतिए देखाओल अछि। 89 बाटक भेंट जिनगीक गेंठक लेखक छथि विन्देश्वरमंडल। एहिमे मिथिलाक पुराण वैवाहिक समस्यामे तिलक-दहेज रूपी कोढ़िक चर्चाक प्रमुखता अछि। विनोदक नयनमणिमे भावुकताक स्वरक प्रमुखता देल गेल अछि। नयनमणिमे जीवनक किछु चिरंतन मानवीय मूल्य उजागर कयल गेल अछि।[36]

सूर्यनारायणझाक ग्रेजुएट गर्लमे समाजक रूढ़ि-कुरीतिकें मेटाए देशक भावी पीढ़ीकें आदर्शोन्मुख बनएबाक, शिक्षित नारीक नव-जागरणक आयास- प्रयासक कथा कहल गेल अछि त' 'ओ' (विदित)मे तरुण-तरुणीक प्रणय भावनाक भावुकतापूर्ण चित्रण अछि।'[37] रवीन्द्रनाथठाुकरक गोनूझामे सर्वथा नव कथासं मिथिलाक प्रसिद्ध गोनूझाक चरित्रकें आर उदात्तता प्रदान कयल गेल अछि। बन्दिनी वधू (रामचन्द्र चौधरी) सेहो तिलक-दहेजक मारलि दुलारू बेटीक बंदिनी सनक जीवन गाथा आ दहेज प्रथाक अति दुखान्त परिणाम एवं मैथिल समाजक दयाहीन निर्ममताक नग्न चित्रण भेल अछि।[38]

अभिशप्त (1979)मे प्रभास कुमार चौधरी दुइ पीढ़ी मध्य निहित असंतुलन-वैषम्य, समाजमे पसरल भ्रष्टाचार ओ स्वार्थ, दुइ मित्रक बीच कृत्रिम संबंध, पति-पत्नी मध्य निहित व्यक्तिवादी भावनाक कारणे उपस्थित विभेद, कार्यालयक अनुशासन हीनता ओ साहित्यमे व्याप्त आडम्बर आदिक वर्णन कए उपन्यासकार वर्तमान पीढ़ीक अभिशप्त आत्माकें उद्घाटित करबाक प्रयास कयने छथि।[39] चिनगीमे गौरीमिश्र निम्नमध्यम वर्गीय गृहस्थक दुर्दैन्यक आदर्शवादी कथा लिखलनि। ओ ग्राम्य-जीवनक सामाजिक रूढि-वादिताक नग्नचित्रण कयलनि। नव जाग्रत नारी भावनाक रोचक चित्रणक दृष्टिएं एहि उपन्यासक नामोल्लेख कयल जा सकैत अछि।'[40] बी. झाक जनम-जनम हम रूप निहारल (1970) नवीन शिल्पक कुशल प्रयोगक दृष्टिएं विशिष्ट कहल जा सकैत अछि। मनोरंजक कथाक एवं स्वस्थ जीवन दृष्टिक कारणे मैथिली साहित्यक विशिष्ट उपन्यास कहल जा सकैत अछि।[41] डॉ. जयकान्तमिश्र यद्यपि एहि उपन्यासक तकनीक एवं भाषा-शैली, कथानकसं पूर्णत: संतुष्ट नहि छलाह। बी. झा जे व्यावसायसं तँ उत्कृष्ट कोटिक चिकित्सक छलाह, किंतु वास्तवमे अपन रचनामे किछु उत्तम परिस्थिति आ सुविकसित चरित्र प्रस्तुत करबामे समर्थ भेलाह अछि। ...ई जं लोक मोहक कामुकता आओर भावोल्लास पड़ताक फेरमे नहि पड़ितथि तँ बड़ गोट लेखक होइतथि।[42]

आलोच्य अविधए नहि प्रत्युत् उपन्यास साहित्यमे अल्पसंख्यक वर्गसं एकमात्र उपन्यासकार छथि शौकत खलील। हिनक मैथिली रचनात्मक कृति थिक अर्धनारी जे 1970ई.मे वैदेहीमे छपल छल। ओना अनेक कथा साहित्यमे अल्पसंख्यक वर्गकें पात्रक रूपमे चित्रण कयल गेल अछि। मुदा एकटा अल्पसंख्यक समुदाय अपनाकें अपन मूल मातृभाषामे कतेक अभिव्यक्त क' पौलक अछि। तकर एकमात्र दर्पण अछि अर्धनारी। लेखनाथमिश्रक रंजना एकटा सामान्य औपन्यासिक् कृति अछि।

सातम दशकक अपेक्षा आठम दशकमे संख्यात्मक दृष्टिएं उपन्यासक क्रम ह्रासोन्मुख रहल, तथापि नव पुरान लेखकक प्राय: डेढ़ दर्जनसं अधिक उपन्यासक प्रकाशन भेल। पुरना उपन्यासकारमे लक्ष्मीपतिसिंहक पंचवटी, सुधांशु 'शेखर' चौधरीक दरिद्रछिम्मड़ि तथा ई बतहा संसार, मणिपद्मक नैका बनिजारा, लवहरि कुशहरि, रइआ- रणपाल, भारतीक बिलाड़ि, प्रभासकुमार चौधरीक हमरा लग रहब आ नवारम्भ, धीरेन्द्रक कादो आ कोयला, जीवकान्तक नहि कतहु नहि आदि प्रमुख उपन्यास सभ अछि। ओना एहि अवधिमे प्रकाशित उपन्यास सभमे ई बतहा संसार (सुधांशु 'शेखर' चौधरी) एवं नैका बनिजारा (मणिपद्म) ई दूटा उपन्यास साहित्य अकादेमी पुरस्कार प्राप्त करबामे सफल भेल। ई उपन्यासक क्षेत्रमे एहि दशकक एकटा पैघ उपलब्धि थिक।

'ई बतहा संसारमे शेखरजी तीनटा भिन्न-भिन्न प्रकारक प्रणय गाथाकें एक सूत्रमे निबद्ध क' कय प्रेम आ वासनाक अन्तर स्पष्ट करबाक चेष्टा कयलनि अछि। चरित्रक सूक्ष्म विश्लेषण, घटनाक रोमांचक वर्णन, स्थान-स्थानपर मानसिक ऊहापोहक चित्रण, विचारक प्रौढ़ता एवं भिन्न-भिन्न प्रकारक कथाक संतुलित संयोजन आदि सब दृष्टिसं एकरा मैथिलीक श्रेष्ठ उपन्यास कहल जा सकैछ।[43]

लोकगाथा आ लोकजीवनपर आधारित अनेक उपन्यासक रचयिता ब्रजकिशोरवर्मा मणिपद्मक साहित्य अकादेमीसं पुरस्कृत उपन्यास नैका बनिजारा दशकक एकटा महत्वपूर्ण कृति अछि। एहि उपन्यासमे ओ हिमालय अंचलक कनक मंजरी, सागर बनिजारा, रत्नसेन एवं महाभिक्षु देवपद्मक गाथाकें अपन सम्पूर्ण कौशलसं एक संग अनुगुम्फन कयलनि अछि। लेखकक प्रभावपूर्ण भाषाक प्रवाह, समसामयिक जन-चेतनाक चित्रण आ प्राचीन वणिज्-व्यापारक परम्पराक विस्तृत विवरण सं नैका बनिजारा जीवंत भ' उठल अछि। उपन्यासमे मणिपद्मजी अपन पूर्व प्रकाशित लोकगाथापर आधारित उपन्यास जकां उपनिबद्ध लोक -नायकक चरित्रकें सर्वथा सजीव रीतिएं अंकित करबामे समर्थ भेलाह अछि।[44] हिनक (मणिपद्मक) सफलताक मूलतत्व अछि हिनक दृष्टिक गहनता एवं अन्तर्वेधकता। ई गुण हिनक नवीनतम

उपन्यास नैका बनिजारामे आओर उत्कर्षपर पहुंचल अछि।[45]

1979मे प्रकाशित भेल छल लीली रेक पटाक्षेप। एहि उपन्यासक महत्व अछि नवीन ओ ज्वलंत राजनीतिक विचारधाराकें रोचक शैलीमे मैथिली उपन्यासक विषय बनाए नवीनताक सन्निवेष करबाक दृष्टिएं।[46] प्रभास कुमार चौधरीक युग-पुरुष (1971), हमरा लग रहब (1977) एवं नवारम्भ (1979) आठम दशकक उपन्यास अछि। ई ...खण्डित विश्वास, अनास्था, कुण्ठा, विक्षोभ, एवं एहि युगक आलोचनाक उपन्यास थिक।[47] जीवनक उतार-चढ़ाव, हर्ष-विषाद, कुंठा, बदलैत सामाजिक मान्यता एवं जीवनक विविधताक चित्रणसं ई उपन्यास सभ परिपूर्ण अछि। सामाजिक चेतनाक अभिव्यक्ति भिन्न-भिन्न रूपें एहि उपन्यास सभमे भेल अछि।''[48] हमरा लग रहब उपन्यासमे अनेक प्रकारक नारी पात्रक सृष्टि कए उपन्यासमे विविध रीतिएं नारीक सामाजिक शोषणक सर्वागीण चित्र सफलतापूर्वक प्रस्तुत कयने छथि। समग्र रूपसं विचारलासं चरित्रक सूक्ष्म ओ मनोवैज्ञानिक विश्लेषण, मानसिक अन्तर्द्वन्द्वक स्वाभाविक उद्घाटन एवं घटनाक्रमक सजीव चित्रमय प्रतिपादनक दृष्टिएं हमरा लग रहब मैथिली उपन्यास साहित्यमे स्वयं एकटा इतिहासक निर्माण करैत अछि।[49]

पहिनहिंसं काव्य-जगतमे सुप्रसिद्ध मार्कण्डेय प्रवासी आठम दशकमे आबि 'गद्यं कवीनां निकषं वदन्ति'कें सार्थकता प्रदान करैत अपन औपन्यासिक कृति अभियान ल' क' उपस्थित भेलाह। तहिना कथा आलोचनाक क्षेत्रक विभूति आनन्द सेहो एकटा सुनगैत गामक कथासं उपन्यासकारक पतियानीमे अपन स्थान सुरक्षित कयलनि।

एदतिरिक्त एहि दशकमे लक्ष्मीपतिसिंह पंचवटीमे कोशीक बाढ़िक ताण्डवक कारणे छिन्न-भिन्न भेल एकटा परिवारक सुखान्त कथा अछि भारतीक बिलाड़ि (मणिपद्म)क एकटा बालकोपयोगी उपन्यास अछि, तँ शशिकान्त गिरहकटमे वर्तमानक समयक सामाजिक व्यवस्थाजन्य दोषपर प्रहार करबाक सुयत्न कयलनि अछि। जीवकान्तक नहि कतहु नहिमे राजकीय योजनाक व्यर्थता, पुरातन भावना-संस्कार, रुचि-प्रवृतिक प्रवाह साकार रूपें उपन्यासमे भेटैत अछि। पूर्वक उपन्यासक अपेक्षा अधिक गम्भीरतासं एहि मध्य सामाजिक पक्षकें स्पर्श करैत जीवकान्तजी ओहि मध्य उपस्थित पतित मनोभावक यथार्थ शब्दांकन कयल अछि।[50]

नवम दशकमे उपन्यास साहित्यक विकास आठम दशकसं किछुओ आगां नहि बढ़ि सकल। एहू दशक मे मात्र दू दर्जनक आस-पास उपन्यास पत्र-पत्रिकामे धारावाहिक किंवा पुस्तकाकार पाठकक सोझां आयल। पूर्व प्रतिष्ठित उपन्यासकार सभमे धीरेन्द्रक ठुमकि बहु कमला, प्रभासकुमार चौधरीक राजा पोखरिमे कतेक मछरि, मणिपद्मक नागभूमि, मार्कण्डेय प्रवासीक हम कालिदास, लीली रेक मरीचिका, विभूति आनन्दक पराजिता अपराजिता, सुधांशु 'शेखर'चौधरीक निवेदिता, मायानन्दमिश्रक मंत्रपुत्र, सुशीलक गामवाली, आदि उपन्यास सभक संग प्रगतिक पथपर अग्रसर रहल अछि, तँ सुरेन्द्रझा 'सुमन' सन सुप्रतिष्ठित साहित्यकार उगनाक दियाद-वाद नामक सम-सामयिक पृष्ठभूमिक उपन्यास लिखि एहू विधामे अपन रचना कौशलकें व्याख्यायित कयलनि। एहि अवधिमे नव लेखकमे प्रदीप बिहारी अपन दू-दूटा उपन्यासक संग प्रवेश कयलनि-विसूवियस और गुमकी आ बिहाड़ि। गंगेश गुंजन अपन पहिल लोकक संग औपन्यासिक धरातलपर उपस्थित भेलाह, तँ रविकान्त नीरज, जिन्दाबाद- जिन्दाबाद कहैत आबि धमकलाह। श्यामानन्द ठाकुरकें नीचां मुंहें जाइत देखि नवीनचौधरी अपन बाट आ बटोहीमे ओझरायल ठेहुनियां दैत सशक्तताक संग ठाढ भेलाह। गिरधरझा 'विकल' बहुवर्णी आंगनक रेखा घीचबा-गनबामे संलग्न छलाह तँ चन्द्रनारायण मिश्र वैशाखी पूर्णिमा सन पवित्र दिनक स्मरण दियौलनि।

एहू दशकक 1987मे प्रकाशित मायानन्दमिश्रक उपन्यास मंत्र-पुत्र (1987) साहित्य अकादेमी द्वारा 1988मे पुरस्कृत भ' एकटा कीर्तिमान स्थापित कयलक। निश्चये एहि काल खण्डक पर्यावरण निर्माण एवं कथा-सूत्रक कलात्मक गुम्फनक दृष्टिसं सफलता भेटल छेन्हि।[51]

धीरेन्द्रजी अपन तेसर उपन्यास ठुमकि बहु कमलामे शोषित-दलित उपेक्षित वर्गक उत्थान एवं उच्च वर्गक परम्परावादी सामंतवादी व्यवस्थाक पराजयक कथा कहलनि अछि। 'गाममे होइत गतिशील परिवर्तन तथा अर्द्धसामंती व्यवस्थाक पराजयक साम्यवादी चित्रण कए दलित वर्गक उत्थानक संदेश देल गेल अछि।[52]

आदिम गुलाम (1986) उपन्यासमे (मणिपद्म) आदि कालक आर्य-अनार्यक संघर्ष कथा अछि। 'श्रीश'क मतानुसार एहि मध्य आर्य द्वारा एहि ठामक आदिवासी-अनार्यकें गुलाम बनएबा क' ओकरापर अमानुषिक अत्याचार ओ शोषण करबाक वर्णन भेल अछि। संगहि दूइ भिन्न सभ्यता ओ संस्कृतिक सम्मिलन ओ सम्मिश्रणहिंक चित्र अंकित कयल गेल अछि।'[53]

हम कालिदास (1982) मार्कण्डेय प्रवासीक आत्मकथात्मक शैलीमे लिखल गेल उपन्यास अछि। 'ई आत्मकथात्मक शैलीमे रचित लेखकक अपेक्षाकृत प्रौढ़ रचना थिक। ...रोचक शैलीमे सांगोपांग रीतिएं रचित प्रवासीजीक एहि कृतिमे हुनक वर्णन पटुताक परिचय भेटैत अछि।[54] विभूति आनन्दक 1982मे प्रकाशित उपन्यास पराजित-अपराजितमे निम्नवर्गीय ग्रामीण जीवनक कथा कहल गेल ....एहि मध्य सेहो निम्नवर्गीय ग्राम्यजीवनक प्रति लेखकक संवेदनशील सहानुभूति प्रवणता स्पष्टत: परिलक्षित होइत अछि।[55]

गुमकी आ बिहाड़िक (प्रदीप बिहारी) कथारीति रोचक ओ दृष्टि आदर्शवादी अछि। समग्र रूपसं विचारलासं उपन्यासकार अपन जनवादी विचारधाराकें उपन्यासक कलात्मक गरिमाक संग अभिव्यक्त करबामे पूर्ण सफल भेलाह अछि।[56] अन्य उपन्यास आ उपन्यासकार सभ सेहो अपन कथानक, शैली, विचारधारा आ रचनाशीलताक दृष्टिसं महत्वपूर्ण कहल जा सकैत छथि। अनुत्तरित प्रश्न (1984)सं उपन्यासकारक रूपमे प्रवेश कयनिहार उषाकिरण खान एकैसम शताब्दीक वर्ष 2010मे साहित्य अकादेमीसं भामती उपन्यास पर पुरस्कृत भेलीह। मैथिली भाषा साहित्यक दधीचि सुरेन्द्र झा 'सुमन' वृद्धावस्थोमे एही दशकमे उगनाक दियादबाद उपन्यासमे सम-सामायिक विचार-धाराकें प्रवाहित कयलनि।

शताब्दीक अंतिम दस वर्ष उपन्यास साहित्यक लेल किछु निराशाजनक

कहल जा सकैत अछि। एहि अवधिमे पछिला 40-45 वर्षक अपेक्षा बड़ थोड़ औपन्यासिक कृति प्रकाशित भेल। प्राय: एक दर्जनसं किछु अधिक उपन्यास अवश्य महत्वपूर्ण अछि, मुदा एहिमे ने तँ कोनो पुरस्कार प्राप्त क' सकल आ ने जनजीवनक महत्वपूर्ण समस्या उठा क' जन-जागरणेक शंखनाद फूंकलक।

एहि अवधिक कृतिमे लीली रेक उपसंहार (1991), मदनेश्वर मिश्रक एकटा छलीह महारानी (1993), गोविन्द झाक, विद्यापतिक आत्मकथा (1993), अरूण कुमार झाक मर्सिनी (1993), उषाकिरण खानक हसीना मंजिल (1995), सारस्वतक सत्य: एकटा काल्पनिक विषय (1995), अशोककुमार ठाकुरक निशांत (1997), तथा धूमकेतुक मोड़पर (2000) प्रमुख अछि। उषा किरण खानक उपन्यास हसीना मंजिल कें साहित्य अकादमी पुरस्कार सं सम्मानित कयल गेल। यद्यपि एहि उपन्यास सभमे लीली रे, गोविन्द झा, उषाकिरण खान एवं धूमकेतु सन स्थापित रचनाकारक नीक कथानक, उत्तम भाषा-शैली, नीक चरित्र-चित्रण विद्यमान अछि, मुदा पाठक-समालोचकक अनुराग सामान्यसं ऊपर नहि उठल।

एक्कैसम शताब्दीमे सर्वथा नव-भाव भूमिपर अपन रचना प्रवेश कयलनि अछि केदार नाथ चौधरी। हिनक पहिल उपन्यास चमेलीरानी 2004मे, दोसर करार 2006मे आ तेसर माहुर 2008मे प्रकाशित भेलनि अछि। हिनक तीनू उपन्यासक शीघ्रे दोसर संस्करण छपल जे एकटा नव ऐतिहासिक तथ्य अछि।

एकैसम शताब्दीक प्रथम दशकमे धुरझार उपन्यास लिखनिहारमे एकटा आर अनन्य एवं सुपरिचित नाम अछि-विद्यानाथ झा 'विदित' जीक। हिनक प्रकाशित उपन्यास अछि-खट्टर ककाक चिट्ठी', मानवकल्प, महोदय मन्वन्तर, सा ते भवतु सुप्रीता, बहुरिया, प्रारब्ध, अनामिकाक चिट्ठी, विप्लवी बेसरा, कोशिलिया, करपूरिया, मात्र तीन घंटा, विधिकरी, परिक्रमा आ ककरो कहबै नहि।

एहि अवधिमे लीली रेक जिजीविषा, शेफालिका वर्माक नागफॉसक संग एकटा आर चारिम महिला वीणा ठाकुरक भारती प्रकाशित भेल अछि। महिला सशक्तिकरणक एहि युगमे मैथिली उपन्यासकार गणक मध्य एकहिं, दशकमे चारिटा-चारिटा सुलेखिका रचना मिथिला-मैथिलीक लेल एकटा नव धरातलक सूचना दैत अछि।

एकटा तेसर उपन्यासकार जगदीशप्रसाद मंडलक प्रवेश 2008-09मे भेलनि। कथा विधाक एकटा पुस्तकक बाद क्रमश: हिनक 2009 ई0मे तीनटा (जिनगीक जीत, उत्थान-पतन, आ मौलायल गाछक फूल) आ 2010मे दूटा (जीवन-मरण आ जीवन संघर्ष) उपन्यास प्रकाशित भेलनि जे नव प्रवेशी एकटा पछड़ल वर्गक लेखकक लेल एकटा 'रेकार्ड' अछि। हिनक उपन्यासक कथावस्तु सेहो आम उपन्याससं फराक, मुदा आम जन-जीवनक लगे-पासक अछि।

वीणा ठाकुरक उपन्यास भारती स्त्री विमर्शक नव्यतम प्रस्तुति थिक। एतदतिरिक्त विजेन्द्रकुमार मिश्रक पथिक पियासल आ कुचक्र सारस्वतक दरद, चौधरी कौशलकिशोर ठाकुरक हरि इच्छा गरीयसी, अशोककुमार ठाकुरक, वसुधाक संसार, श्याम चन्द्रक रूपादीदी, मधुकांत झाक स्वेदजीवी, चन्द्रेशक खैंक, गजेन्द्र ठाकुरक सहस्रबाढ़नि आ सहस्रशीर्षा आदि उपन्याससं एकैसम शताब्दीक पहिल दशकक उपन्यास साहित्य एहि शताब्दीक दोसर दशक दिस अभिमुख विकासक यात्राक प्रशस्त पथपर सतत अग्रसर अछि। दोसरो दशकमे अखन धरि एकाध दर्जन उपन्यास सभ विभिन्न पत्र-पत्रिका आ पुस्तकाकार सेहो प्रकाशित भ' रहल अछि, मुदा एहि दशकक उपन्यास लेखनक प्रवृति आ पाठकक रुझानक सही-सही आकलन एखन धरि स्पष्ट नहि भ' सकल अछि।

ओना मैथिली उपन्यासक सजर्नात्मक स्वरूपमे युगानुरूप पर्याप्त विकास भेल अछि आ क्रमश: एहिमे विकासक नव-नव आयाम जुड़ैत परसल जा रहल छल अछि। पहिने सामाजिक समस्या- मूलक उपन्यास हास्य-व्यंग्यक चासनी चढा रचल जाइत रहल अछि आ अनमेल विवाह, अशिक्षा, व्यभिचार, पाखंड आदिपर कसिक' प्रहार कयल जाइत छल। बीचमे स्त्रीगणक सर्वाधिक समस्या कामवासनाक ल'क' किछु लेखकक उपन्यास बेश चर्चित रहलनि। आब मनुष्यक जीवनक सभटा सम्बंधित समस्या दिस लेखक साकांक्ष छथि। जीवनक नव-नव भाव-बोधक संग ग्लोबलाइजेशन, मात्र पति-पत्नी आ नेना, माय-बापक प्रति अनास्थाक भाव आदि विचारधारा मिथिलोमे आब नीक जकां घनीभूत भेल जाइत अछि। एहि दशकमे 'मिथिला दर्शन'क विशेषांकमे सुभाषचन्द्र यादवक, गुलो, विभूति आनन्दक बाबाक एकटा गाम छलनि, प्रदीप बिहारीक जड़ि आ केदारनाथ चौधरीक अयना धरावाहिक छपल छल, जे ई चारू आब पुस्तकाकार सेहो उपलब्ध अछि। प्रदीप बिहारीक शेष आ दिलीप कुमार झाक दू धाप आगां, पंकज पराशरक जल प्रांतक शीर्षक उपन्यासक हेवनिएमे लोकार्पण भेलनि अछि। उषाकिरण खान एकटा नव उपन्यास मनमोहना रे मिथिला दर्शन (द्विमासिक)क नबम्बर 2018क अंकसं छपब आरम्भ भेल अछि।

एकटा बड़ महत्त्वपूर्ण बात एहिठाम कहि देब हम जरूरी बुझैत छी। कोनो प्रकारक रचना लेखक कियैक करैत अछि? अपन विचारक प्रेषणक संग-संग, सुयश, आम लोकक जीवनमे सुख-चैनक आकांक्षा, सामाजिक उत्थान, दुर्वृत्तिक पराभव आ सत्प्रवृत्तिक प्रचार-प्रसार आ अन्तमे आमदनीक लेल। समग्रत: मानव कल्याणक निमित्त। शास्त्रोमे काव्यक प्रयोजन- 'यशसे अर्थकृत व्यवहारविदे शिवेतर रक्षतये' कहल गेलैक अछि। मैथिली भाषाक पुस्तक, पत्र- पत्रिकाक पढनिहारक चिन्तनीय स्थिति हमरा सन आशावादिओ लोककें ई कहबा लेल बाध्य करैत अछि जे आब 90 प्रतिशत सं अधिक लोक की तँ कोनो पुरस्कारक लोभ-लालच (आमदनी लेल) मे पड़िक' लिखैत अछि। मात्र 10 प्रतिशत थोड़ लोक मातृभाषाक सेवा भावसं लिखैत छथि। पाठक छथिहे नहि। हम तँ कहब लेखको, प्राध्यापको मंगनीओंमे प्राप्त पुस्तक पढ़ैत नहि छथि। हं, एकटा पशुप्रवृत्ति-'अहो रूपम्, अहो ध्वनि' ग्रीष्मक आगि जकां मैथिली साहित्य-संसार (यदि कोनो अर्थमे अछि) तँ ओकरा भस्मासुर जकां भस्म कयने जा रहल छथि। यदि पाठके नहि तँ हुनक रुचि-अरुचि, पसिन-नापसिनक गप्पे करब व्यर्थ अछि। ■

(संदर्भ पृष्ठ 37 पर)

विद्यापति आ खेतीबारी

✍ रमण कुमार सिंह

ओना त' मैथिल समाज विद्यापति कें कहियो बिसरि नहि सकैत अछि, ओ हमरा सभक आदि पुरुष छलाह। मुदा हाल मे एकटा राजनेता द्वारा विद्यापति के बंगाली कवि बतौला सं एक बेर फेर विद्यापति चर्चा के केंद्र मे आबि गेलाह। विद्यापति कें बंगाली कवि बतायब घोर निंदनीय अछि, मुदा ओहू सं बेसी निंदनीय अछि स्वयं के मिथिला आ मैथिली सेवी हेबाक दावा कयनिहार लोकक एहि प्रसंग पर या तं चुप रहब अथवा राजनेता केर ओहि टिप्पणी कें न्यायोचित ठहरायब। खैर, ई सब वोटक राजनीति केर हिस्सा अछि आ एकर निंदा करबाक अलावे एकरा बहुत गंभीरता सं लेलो नहि जा सकैत अछि। मुदा एहि क्रम मे एक बेर फेर सं विद्यापतिक पदावली कें उनटाबय लगलहुं, तं महाकविक एगो नव रूप सौझां मे आयल। सामान्य रूप सं विद्यापति कें शृंगार आ भक्ति के कवि मानल जाइत अछि। मुदा विद्यापति मात्र शृंगार आ भक्ति टाक कवि नहि छथि। ओ मिथिलाक जन-जीवनक सुख-दुख, हर्ष-विषादक प्रखर प्रवक्ता छथि, जिनक गीत एखनो मिथिलाक घर-आंगन मे गाओल जाइत अछि। हुनक पद कृषि कर्म सं संबंधित सेहो अछि। तें एहि स्तंभ मे हम हुनक खेतीबारी सं सबंधित एगो पदावलीक चर्चा क' रहल छी।

'बेरि-बेरि अरे सिब हमे तोहि कहलहुं किरिष करिअ मन लाए। रहिअ निसंक भीग मंगइते सब गुन गौरब दुर जाए।।'

ई पद बेस पैघ अछि, मुदा एतय थोड़ देल जा रहल अछि। एहि पद मे पार्वती शंकर जी सं कहैत छथिन, हे शिव, हम अहां सं बेर-बेर कहलहुं जे मोन लगाय के खेती करब, तं बेफिकिर रहब। भीख मांगला सं गुण-गौरव घटि जाइत अछि। आब देखल जा सकैत अछि, जे विद्यापति, जे आइ सं कतेको शताब्दी पूर्व मिथिलाक एहि पवित्र धरती पर जनमल छलाह, से शिव-पार्वतीक बहाने खेतीबारीक गौरव गान कयलनि अछि। ओहिना नहि हमरा सभक समाज मे एखनो खेती कें उत्तम आ भीख कें निर्घिन मानल जाइत अछि।

आइ हमरा देशक किसान सर्वाधिक संकट मे छथि। हां, ई अलग गप थिक जे मिथिला मे खेती आन प्रांतक तुलना मे एखन ओतेक संकटग्रसत नहि भेल अछि, मुदा एतबा ते निश्चित अछि, जे मिथिलो मे खेतीक प्रति मोहभंग भेल अछि आ एकरा घाटाक सौदा मानल जाइत अछि। खेती बचेबाक चिंता जरूर रहैत छनि, मुदा केओ नहि चाहैत अछि जे हुनक धिया-पुता खेतीक काज करय।

आइ खेती केनिहार लोक कें समाज मे निर्धन मानल जाइत अछि, मुदा एहि पद मे पार्वती शिव सं कहैत छथिन-निर्धन बूझि के सब मजाक उड़ाबैत अछि, ने ते केओ आदर दैत अछि आ ने कतहुं सं दया भेटैत अछि। शिव, अहां के लोक आक-धतूर चढ़बैत अछि आ विष्णु कें चंपा के फूल चढ़ाओल जाइत छनि। जिनका सभ कें विद्यापतिक काव्य मे मात्र शृंगार आ भक्ति टा भेटैत छनि, हुनका देखबाक चाही, जे महाकविक दृष्टि निर्धनो लोक पर छलन्हि आ निर्धन लोकक समाज मे केहन स्थिति होइत छैक, ओकरो ओ अपन काव्य मे देखौने छथि।

एतबे नहि, एहि पद मे पार्वती शिव के खेती के जुगत बताबैत कहैत छथिन, हे शिव, अपन एहि मोटका लाठी के हर कियैक नहि बना लैत छी? त्रिशूल कें गला कें ओकर फाड़ कियै नहि बनाबैत छी? कतेक ते मजगूत बरद अछि अहांक, एकरा हर मे जोति दियौ। जटा मे गंगा अछिए, ओहि सं खेतीक पटौनी करू...।

तें कहबाक तात्पर्य ई जे चौदहम शताब्दी मे विद्यापति कें खेतीक प्रतिष्ठाक ध्यान छलनि आ ओकरा ओ अपन काव्यक विषय बनौने छलाह। ओ मात्र भक्ति आ शृंगारक कवि नहि छलाह। तत्कालीन सामाजिक-राजनीतिक स्थितिक कारणें भने भक्ति आ शृंगार पर हुनक पदावली बेसी छनि, मुदा ओ मात्र शृंगार आ भक्तिक कवि नहि छलाह। विद्यापति कें ओहिना महाकवि नहि कहल जाइत छैक, हुनक पद जाहि उदारताक संग हमरा सभक मानस कें आकृष्ट करैत रहल अछि, ओहि सं हमरा सभक चेतनाक अंतर्ध्वनि विकसिते भेल अछि। ई विद्यापतिक काव्यक विशिष्टता अछि, जे मिथिलाक जनमानस के हरेक वर्ग ओहि सं संवेदित आ स्पंदित होइत रहल अछि। विद्यापति हमरा सभक गौरव छथि, तें हुनका छीनबाक कोनो प्रयास कें हम सभ बर्दाश्त नहि करि सकैत छी। विद्यापति कें बंगाल केर अथवा ओडिशा केर कवि साबित करबाक कतेको कुचक्र चलल गेल, मुदा ओ सफल नहि भेल। आब फेर सं चुनावी लाभक कारण जौं केओ एहन कुत्सित प्रयास करैत छथि, ते ओकरा कोना सहन कयल जाय! ■

मो. 9711261789

ईमेल : kumarramansingh@gmail.com

राजकमलक कथा : विषय आ शिल्प

✍ डॉ. ललितेश मिश्र

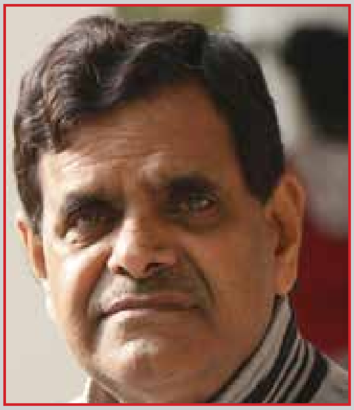

बी.एन. मंडल विश्वविद्यालयक अंग्रेजी विभागाध्यक्ष, मानविकी संकायाध्यक्ष, छात्र कल्याण संकायाध्यक्ष पद कें सुशोभिक क' सेवानिवृत। 'प्रस्तावना' (समीक्षापरक मैथिली निबंध संकलन), 'बीच वैतरणीमे' (कथा संग्रह) प्रकाशित।

स्वर्गीय राजकमल चौधरी कें परोक्ष भेना आइ लगभग साठि बर्ख भए रहल छन्हि। तैंतीस बर्खक अन्तराल वस्तुतः कम नहि होइत छैक आ एहि कालावधि मे कोनो विवादकें, कोनो व्यक्तिकें, अथवा हुनक इतिहासकें बिसरि जाएब कोनो कठिन ओ असामान्य काज नहि थिक।

मुदा, ई एकटा विचित्र संयोगे कहल जाए सकैत अछि जे स्वातंत्र्योत्तर मैथिली कथा साहित्य मे जे राजकमलजी सर्वाधिक विवादास्पद व्यक्ति ओ रचनाकारक रूप मे ख्यात् भेलाह से एहि असार-संसार सं परोक्ष भए गेलाक उपरान्तो अपन जीवनकाल सं बेसी, बहुत बेसी, आइ पाठक, समीक्षक ओ प्रकाशक-सभकें अपन कृतित्व कें विभिन्न रूपें रेखांकित करबाक चेष्टे करैत रहलाह अछि। हुनक नुकायल, हेराएल रचना सभकें प्रस्तुत कए ओहि पर विचार करबाक आवश्यकता अनुभव करैत रहलाह अछि। ई सभटा बात, ई सभटा चेष्टा, ई सभटा आवश्यकता स्व. राजकमल जीक साहित्यक प्रति समकालीन परिस्थिति मे द्विगुणित होइत आकर्षण ओ प्रासंगिकता कें द्योतित करैत अछि।

स्वातंत्र्योत्तर मैथिली कथा साहित्य मे राजकमलजी जाहि मान्यता, जाहि सिद्धान्तक उद्भावन कए गेल छथि, ताहि विचारक, दृष्टिकोणक स्वीकृति-सहमति लेल मैथिली साहित्य संसारक लोक एखनो अपस्यांत छथि। मान्यताक स्वीकृतिक हेतु राजकमलजी ओ हुनक अनुवर्ती रचनाकारक संघर्ष मे मात्राक जे अन्तर परिलक्षित होइत होअए परंच, मूल काज जे ओ ठानि गेलाह अछि, ताहि सं आगां हमरालोकनिक साहित्य मे औखन किछु नहि भेल प्रतीत होइछ। एहन स्थिति मे हुनक साहित्यक सम्यक् ओ व्यापक अध्ययन-अनुशीलन अपेक्षित अछि।

हमरा लोकनिक साहित्य मे राजकमलजीक छवि मूर्त्तिभंजक (आइकोनोक्लास्ट) रचनाकारक अछि। ओ अपन कारयित्री प्रतिभा सं मैथिली काव्य ओ कथा-दूहू धाराक जड़ताकें, गतानुगतिकताकें भंग कए रचनाधर्मिताक नव क्षितिजक उन्मेष दिस प्रवृत्त भेलाह। हुनकहि शब्द मे- 'हम सभ देवताहीन पुरान मंदिर तोड़ने छी तं संगहि नव मंदिर सेहो बना रहल छी।' हुनक ई नव उन्मेष, नव रीतिक प्रतिष्ठापनक संकल्प आक्रामकताक जे स्वरूप ग्रहण कएने बूझि पड़ैत हो किन्तु, हुनक एहि वक्तव्यक आलोक मे सोद्देश्य ओ महत्वपूर्ण अछि- 'रस्ता मे फूल पातक पतियानी भेटइए, नदी कात मे हंसबलाका भेटइए, हम सभ एहि सभकें देखैत छी आ देखियो कए नहि देखैत छी आ चुपचाप आगू बढ़ि जाइत छी। किएक तं खेत पर जेबाक अछि, ऑफिस जेबाक अछि, कचहरी जेबाक अछि, स्टेशन जेबाक अछि। किन्तु, जीवन मे शाश्वत आनंद आ मानसिक शांति (दुइओ क्षणक हेतु) अनबाक लेल पृथ्वी आ विश्वभरिक कण-कण मे पसरल सत्य, शिव आ सुंदर कें पुनरन्वेषित करऽ पड़इए।'

पराङ्मुखी जीवन वृतक निरर्थकताकें त्यागि जीवन मे शाश्वत आनंद ओ शांतिक

संपर्क *: ग्राम+पोस्ट-बनगांव, सहरसा, बिहार-852212*
मो. *8877999177, 7217729290,* ***ईमेल*** *: mishralalitesh@gmail.com*

अनुसंधान तथा जड़-चेतन मे व्याप्त सत्य, शिव ओ सुन्दरक अवलोकन, संक्षेप मे, राजकमल जीक समस्त साहित्यक मूलभूत उद्देश्य थिक आ इहो प्रतिभासित होइछ जे एकरे सुन्दर, सार्थक ओ समर्थ अभिव्यक्ति लेल ओ कथा मे, कविता मे कथ्यक नव धरातल, शिल्पक नव अभिव्यंजनात्मक रीति आदिक आविष्कार कएलैन्हि। तें ई विचार करब उचित होएत जे अपन उद्घोषित अभियान अथवा उद्देश्य मे ओ कतए धरि सफल भए सकलाह।

अपन उद्देश्यकें देखार ओ प्रखर बनएबाक चेष्टा, अपन संधानकें भास्वर बनएबाक प्रयास संभवतः कविता रचनाक अपेक्षा कथा मे राजकमलजी बेसी सुनियोजित ढंगें करैत परिलक्षित होइत छथि। हुनक प्रारंभिक कथा सं लए कए अन्तधरिक जे कथा छन्हि सभ जेना जीवन संधानक क्रमबद्ध अध्याय हो, कथा सभक अंतस्तम् मे सुगुप्त राखल विचारक एकतानताक क्रमिक संवर्द्धन हो।

राजकमलजी जाहि कालखंड मे अपन कथाक संग आविर्भूत भेलाह, से मैथिली कथा साहित्य मे संक्रमण काल छल, मोहभंगक काल छल। स्वतंत्रता प्राप्तिक पश्चात्, लोकक पुर्वानुमानक सर्वथा विपरीत, अर्थतंत्रक असंतुलन, राजनीतिक प्रपंच, आधारभूत जीवन मूल्यक विघटन, बेरोजगारी आदि लोकजीवन मे नैराश्य, निष्क्रियता आ आक्रोश क्रमशः भरए लागल। लोक मे भरि पेट अन्न, देह झंपबाक लेल वस्त्र आ शीत-ताप सं रक्षाक लेल एकटा छोटछीन आवासक सामान्य आ मूलभूत समस्याक पूर्तिक सुखद कल्पना हमरा लोकनिक दिशाहीन आर्थिक ओ राजनीतिक व्यवस्थाक अराजक प्रवृत्तिक कारणें भखरए लागल छल।

अपन-अपन समाजक, अपन-अपन देशक एहि अंधकारमय परिवेशकें, परिवेशक जटिलताकें, राजकमल अपन तीव्र सामाजिक-आर्थिक-राजनीतिक चेतना सं अपन कथा मे उद्बोधित कएल। हुनक कथा सभ मे समाजक वीभत्स रूप, चरित्रक अमानवीय नग्न रूप, मूल्यक्षरित सामाजिक व्यवस्था, धर्म, नैतिकता ओ प्रेमक माला जपनिहार छद्मवेषी, पाखंडी चरित्रक ढनमनाइल स्वरूपक जे असाधारण चित्रांकन भेटैत अछि, से हुनक ओही चेतनाक प्रतिफल थिक। एहि चेतनाक जे हुनक स्तर अछि से अवश्य आक्रामक, हिंसक भासित होइत अछि। मुदा, से अप्रिय होइतहु सत्यनिष्ठ अछि।

रोटीक लेल अपन इज्जति बेचबाक हेतु विवश 'ननदि भाउज'क पदुमाक अथवा साधारणो अन्न-वस्त्रक सुविधा लेल अपन दैहिक ओ पारिवारिक मर्यादाकें समाप्त करबाक लेल नचार, रघुनाथ पाठकक बासा मे गेनिहारि 'सांझक गाछ'क भौजीक चरित्रक अति यथार्थवादी चित्रण लेल, ओहि चरित्रक अन्तर मे होइत हाहाकारकें देखबा लेल, जाहि संवेदनात्मक ऊंचाईक अपेक्षा छैक, तकर पूर्ति करबा मे विलक्षण समसामयिक चेतना सं संपन्न, राजकमलजी, निस्संदेह मैथिली कथा साहित्य मे अद्वितीय छथि।

अपन उद्देश्यकें देखार ओ प्रखर बनएबाक चेष्टा, अपन संधानकें भास्वर बनएबाक प्रयास संभवतः कविता रचनाक अपेक्षा कथा मे राजकमलजी बेसी सुनियोजित ढंगें करैत परिलक्षित होइत छथि। हुनक प्रारंभिक कथा सं लए कए अन्तधरिक जे कथा छन्हि सभ जेना जीवन संधानक क्रमबद्ध अध्याय हो, कथा सभक अंतस्तम् मे सुगुप्त राखल विचारक एकतानताक क्रमिक संवर्द्धन हो।

राजकमल जीक मान्यता छलैन्हि जे मानव जीवनक तीन गोट मूल प्रवृत्ति अछि- 'बुभुक्षा, आत्मरक्षा आ यौनपिपासा। हुनक दृष्टि मे हमरालोकनिक समस्त शारीरिक, मानसिक क्रिया-व्यापार एही तीनू प्रवृत्ति पर आधृत अछि, एकरे सहजात थिक। हुनक आरंभिक कथा 'शशि-उर्वशी', 'अपराजिता', 'सहस्त्रमेनका', 'मलाहक टोल', 'दमयन्तीहरण', 'यात्राक अन्त', 'किर्तनिञा' सं लए कए अंत धरिक 'पनिडुब्बी', 'पात', 'आवागमन', 'सांझक गाछ' आदि जे कोनो कथा अछि, तकर पर्यालोचन सं ई स्पष्ट प्रतिबोधित होइत अछि जे इएह तीनू सुगुप्त मानवीय प्रवृत्ति हुनक कथा मे, कथा महक विभिन्न चरित्रक विकास ओ संघर्ष मे, अभिव्यंजित भेल अछि।

एही प्रवृत्तिकें देखार करबाक लेल, एही दृष्टिकोणकें बुझएबाक लेल हुनक समस्त कथा रचना मे भूख, अकाल, महामारी, हैजा, यक्ष्मा, अन्हार, अवसाद, अनैतिक शारीरिक संबंध-स्थापन, अकर्मण्यता आदि प्रधान तत्वक रूप मे चित्रित भेल अछि आ ताहि पृष्ठभूमि मे हुनक सभ चरित्र बेबस भेल, निरीह भेल, जर्जर भेल, रुग्ण भेल घुमैत अछि। मुदा, अपन लक्ष्यक स्थापन लेल, अपन दृष्टिकोणक यथार्थता उजागर करबाक लेल भलें हुनका एहने वातावरण कथा मे निर्मित करब आवश्यक बूझि पड़ल होइन्हि, किन्तु एहि सं हुनक कथाक संसार स्पष्टतः अन्हारक संसार भए कए रहि गेल अछि, रुग्ण आ निश्चेष्ट लोकक संसार बनि कए रहि गेल अछि।

एहि प्रवृतिकें मूल बिन्दु मानि हुनके समकालीन कथाकार स्वर्गीय ललित आ मायानन्द मिश्र कथा गढ़ने छथि, हुनक अनुवर्ती प्रभास कुमार चौधरी, जीवकान्त, राजमोहन झा सेहो अपन-अपन कथा मे समकालीन वातावरणक चित्रण कएने छथि। तथापि, एहि रचनाकारक कथाक संसार ओहन अन्हार, ओहन रूग्णता ओ निश्चेष्टता मे नहि डूबल अछि, जेहन राजकमल जीक। हमरा बुझने एही परिप्रेक्ष्य मे राजकमल जीक दृष्टिकोण पर अभव्यता, अस्वस्थताक आरोप लगाओल

गेल अछि।

'आकाश गंगा'क अन्नपूर्णा कें, 'अंधकारक' शरणार्थी पंजाबी युवतीकें, 'ननदि भाउज'क पदुमाकें, 'मुग्धा विमुग्धा'क नेपाली छौंड़ी आदिकें भूख आ रोटीक अनिवार्यते अनैतिक क्रिया-कलापक अनन्त-अन्हार मे लए जाइत अछि। ई तें भूख सं जरैत पेटे थिक, रोग आ मानसिक जर्जरताक अन्हार मे डूबल व्यक्तिक आत्मरक्षेक भाव थिक जे 'एकटा चम्पाकली आ एकटा विषधर'क रामगंजबाली आ चम्पाकें, 'वैष्णव'क कमलपुरवाली कनियांकें, 'समुद्र'क दयामयीकें, 'आवागमन'क सरस्वतीकें आ 'सांझक गाछ'क भौजी कें क्रमश: पुरुषत्वविहीन, यौनलिप्साक प्रतिनिधि चरित्र शशि बाबू, श्रीमन्त बाबू, विश्वनाथ, आदित्य आ रघुनाथ पाठकक रक्षणावेषण मे जएबा लेल बाध्य करैत अछि।

अतएव, एहि सं इहो स्पष्ट भए जाइत अछि जे राजकमल जीक चरित्र सभ भूख, अन्नक अभाव, रोगाह जीवन आदि सन समस्याक मुक्तिए हेतु दैहिक-व्यापारकें अंगीकृत करैछ। मुदा, हम एकरा कथाकारक घोर आत्मघाती, अनास्थावादी प्रवृति मानैत छी। एहि विश्लेषण सं इहो तर्क मानबाक हमरा सौविध्य नहि होइत अछि जे एहन चित्रण मे कथाकारक वर्जनामुक्त सांसारिक जीवनक कल्पना अथवा आग्रह निहित अछि। वस्तुत: एहन प्रवृत्ति साहित्यकें अस्वस्थ ओ अभव्य बनबैत अछि। राजकमल जीक कथाकार व्यक्तित्वक व्यापकता एहि सं विखंडित होइत अछि।

हुनक एहन प्रवृति मे सभ सं पैघ एकटा ई दोष परिलक्षित होइछ जे हुनक एक्को टा चरित्र संघर्षशील नहि बूझि पड़ैत अछि। बुभुक्षा सं, असुरक्षा सं, अन्हार सं, अवसादमय जीवनक्रम सं लड़ि कए, झगड़ि कए सम्पन्नता दिस, इजोत दिस, प्रसन्नता दिस कोनो कथाक कोनो चरित्र आगां नहि बढ़ैत अछि। सभटा चरित्र अपन अकर्मण्यता, अपन दीनता, अपन निरीहता कें स्वीकार करैत काम-वासनाक धधरा मे अपनाकें समर्पित कए समाप्त कए लैत अछि। ई घोर असफलता थिक ओहन रचनाकारक जे कतहु ई कहैत होथि-

'हम सभ अनिकेत; अपराजित,
कतेक युग सं ताकि रहल छी,
जीवनक एहि प्राणपावक
महावन मे किरणमाला!'

अथवा, 'किन्तु, मात्र प्रार्थना सं कोनो वस्तु प्राप्त कयल जा सकैत अछि, एहि पर दयामयीकें कहियो कोनो आस्था-भरोस नहि छलनि। एखनो नहि छनि। पराक्रम आ परिश्रम, एही दूनू सं सभ वस्तु पाओल जा सकैत अछि, अपन छोटछीन जीवन मे दयामयीकें यैह अनुभव भेल छनि।' (समुद्र)।

अतएव, तीव्र सामाजिक-राजनीतिक-आर्थिक चेतनाक अछैतो राजकमल जीक चरित्र सभ एतेक विपन्न होअए, कमजोर आ असंतुलित भए जाए-हमरा दृष्टिएं हुनक रचना-कौशलक एक गोट गंभीर दोष थिक।

तीव्र सामाजिक-राजनीतिक-आर्थिक चेतनाक अछैतो राजकमल जीक चरित्र सभ एतेक विपन्न होअए, कमजोर आ असंतुलित भए जाए-हमरा दृष्टिएं हुनक रचना-कौशलक एक गोट गंभीर दोष थिक।

राजकमल जीक कथा मे एकटा बात आओरो द्रष्टव्य अछि जे जाहि मूलभूत प्रवृत्तिक छाया हुनक रचना मे सभतरि अछि, तकर सफलतापूर्वक प्रतिनिधित्व जतेक हुनक नारी चरित्र करैत अछि, ततेक पुरुष चरित्र नहि। हुनक समस्त पुरुष चरित्र शिखण्डी अछि, क्लीव अछि, कामलोलुप अछि आ संकल्पहीन अछि। प्रगतिकामी, विकासोन्मुख एक्को टा नहि भासित होइछ। जकरा अंगरेजी समालोचना मे 'फ्लैट' चरित्र कहल जाइछ, हुनक प्राय: सभ पुरुष चरित्र तकरे सुन्दर नमूना अछि।

किन्तु, नारी चरित्रक संग एहन बात नहि अछि। बुभुक्षा सं यौन धरि अथवा अन्हार सं अदम्य अन्हारे दिस किएक ने हो, हुनक नारी चरित्र बढ़ैत धरि अवश्य अछि। जकरा 'राउन्ड' चरित्र कहैत छिऐक से तं नहि भए पबैत छैक अथवा चरित्रक विकास मे मूलात्मक तं परिवर्तन नहि भए पबैत छैक, तथापि अग्रसर होएबाक कामना, किछु आगांक सत्य देखबाक आकांक्षा अपेक्षाकृत नारी चरित्र सभ मे अवश्य छैक। तें ओ चरित्र सभ बेसी विश्वसनीय दृष्टिगोचर होइछ।

नारी पात्रक चित्रणो राजकमल जीक बहुआयामी छन्हि। एक दिस जं पेटक ज्वालाकें शान्त करबाक लेल, अपन अस्तित्व रक्षाक लेल यौन-संबंधक देहरि पर पएर रखैत 'आकाश गंगा'क अन्नपूर्णा, 'दमयन्तीहरण' आ 'सहस्त्र मेनका'क नायिका अछि, तं दोसर दिस अपन दीनता, अपन अभगदशा सं संघर्ष करितहु, प्रतिक्षण मोने मोन टूटितहु मिथिलाक सांस्कृतिक ओ नारी आदर्शकें अक्षुण्ण रखनिहारि, अपन उज्ज्वल ओ मर्यादित चरित्र सं प्रतिष्ठापित कएनिहारि 'ललका पाग'क तिरू सन, फुलपरासबाली सन, 'घड़ी'क प्रोफेसर रजनीकान्तक विवाहिता सन, 'सांझक गाछ'क नायकक मलिन चेहरा वाली स्त्री, गुलाबदाइ सन चरित्र सभ हुनक कथा मे ठाढ़ अछि जे पाठककें एक दिस ओहन आदर्श चरित्रक उत्कर्ष दिस तं दोसर दिस कथाकार राजकमल जीक मिथिलाक नारी आदर्श ओ सांस्कृतिक सौष्ठवक प्रति हुनक अथाह मोह, आकर्षण तथा श्रद्धाशील संस्कार दिस प्रभावशाली रूप सं आकृष्ट करैत अछि।

'तिरू', प्रो. रजनीकान्तक विवाहिता, फुलपरासवाली, गुलाब दाइ सन मिथिलाक आदर्श नारीक चरित्रांकन मे, सरिपहुं, राजकमल अपन प्रतिभाक प्रदर्शन विलक्षण रूपें कएने छथि। आन कोनो नारी चरित्रक

अपेक्षा बहुत बेसी एहि उपरोक्त नारीक चरित्र अंकन लेल ओ सदैव मैथिली कथा साहित्य मे मोन राखल जएताह।

अपन पतिक सुख-शांति लेल जे त्याग तिरू 'ललका पाग' मे देखैने छथि, अपन इज्जति-प्रतिष्ठाकें जोगएबाक लेल जे सहास फुलपरासवाली रखैत छथि, पतिक अकर्मण्यता सं पीड़ित रहितो जे संतोष, जे समर्पण, जे मंगलकामनाक भाव गुलाब दाइ मे छन्हि, से मैथिल स्त्रीगणक 'टिपिकल' चरित्र अछि आ समस्त भारतीय नारी सं भिन्न अछि। एहि चरित्र सभक त्याग, प्रतिष्ठा रक्षा ओ समर्पणक भाव सं मानव जीवन मे जाहि उदात्त ओ भव्य मूल्यक स्थापन होइत अछि, से राजकमलक घनेरो आन कथाक नायिका नहि कए पबैत अछि।

कारण, हुनक एहन आन घनेरो चरित्र अन्हार मे अद्‌भुत भए अन्हारे मे भोतिआ जएबाक नियति प्राप्त कएने अछि। जाहि प्रवृत्तिक सीमा मे, बंधन मे ओहि चरित्र सभक दिनचर्या परिचालित होइछ ताहि मे निवृत्ति कोनो प्रकारें सहज आ संभव नहि होइछ। राजकमलजी खोज, अन्वेषण तं सभतरि कएलैन्हि-सभ चरित्र मे, सभ मनोदशा मे, सभ घटनावली मे, मुदा, निवृत्तिक मार्ग कतहु दृष्टिगोचर नहि भेलैन्हि। सभ रचना मे किछु हेरबाक, किछु देखबाक अगुताहटि छन्हि, मुदा चरित्र सभ मे प्रवृत्तिक प्रस्फुटन मात्र सं जाहि सत्यकें, जाहि शिवकें फूलक पतियानी अथवा हंसबलाका अथवा सांझक अन्हार मे देख चाहैत छलाह, से बुभुक्षा सं यौन धरि मात्रक यात्रा मे उद्‌भासित करब संभव नहि भेलैन्हि - 'सांझ पड़ि गेल। अन्हार। चारूकात भादवक कारी अन्हार। अन्हार मे हम भाइजीक प्रेत देखैत छी। अन्हार मे हम भगवती स्थानक चारूकात औनाइत छी। अन्हार मे हम तकैत छी, कोनो पिण्ड, कतहु जयबाक हेतु कोनो एकटा मार्ग, कोनो अर्थ, कोनो संगति... किन्तु ने प्रेत, आ ने भगवती, केओ हमरा इजोतक रस्ता नहि देखबैत अछि, एहि अन्हार मे।' (सांझक गाछ)

राजकमलजी नवताक पक्षधर छलाह। स्वातंत्र्योत्तर काल बोधकें समर्थ रूपें अभिव्यक्त करबाक लेल, जीवनक जटिलो पक्षकें सहज संवेद्य बनएबाक लेल ओ विषय-वस्तुक उपस्थापनक नव रीतिक आवश्यकता बुझैत छलाह। इएह कारण थिक जे ओ अपन पूर्ववर्ती कथाकारक शिल्प-विधानक अनुधावन नहि कएल। अपितु, अपन स्वतंत्र आ चमत्कारिक कथा कहबाक रीतिक अनुसंधान कएल।

हुनक कथा सभकें पढ़बा काल हुनक उपस्थापनक नाटकीयता, वृहत कथानकक त'र मे छोट कथानककें अभियोजित करबाक कौशल, पात्रोचित भाषा रखबाक सचेष्टता, कथानकक आन्तरिक रूपकें विषयान्तर भेलहु पर अक्षुण्ण आ एकसूत्रात्मक रखबाक क्षमता ओ जीवनक छोट-पैघ सभ गाथा कें वृहत्तर सार्वभौम जीवन दर्शन सं जोड़ैत कथाकें आगां बढ़एबाक हुनक चातुर्य, वास्तव मे, कोनो पाठकक मोन मोहि लेबाक सामर्थ्य रखैत अछि। हुनक कथा पढ़बा काल कोनो पाठक अकछाइत नहि अछि। अपन कथ्य दिस पाठककें एहि प्रकारें संलग्न करबाक राजकमलजीक क्षमता अत्यन्त मनोबेधक अछि।

हुनक शैल्पिक वैशिष्ट्यक अंतर्गत एक गोट ध्यातव्य विषय हुनक कथा समाप्तिक ढंग अछि। हुनक कथा सभक निरीक्षण सं ई स्पष्ट भए जाएत जे प्रायः सभ कथाक अन्त प्रश्नहि मे होइत अछि। कथाक समस्याकें राजकमलजी अपना दृष्टियें देखितहु ओकरा बुझबा लेल, सोझरएबा लेल पाठकक सहभागिता जेना अपेक्षित बुझैत छथि। तदर्थ, ओ अपन अपेक्षाकें, कथाक समस्याकें कथाक समाप्तिक क्षण मे एक गोट विराट प्रश्न जकां राखि दैत छथि।

तें कोनो पाठक हुनक कथाकें पढ़ि मात्र छुट्टी नहि पावि सकैत छथि। ओ पढ़िकें सोचबाक लेल, कथा मे उठाओल गेल प्रश्न कें विचारबाक लेल बाध्य भए जाइछ। हुनक कथाक ई शैल्पिक स्वरूप हुनक 'कथा समाप्तिक विघटन आ समस्या' शीर्षक निबंध मे निरूपित हुनक अभीष्ट लक्ष्यक प्राप्ति मे सोलहो आना सहायक होइछ।

वास्तव मे, पाठक कथाकें मात्र पढ़बे नहि करए, अपितु, कथाक माध्यमे वर्णित जीवनक समस्याकें बूझए, विचारए आ ओकर समाधानक मार्ग प्रशस्त करबा मे सहायक होअए, इएह थिक कथा समाप्तिक नव शैल्पिक रीतिक पाछां मे नुकाएल राजकमलजीक अभिप्रेत लक्ष्य।

मुदा, एहन शिल्पगत नवीनताक अछैतो ओहि मे कतोक ठाम स्थूलता छैक। आब जेना जीवनक छोट-पैघ घटनावली, जे कथा मे उपस्थापित कएल जाइछ, कें वृहत्तर जीवन-दर्शन सं जोड़बाक शिल्पकें लेल जाए सकैत अछि। कतहु सार्वभौम जीवन-दर्शनक अन्तर मे कथ्य रहैत अछि, तं कतहु कथ्यक अन्तर मे जीवन दर्शन। दूहू स्थिति मे दर्शनक आधिक्य रहितहि टा अछि। एहिठाम ई प्रश्न उठि सकैत अछि जे की कथा दर्शन (फिलॉसफी) थिक?

हम मानैत छी जे कथा मे स्वाभाविक रूपें दर्शन तत्व अथवा जीवन-दर्शन अन्तर्निहित अछि। मुदा, दर्शन कथा तत्वके 'ओभरलैप' करए, पुरैनिक पात जकां छापि लेअए-से समुचित नहि। कारण, ताहि सं कथा तत्वक संयोजन विखंडित होइत अछि। राजकमल जीक बहुतो कथा मे ई दोष न्यूनाधिक दृष्टिगत होइछ। 'सांझक गाछ' हमर एहि आरोपक सुन्दर उदाहरण अछि, जाहि मे दर्शन अथवा चिन्तनक बोझ त'र कथाक प्राण दबल प्रतिभासित होइछ।

हमर ई दृष्टिकोण अछि जे कथा मे दर्शनक अभिनिवेश तं होइतहि छैक। किन्तु, ताहि मे कथा-तत्व ओ दर्शनक अनुपातक ध्यान अवश्य राखल जएबाक चाही। कथा मे कथा-तत्व बरोबरि दर्शन किंवा चिन्तर तत्व सं बढ़ल-चढ़ल रहतैक आ कथा तत्वहिक आवेष्टन मे दर्शन समाविष्ट रहतैक। अन्यथा कथा, कथा नहि भए कए दर्शन भए जाएत। ओकर कलात्मक सौंदर्य विनष्ट भए जाएत। ■

भारतीय कथा साहित्यक विशिष्ट विधा : बिहनिकथा

✍ मनोज कर्ण 'मुन्ना जी'

शिक्षा : स्नातक प्रतिष्ठा
(मैथिली साहित्य)
व्यवसाय : अभिकर्ता,
भारतीय जीवन बीना निगम।
नई दिल्ली
मैथिली मे 400से ज्यादा
बीहनिकथा लेखन।
कविता/हाइकु प्रकाशित।

समय सदिखन गतिमान रहैछ! आ अपन गतिक दिशामे स्थान, आ परिस्थितिक संग परिवर्तनशीलताक अनुभव करबैत रहैछ। लोक सेहो समयक संग अपन प्रगतिक बाट तकैत देखाइछ। आओर तें, ठाम-ठीम समयक पलखति ल' करैत रहैछ नव-नव सर्जना, सर्जनाक चिंतन परिणाम मे दैछ नव गढ़नि। गरदनि मोकि गढ़ब कोनो कला नै छै, कलात्मकताक बोध त' करबंद नव सृजन, जे अपन पैरूख पर ठाढ़ भ' देखार हुअए।

कथा-कहानी सेहो समय, परिस्थिति आ स्थानक संग नव गढ़नि मे सोझां अबैत रहैछ। प्राचीन काल मे मौखिक रूपें खिस्सा पिहानी एक पीढ़ी सं दोसर पीढ़ी मे हस्तान्तरित होइत रहल। जखन मोइस, कलम आ कागत अपन उपयोगिता मे एलै तकर पछाति मौखिक खिस्सा-पिहानी आब सहेजल जा लगलै आ पीढ़ी दर पीढ़ी रूप-प्रतिरूप मे बदलैत जग्गह पर जा ठाढ़ भेल। तें हम सब अपन साहित्यक पुरुखाक गाड़ल खाम्ह पर ठाढ़ साहित्यक नव-नव आयाम सं सोझां-सोझी भ' पबै छी। खिस्सा-पिहानी साहित्यक प्रारंभिक दौड़ मे कथा कहि लिखल जाए लागल। आ विशिष्ट बात के कथा कहि शोरहा होइत रहल। समयानुसार ओकर गात मे आ गति मे परिवर्तन स्वाभाविक सन, से मैथिली कथा मे सेहो भेल आ उठैत-बैसत, कुहरैत, हकमैत मैथिली कथा, कथाधारा मे प्रवेश क' अपन मोकाम हासिल केलक।

मैथिली मे कथा-प्रामाणिक आ साहित्यक इतिहासक साक्ष्ये लघुकथा (Short Story) कहबैछ। जे हम नै कहै छी। कहने छथिन रमानाथ झा, जयकान्त मिश्र[1]। सांच पुछी त' कथा कोनो विधा नै, एकटा प्रतीक अछि। किएक त' सब विधा मे कथा तत्व विद्यमान रहैछ, से हएब आवश्यक बुझू। चाहे नाटक हो वा काव्य। आजुक युग मे कविता मनमर्जीये लिखब सहरगंजा भेल अछि। मुदा जाहि कविता मे कथा नै ओ कविता कथमपि नै भ' सकैए। ई, शब्द संगोरक स्थूल प्रतिरूप बुझू। आब ई स्पष्ट बुझू जे जेना दवाइ मे जेनेरिक नाम छै आ ओकर सदृश्य कतेको भिन्न नामे दवाई उपलब्ध अछि, ठीक तहिना साहित्य मे कथा एकटा जेनेरिक विधा संकेत भेल।

मैथिली मे पहिल लघुकथा अछि काली कुमार दासक भीषण अन्याय (1923) ओना जयकान्त मिश्रक अनुसार कुमार गंगानन्द सिंह लिखित उपन्यास अगिलही (1935) पूर्ण उपन्यास नै भ' क' एकटा लघु कथा मात्र रहि गेल।[2] त' एत' ई फरीछ अछि जे मैथिली साहित्यक गद्यक प्रारंभिक लेखन उपन्यास सं भेल। आगू ओकरा धकियबैत लघुकथा लेखन प्रारम्भ भेल। माने मैथिली मे लघुकथा लेखन 19म सदीक दोसर वा तेसर दशक के मानल जा सकैए। मैथिलीक एक मात्र महान् उपलब्धि थिक लघुकथा वा गल्प। पहिलुक रचनाकार सब उपन्यास आ गल्प अय दुनू विधा मे अन्तर नै बुझे छलाह।

संपर्क : *मिथिला जनरल स्टोर्स, सूरज बिल्डर्स वाली गली, विनय नगर ददसिया रोड, सूर्या विहार-3, सेक्टर-91, फरीदाबाद, (हरियाणा) पिन कोड- 121003*
मोबाईल : *9540095340,* ***ईमेल :*** *manojkumarkarn71@gmail.com*

अय दुनू विधा (यथा- उपन्यास आ लघु कथा) मे अन्तर लगभग 1920 सं स्पष्ट भेल।[3]

एकटा आवश्यक जनतब ई जे मैथिली रचनाकार/विद्वान, कहियो मैथिली संदर्भित अपन भाषाक आसन पर कोनो काजक पूर्ण निर्वाह नै केलनि। ओ सब दोसरे भाषा साहित्य वा विदेशी शोधकर्ता पर आश्रित भ' गौरवान्वित होइत रहलाह जेना ग्रियर्सन। मैथिली कथा लघुकथा के गल्प नाम देलनि, जनतब हो जे गल्प संस्कृतक जल्प सं उत्पन्न आ प्रेरित अछि। संस्कृत मे बंग्लाक शब्द छी, मैथिलीक नै। कतेक हास्यास्पद। मैथिली लघुकथा (जे कथा नामे लिखाइत रहल) के अपन एकटा समृद्ध आ स्वतंत्र स्थान छेकल छैक। से एकर फरिछौट केलनि रमानाथ झा एकरा लघुकथा कहिक'। ने त' अय सं, पहिने रचनाकार (कथाकार) सब मैथिली कथा के हिन्दी बलाक कहानी के कहानी लिखल देखांउसे कथा के अंग्रेजी मे story लिखैत छलाह।

अद्यावधि जतेक मैथिली लघुकथा संग्रह, कथा संग्रह कहि प्रकाशित अछि सब मे अंग्रेजी मे लिखल भेटल (Collection of Maithili Short Stories) एकर प्रामाणिकता स्थापित भेल मैथिली साहित्यक इतिहास सं जाहि मे कथाक जिक्र कतौ नै भेटत, संबोधन मे सब ठाम लघुकथा (Short Stories) अछि।

मैथिली मे कथा के आओर फरिछबैत मैथिलीक व्याख्याता आ साहित्य अकादमिक पूर्व संयोजक एवं कथाकार आदरणीय श्री रामदेव झा व्याख्यान द' चुकल छथि। ई व्याख्यान ओ पटना विश्वविद्यालय द्वारा 1975 मे आयोजित एकटा व्याख्यानमाला (संगोष्ठी) मे देलनि। आ ओ पूर्णत: खोंइचा छोड़ा क' स्पष्ट केलनि - ''मैथिली मे लिखल जाए बला कथा, लघुकथा (Short Stories) थिक।''[4]

आब एकटा तुलनात्मक विवेचन हिन्दी लघुकथा सं।

हिन्दी बला सब मैथिलीक कथा सदृश्य रचना के कहानी कहि लिखैत छलाह। जहन पश्चिमी भाषा प्रभावे वा खलिल जिब्रान सं प्रभावित भ' छोट-छोट कहानीक सृजन प्रारम्भ भेल, तहन ओ भेल लघुकथा। ओना हिन्दीक लघुकथा कतेक नाम आ चरण पार करैत लघुकथा नाम पर आबि ठमकल। प्रारम्भ सं इहो-लघुकहानी, छोटी कहानी, मिनी कथा, मिनी कहानी आदि नामे संबोधित होइत रहल। सम्प्रतियो लघुकथा आ लघु कथा लेल उठापटक होइत देखल जा सकैए।

हिन्दी बला सब मैथिलीक कथा सदृश्य रचना के कहानी कहि लिखैत छलाह। जहन पश्चिमी भाषा प्रभावे वा खलिल जिब्रान सं प्रभावित भ' छोट-छोट कहानीक सृजन प्रारम्भ भेल, तहन ओ भेल लघुकथा। ओना हिन्दीक लघुकथा कतेक नाम आ चरण पार करैत लघुकथा नाम पर आबि ठमकल। प्रारम्भ सं इहो-लघुकहानी, छोटी कहानी, मिनी कथा, मिनी कहानी आदि नामे संबोधित होइत रहल। सम्प्रतियो लघुकथा आ लघु कथा लेल उठापटक होइत देखल जा सकैए।

ई प्रचलित अछि जे मिथिला मे विद्वानक कमी नै, मुदा मिथिला वा मैथिलीक खांटीपनक अवधारणा अन्हराएल वा पछुआएल सन। जं से नै रहैत त' मैथिली लघुकथा मूल रूपें सोझां अबैत मुदा एकर प्रारम्भ भेल विद्यापतिक संस्कृत मे लिखल 'पुरुष परीक्षा'क उल्था (अनुवाद) सं। एहि प्रकारे मैथिली लघुकथाक प्रेरणा स्रोत छथि- विद्यापति।

आब ई पूर्णत: स्पष्ट वा विश्वस्त भेलहुं जे मैथिली मे कथा नामे लिखल जाए बला रचना, विधागत लघुकथा थिक। जं मैथिली साहित्य मध्य लघुकथा विधा पहिने सं ऐतिहासिक आ प्रामाणिक रूपें विद्यमान अछि तहन छोट कथा के हिन्दी बलाक देखाऊंसे पुन: लघुकथा विधाक रूप मे प्रारंभ करब कतेक हास्यास्पद। ई विश्वस्त नै भ' सकलौं जे हिन्दी लघुकथाक समकक्ष मैथिली रचनाक अपनाएब तत्कालीन रचनाकारक भ्रम छल आ कि अज्ञानता। कि हुनका अय तरहक रचना विधा लेल मैथिलीक उचित शब्द (खांटी शब्द) नै भेटलनि आ कि ओ सब तकर प्रयोजन नै बुझलनि।

बीसम सदीक सातम दशक मे हिन्दी रचनाकार (लघु कथाकार) क देखाऊंसे मैथिली मे सेहो छोट कथा के 'लघुकथा' नामे लिखब शुरू भेल। मुदा तत्कालीन समीक्षक/संपादक द्वारा अबडेरल रहल। आइ धरि मैथिली मे हिन्दी लघुकथाक समकक्ष मैथिली मे लिखल जाए बला 'लघुकथा' पर आधारित एको गोट आलेख नै आयल। लघुकथाक कोनो गोष्ठी/ सेमिनार नै भेल। हं, किछु व्यक्तिगत संग्रह अवश्य आयल बस ततबे! पहिल बेर हम प्रकाशित सब संग्रह पर विश्लेषणात्मक आलेख लिखि स्पष्ट केलहुं, मुदा ओकर शीर्षक ऐछ - ''बीहनिकथाक संसार''[5] आइ धरि कोनो पत्रिकाक 'लघुकथा विशेषांक' नै बहार भेल। आदरणीय गंगेश गुंजन एवं अन्यान्य कथाकार, समीक्षक, संपादक एकरा चुटुक्का कहि अबडेरने रहलाह।

बीहनिकथाक परिदृश्य

उपरोक्त विश्लेषण सं ई स्पष्ट अछि जे-मैथिली मे कथा नामे लिखल जाए बला रचना 'लघुकथा' थिक आ हिन्दी लघुकथाक समकक्ष रचना थिक बीहनिकथा (Seed Story)।

फरवरी 1995 मे हिन्दी लघुकथाक समकक्ष रचना के 'बीहनिकथा' नामे लिखबाक निर्णय एकटा सामुहिक बैसार मे

लेल गेल। जकर आयोजन 'सहयात्री मंच' लोहना (मधुबनी) द्वारा कएल गेल छल। मुन्नाजी द्वारा एकर जन्म आ आदरणीय श्री राज द्वारा शुद्ध खांटी शब्द 'बीहनिकथा'क नामकरण कएल गेल। उक्त बैसार आ निर्णय मे सहभागी छलाह- श्री शैलेन्द्र आनन्द, भवनाथ झा, प्रेमचन्द्र पंकज, विजयानन्द हीरा, प्रो. अतुलेश्वर झा, अखिलेश्वर झा, सचिदानन्द सच्चु, डॉ. बी.के. लाल, डॉ. ललन प्रसाद... आदि।

'बीहनि' माने भेल दुपतिया बीया। जेना एकटा बीहनि गाछक संपूर्णताक प्रतीक अछि। तहिना बीहनि कथा अपने आप मे एकटा संपूर्णकथाक द्योतक अछि। बीहनि कथा ने कोनो कथाक छैंट अछि ने कटपीस। ओ अपने आप मे छोट आकार मे संपूर्ण कथा अछि। ई अपन कथ्य आ शिल्प मे हिन्दी लघु कथाक समकक्ष मानल जा सकैए। ई काज अग्रज सब प्रारम्भहि मे क' मैथिली लघुकथा आ हिन्दी लघुकथा के फुटका क स्थापित क' सकै छलाह। मुदा ताहि चेतनाक अभाव। नै त हिन्दी लघुकथाक समकक्ष रचना पंजाबी मे शुरूहें सं मिन्नी कथा/कहानी नामे लिखाइत स्थापित अछि। तहिना संस्कृत मे लघ्वी, उर्दू मे अफसाञ्चे, बंग्ला मे ए मिनेटर कथा, उड़िया मे खुदुकथा (क्षुद्रकथा)... आदि।

अब प्रश्न उठैछ जे-हिन्दी लघुकथाक समकक्ष रचना सभ क्षेत्रीय भाषा मे अपन स्वतंत्र शब्दे (नामे) लिखा रहल छल, तहन मैथिली मे किएक नै?

की मैथिली रचनाकार के अवगति नै, अपन शब्द प्रयोगक आ कि मैथिली भाषा मे शब्द शून्यता वा रचनाकारक अज्ञानता। ताहि सभक समाधान करैत जनमल बीहनिकथा संग्रह प्रकाशित भ' चुकल अछि। किछु चर्चित संग्रह अछि - बजन्ता-बुझन्ता, जगदीश प्रसाद मंडल, प्रतीक-मुन्ना जी, उपरान्त-घनश्याम घनेरो, वैशाख मे दलान पर-संदीप साफी, रथक चक्का उनटि चलैए-कपिलेश्वर राउत... आदि।

पहिल बाल बीहनिकथा संग्रह-तरेगण-जगदीश प्रसाद मण्डल दोसर संस्करण आबि सगरो पसैर चुकल अछि।

बीहनि कथा लिखब त' 1995 मे प्रारम्भ भेल मुदा दाबल कतिआएल रहल। प्रारम्भ सं श्री परमेश्वर कापड़ि, जगदीश प्रसाद मंडल, उमेश मंडल, अशरफ राइन, गजेन्द्र ठाकुर, सचिदानन्द सच्चु, ब्रह्मानंद मण्डल, शेफालिका वर्मा, मुन्नाजी, मलय नाथ मिश्र, आशीष अनचिन्हार, विनीत उत्पल, जगदानन्द झा मनु, ओमप्रकाश झा आ जवाहर लाल कश्यप... आदि निरन्तर लेखन क' एकरा मजगूत केलनि। ई बेशी जगजियार भ' पाओल विदेह पाक्षिक के 67म अंकक बीहनिकथा विशेषांक एला पर।

'बीहनि' माने भेल दुपतिया बीया। जेना एकटा बीहनि गाछक संपूर्णताक प्रतीक अछि। तहिना बीहनि कथा अपने आप मे एकटा संपूर्णकथाक द्योतक अछि। बीहनि कथा ने कोनो कथाक छैंट अछि ने कटपीस। ओ अपने आप मे छोट आकार मे संपूर्ण कथा अछि।

जाहि मे सब भ्रम दूर क' मैथिली कथा ऐतिहासिक प्रमाणे लघुकथा आ हिन्दी लघुकथाक समकक्ष रचना मैथिली मे थिक बीहनि कथा, स्पष्ट भ' अपन पैरूख बनेबा मे सक्षम भेल।

आब देखू-

मैथिली लघुकथा (जे कथा नामे लिखाइ छल) आ हिन्दी लघुकथा सं कोना विशिष्ट अछि मैथिली बीहनिकथा! मैथिली लघुकथा (कथा) विद्यापतिक 'पुरुषपरीक्षा'क अनुवाद सं प्रारम्भ भ' अपन मूल लेखनी दिस बढ़ल। एहि सं पहिने मैथिली मे एहेन कोनो रचनाकार नै छलाह वा हुनका मे लुरि, बुधि नै छलनि जे स्वतंत्र रूपें मूल रचना क' पबितथि एहि प्रकारें गर्व सं ई कहि सकै छी जे मैथिली लघुकथाक प्रेरणास्रोत विद्यापति छलाह।[6]

हिन्दी लघुकथा पांच-छह दशक लिखेला पछातियो अन्हराएल बाट पर अछि। लघुकथा नामकरण सं पहिने कतेको नामे लिखाइत रहल हिन्दीक लघुकथा यथा- लघु कहानी, छोटी कहानी, मिनी कहानी... आदि। एतेक दशक पछाति आइयो लघुकथा आ लघुकथा पर उठापटक जारी अछि। एक डेग आओर आगू बढ़ि देखू हिन्दी लघुकथाक अंग्रेजी शब्द पर 2018 मे आबि बहस होइए आ मधुदीप गुप्ता जी द्वारा फरमान जारी भेल- जे हिन्दी लघुकथा अंग्रेजी मे (Laghu Katha) लिखल जाए, खूब उकस-पाकस मचल। मधुदीप जी सं हमर प्रश्न छल - श्रीमान् लघुकथा के लेल अंग्रेजी मे Short Story प्रचलित शब्द अछि। उतारा देलनि - विधाक नाम अछि ते एहिना रहत। पुन: हमर प्रश्न- तहन कहानी के Kahani किए नै लिखै छी? आइ धरि निरन्तर!

कतेक चिन्तनीय आ निन्दनीय अछि मैथिली रचनाकारक मानसिक स्थिति जे स्वयं अव्यवस्थित अछि (हिन्दी लघुकथा) तकरा अपन भाषा मे अनुकरण आ जबरदस्ती लेखनक अकरहड़ खुनि उधियाई छथि।

मैथिली मे लघुकथा (कथा नामे) पहिने सं स्थापित छल। तें हिन्दी लघुकथाक समकक्ष रचना के मैथिली मे लघुकथा कहबाक द्वन्द्वता वा भ्रमक जग्गह शुन्य बुझू। तें उत्पत्ति भेल बीहनिकथा, जे मैथिली लघुकथा सं भिन्न स्वतंत्र नामे मात्र नै, कथ्य आ शिल्प मे आधुनिक अवस्था मे परिमार्जित भ' स्थापित भेल। ई कोनो अनुवादे आ कि कोनो अन्यान्य भाषाक नकल सं नै। अपन खाता-खेसरा मे जनमि नव साहित्यक सीमान कायम केलक।

आइ बीहनिकथा पुरान लेखक सं नवतुरिया धरिक कलम सं धुरझार लिखा रहल अछि। मैथिली मे जत' कविक अंबार चलैत देखल जाइए ओहि स्थिति मे मैथिली लघुकथा (कथा नामे) लेखन शुन्यताक भाव देखि स्थिति दयनीय आ चिन्तनीय छल। मुदा बीहनिकथाकारक सक्रिय लेखन सं ओ शून्यताक अवधारणा मेटा गेल। आब समयक मांग आ परिस्थिति जन्य पठनीय खगता आ ओकर पुर करबा मे पुर्णत: सक्षम भ' मैथिली कथा साहित्य मे बीहनिकथा अपन गोरा बैसा लेलक अछि। एकर विश्वसनीयता आ लोकप्रियताक भान करैत अन्यान्य भाषाक पत्र पत्रिका एकरा मूल रूपें छापब शुरू क' देलक अछि। संग्रह एला पर अंग्रेजी शब्दक खांहिस भेलै। जकरा Seed Story शब्द ताक' वा नकल नै कर' पड़लै सब संग्रह मे - Collection of Seed Story स्वत: आबि संग भ' गेलै।

आब मैथिली कथा साहित्य मे मूलत: दू विधा। उपविधा स्पष्टत:' बांचल रहि स्थापित भेल ओ अछि- लघुकथा (Short Story) आ बीहनिकथा (Seed Story) आब स्पष्ट अछि जे समयक खगतानुसार मैथिली मे बीहनिकथा 21म सदी मे एकछत्र भ' राज करत आ आगू 21 सदी धरि स्थापित रहत। पखक पख बीतैत गेलै। कखनो अन्हरिया, अमावश्या त' अगिला खेप इजोरिया, पुर्णिमा। तहिना नक्षत्र दर नक्षत्र चित्रा-हथिया। बसात- पूरबा-पछिया। झांट-बिहाड़ि सब के सहलक बीहनिकथा (Seed story) बाट सेहो गोलिएल, खघिएल, उकरू सन! बाट रोकबा लेल कतेको अतहतह। मुदा अपन भाषा मैथिलीक खांटी बीहनि (शब्द) भेने किछु-किछु कहियो-कहियो अतराइत मुदा पसरैत-चतरैत रहल आ आब मैथिली कथा साहित्य मे अपन जग्गह कायम क' लेलक।

जाहि मे नारायण मधुशाला, ज्योति सुनीत चौधरी, कल्पना झा, राम कुमार मिश्रा, दिनेस रसिया, मुन्नी कामत, राजकुमार मिश्र, नीरज कर्ण, सत्यनारायण झा, राजीव कर्ण एवं सब सं सशक्त भ' विद्याचन्द्र झा बम बम प्रभृति रचनाकार आगू ल' जेबा मे सक्षमशील भ' रचनारत छथि। ■

संदर्भ

1. मैथिली साहित्यक इतिहास- जयकान्त मिश्र, प्रकाशक- साहित्य अकादमी।
2. गद्य खण्ड मै.सा. इतिहास - जयकान्त मिश्र, प्रकाशक- साहित्य अकादमी।
3. कथाक विकास - सं. बासुकीनाथ झा, प्रकाशक- साहित्य अकादमी।
4. कथा व्याख्यान माला - प्रकाशक पटना विश्वविद्यालय 1977
5. घर-बाहर - चेतना समिति, अप्रैल जून 2012
6. मैथिली कथाक विभास - सं. बासुकीनाथ झा, प्रकाशक- साहित्य अकादमी-2003

मिथिलाक्षर ज्ञान प्रतियोगिता - 4

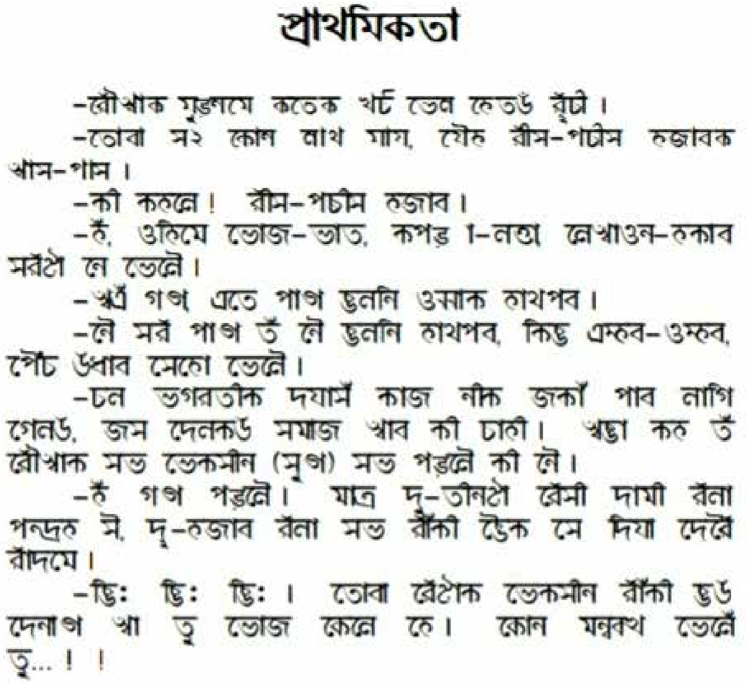

मिथिलाक्षर चिन्हु आ ईनाम पाबु

अखिल भारतीय मिथिला संघ समस्त मैथिल संस्कृति आ पहिचानक संरक्षण लेल सदिखन प्रयत्नशील अछि। एहि क्रममे नव प्रयास अछि: मैथिल जन कें मिथिलाक्षर सं जोरबाक प्रयास।

एहि प्रयासमे तीरभुक्तिक हरेक अंकमे किछु सामग्री मिथिलाक्षरमे प्रकाशित कएल जाएत। जकर देवनागरी लिप्यांतरण पाठकगण सं आमंत्रित रहत।

सर्वश्रेष्ठ लिप्यांतरण कय पठेनिहार पाठक कें अखिल भारतीय मिथिला संघ दिसि सं 500 टाका मूल्यक पुरस्कार प्रदान कएल जाएत।

लिप्यातंरण क' अपन प्रविष्टि teerbhukti maithili@gmail.com पर ईमेल सं वा संपादकीय कार्यालय: 20, कोपरनिकस लेन, मंडी हाउस, नई दिल्ली- 110001 पर डाक सं पठाओल जा सकैछ।

मिथिलाक्षर ज्ञान प्रतियोगिता क्रमांक-2 केर विजेता

1. मनोरमा झा, डी-5/डी-1/डी, लेडीज डोरमिटरी एरिया, मैथन डैम, जिला-धनबाद, झारखंड, पिन-828207

मैथिली लघुकथाक मादे

✍ डॉ. सत्येन्द्र कुमार झा

शिक्षा : एमए, पी.एचडी सम्प्रति: सहायक प्राध्यापक, मैथिली विभाग, सी. एम.साइंस कॉलेज, दरभंगा-846004 प्रकाशन : 2007 मे लघुकथा संग्रह - 'अहींकें कहै छी' आ 2018 मे कविता संग्रह -'स्वप्नमे इन्द्रधनुष' प्रकाशित। मैथिली आ हिन्दीक लव्धप्रतिष्ठ पत्र-पत्रिका आ संग्रहमे अनेक रचना सभ प्रकाशित।

लघुमे कथाक योगसं लघुकथा शब्द निर्मित होइत अछि मुदा वास्तविक रूपमे कथा संग लघु शब्द सटैत अछि तखन लघुकथा बनैत अछि। कथा तं छैहे मुदा ओकर लघुस्वरूपें ओकरा कथासं इतर एकगोट नव विधाक रूपमे स्थापित करैत अछि, सुप्रतिष्ठित करैत अछि। संगहि लघुकथाक मादे विमर्श करैत काल एतेक ध्यानमे राखब आवश्यक जे लघुकथा कथाक वामन स्वरूप नहि थिक आ ने ओकर अपंग संस्करण। एकर परिचिति एकदम फराक छै आ एकर तन ओ आत्मामे पृथक् विधाक लक्षण देखबामे अबैत अछि। हिन्दीक प्रख्यात कथाकार बलराम सेहो लघुकथाकें कथाक छोट स्वरूप नहि मानैत छथि, अपितु ई एकठाम लघुकथाक संदर्भमे चर्च करैत एतेकधरि कहि दैत छथि जे ई असफल लेखकक विधा सेहो नहि अछि अर्थात् किछु लोक अवश्य एहन हेता, चाहे जाहि भाषामे होथि, जे लघुकथा लेखककें महत्वहीन आ अनुल्लेखनीय रचनाकार बुझैत हेता।

वस्तुत: लघुकथा परम्परागत कथा-लेखनमे पंच, परिहास, गल्प, गप्प, चुटकुला सबहिक पर्याय अछि। आरंभमे लघुकथा द्वारा हास-परिहास, पंच आ चुटकुलाकें साहित्य स्तर पर अनबाक प्रयास छल, जे समयक संग तीक्ष्ण व्यंग्य धरिक यात्रा केलक। ओहुना चुटकुला आ व्यंग्यमे पर्याप्त अंतर अछि-व्यंग्य आहत मनसं निकसल सांकेतिक स्वर होइछ जकर प्रकृति आक्रामक होइछ मुदा चुटकुलामे एहि आक्रामकताक अभाव रहैछ। व्यंग्यमे जे वैचारिक गंभीरता रहैछ से चुटकुलामे प्राय: नहि देखबामे अबैछ।

लघुकथाक बीज प्राचीन ग्रंथ सभमे नुकायल अछि। लघुकथाक इतिहास वैदिक ग्रंथ सभक संग ब्राह्मण, उपनिषद, पुराण, जातक कथा आदिमे ताकल जा सकैत अछि।

किछु विद्वान एकरा पश्चिमक देन सेहो कहैत छथि। मुदा वर्त्तमानमे जाहि रूप-रंगक संग लघुकथा सोझां अबैत अछि, तकर स्वरूप पश्चिममे ताकब व्यर्थ थिक। पश्चिममे 'फ्लैश फिक्शन' विधा जकरा हम लघुकथा कहि सकैत छी, तकर उत्पत्ति जेम्स थॉमस, डेनिस थॉमस आ टॉम हजूका द्वारा सम्पादित पोथी '72 वेरी शॉर्ट स्टोरीज' सं मानि सकैत छी। एहि 'फ्लैश फिक्शन' केर संदर्भमे कहल गेल अछि जे "The term FLASH FICTION may have originated from a 1992 anthology of that title and as the editors said in their introductions, their definition of a FLASH FICTION was a story that would fit on two facing pages of a typical digest sized literacy magazine or about 750 words."

उपर्युक्त व्याख्यासं लघुकथाक बगय-बानिकें अकानल जा सकैत अछि।

__संपर्क__ : सहायक प्राध्यापक, मैथिली विभाग, सी.एम. साइंस कॉलेज, दरभंगा-846004
मोबाइल: 9835684869, इमेल: satyaprit69@gmail.com

मुदा एतय हमर आलेख मैथिलीक लघुकथाक संदर्भमे विचार करत आ तें हिन्दी वा वैश्विक जगतमे लघुकथाक संक्षिप्त परिचय देलाक पश्चात् हम अपन ध्यान पूर्णत: मैथिलीक लघुकथा दिस घुमाबय चाहैत छी।

वर्त्तमानमे मैथिली लघुकथा साहित्यक एक प्रमुख विधाक रूपमे अपन परिचिति स्थापित क' चुकल अछि। मैथिलीक विभिन्न पत्र-पत्रिकामे सतत लघुकथाक प्रकाशन भ' रहल अछि आ अनेक रचनाकारक पोथी एहि विधाकें समर्पित कैल जा रहल अछि। मैथिली लघुकथाक संदर्भमे यद्यपि डॉ. अमरेश पाठक अपन पोथी 'मैथिली उपन्यासक आलोचनात्मक अध्ययन'मे लिखैत छथि जे 'लघुकथा शब्दक मैथिलीमे कोनो विवेचन नहि भेल अछि' आ एहि विषय पर डॉ. रामदेव झाक कथन छनि जे 'शॉर्ट स्टोरीक मैथिली अभिधान देबाक प्रयत्नक क्रममे अनेक शब्दक प्रयोग कयल जाइत रहल अछि, यथा-लघुकथा, गल्प, कथा, कहानी इत्यादि। किन्तु कालक्रमे मैथिली साहित्यमे शॉर्ट स्टोरीक हेतु 'कथा' अभिधान सैह सर्वस्वीकृत भ' गेल अछि।' एकर तात्पर्य ई जे मैथिली लघुकथा अंग्रेजीक शॉर्ट स्टोरीक पर्याय नहि थिक अपितु एकर अपन अस्तित्व छैक आ ई 'कथा'क समक्ष छाती तानि ठाढ़ अछि।

आचार्य सुमन लघुकथाकें कथा-कणिका कहलनि अछि आ लघुकथाकें मैथिली साहित्यक लेल एकगोट उपलब्धि मानैत कहैत छथि जे 'लघुतर- लघुतम कथा-शिल्पक विन्यास मैथिली साहित्यमे आरंभ अछि जे सर्वथा श्लाघनीय मानल जायत।'

भिन्न-भिन्न विद्वान मैथिली लघुकथाक संबंधमे अपन विचार व्यक्त केने छथि मुदा हमरा बुझने संक्षिप्त कथा जाहिमे व्यंग्य ओ मारक क्षमता विद्यमान हो, लघुकथा नामसं संबोधित कएल जा सकैत अछि। एकर स्वरूप एकरेखीय होइत अछि आ कथ्य रूपें एकरा बेसी विस्तार नहि देल जा सकैत अछि। एहि प्रसंगे विभूति आनंदक कथन सोलहो आना सत्य अछि जे 'कथा होइत अछि चुट्टी आ लघुकथा घोरन। दंश दुनूक भीतर छैक मुदा बिसबिस्सीमे अंतर छैक।'

लघुकथाक यैह दुनू विशेषता छैक- दंशक बिसबिस्सी आ व्यंग्य। कहि सकैत छी जे एकहिटा-व्यंग्य आ ओहिसं उत्पन्न बिसबिस्सी।

मैथिली साहित्यमे लघुकथाक आरंभ 1950 ईस्वीमे 'वैदेही' पत्रिकासं मानल जाइत अछि। एहिमे श्रीचन्द्रनाथ मिश्र अमरक तीन गोट लघुकथासं मैथिली लघुकथाक श्रीगणेश भेल। ई तीन लघुकथा छल- भुजा, अनन्त पूजा आ नैयायिक। मुदा किछु विद्वान 1937 मे प्रकाशित सुरेन्द्र झा सुमनक 'विपरीत घटना' सं मैथिली लघुकथाक आरंभ मानैत छथि। एकर पश्चात् मैथिलीक विभिन्न पत्र-पत्रिका सभमे मैथिली लघुकथा प्रकाशित होइत रहल, जाहिमे मनमोहन झा, सोमदेव, रामदेव झा, यात्री, गंगेश गुंजन, सुभाषचन्द्र यादव आदिक रचना बेसी उल्लेखनीय छल। पत्रिका सभमे सर्वाधिक लघुकथाक प्रकाशन मिथिला मिहिरमे भेल।

मैथिली साहित्यमे लघुकथाक आरंभ 1950 ईस्वीमे 'वैदेही' पत्रिकासं मानल जाइत अछि। एहिमे श्रीचन्द्रनाथ मिश्र अमरक तीन गोट लघुकथासं मैथिली लघुकथाक श्रीगणेश भेल। ई तीन लघुकथा छल- भुजा, अनन्त पूजा आ नैयायिक। मुदा किछु विद्वान 1937 मे प्रकाशित सुरेन्द्र झा सुमनक 'विपरीत घटना' सं मैथिली लघुकथाक आरंभ मानैत छथि।

क्रमश: मैथिली लघुकथा अपन चिन्तन आ स्वरूपकें गंभीरता प्रदान केलक आ चुटकुलाक झोंझसं स्वयंकें बाहर करैत सामाजिक सरोकारसं प्रत्यक्ष रूपें जुड़ल आ विभिन्न स्थिति- परिस्थितिक सूक्ष्मतापूर्वक अवलोकन करैत गंभीर व्यंग्य ओ दंश उत्पन्न करैत लघुकथा विधाकें सार्थकता प्रदान केलक। पत्र-पत्रिकामे छिड़ियायल विभिन्न लघुकथा सभ एकर गवाह बनल।

पोथीक रूपमे लघुकथाक प्रकाशन 1975 मे भेल 'क्षणिका' नामसं, जकर लेखक छथि अमर नाथ झा। एहिमे तीस गोट लघुकथा सम्मिलित अछि, ओना 1972 मे हंसराजक 'जे किने से' सेहो एही विधाक रचना मानल जाइत अछि। तकर बाद एकटा नम्हर विराम एहि विधा मध्य उपस्थित भेल जकर समाप्ति भेल 1996 मे प्रदीप बिहारीक 'खण्ड-खण्ड जिनगी' केर प्रकाशनक संग। एहिमे सताइस गोट लघुकथा सम्मिलित अछि। 1997 मे प्रकाशित तारानन्द वियोगीक 'शिलालेख' अड़तालीस गोट लघुकथाक संग्रह अछि। 2001 मे बैकुण्ठ झाक 'बुझनुक' सेहो प्रकाशित भेल आ 2003 मे डॉ. धीरेन्द्र सिंह 'जो गै बसंती' केर संग लघुकथा विधाकें सशक्त बनाओल।

2007मे दूगोट उल्लेखनीय पोथी प्रकाशित भेल: श्रीचन्द्रनाथ मिश्र अमरक 'दहीक खुइंचा' आ सत्येन्द्र कुमार झाक 'अहींकें कहै छी'। सत्येन्द्र कुमार झाक संग्रहमे एकावन गोट लघुकथा संकलित अछि। अनेक हिन्दी पत्र-पत्रिका पहिल बेर मैथिली लघुकथा संग्रहक समीक्षा प्रकाशित केलक। 2010 मे जगदीश प्रसाद मंडलक 'तरेगन' संग्रह सोझां आयल।

वर्त्तमानमे अनेक वरीय ओ कनीय लेखकगण लघुकथा लेखनमे संलग्न छथि, जाहिमे मधुकर भारद्वाज, बैकुण्ठ झा, ओपी झा, सुरेन्द्रनाथ, अनमोल झा, मिथिलेश कुमार झा, कुमार मनोज कश्यप, उमेश

मंडल, मुन्नाजी आदिक नाम विशेष उल्लेखनीय अछि।

मैथिलीक ई-पत्रिका 'विदेह' सेहो निरंतर लघुकथा प्रकाशित करैत आबि रहल अछि आ लघुकथा पर विशेष अंक सेहो प्रकाशित क' चुकल अछि।

एम्हर 2016 मे अनमोल झाक 'मेघखण्डमे चन्द्रमा', 2017 मे 'होसिआरि', 2018मे 'यथार्थक भूमि पर', मनोज कश्यपक 'एक ठोप इजोत' 2017मे, करुणा झाक ' जीवनदान' सेहो प्रकाशित भेल अछि। संगहि लप्रेक नामसं 'प्रेमक टाइमलाइन' आ विभूति आनंदक ' ईस्स' आ 'भक्क्' सेहो प्रकाशित भेल अछि।

अस्तु, कहबाक अभिप्राय जे मैथिली लघुकथा अपन शिल्प आ संवेदनाक निरंतर विस्तार करैत प्रगतिगामी अछि। मैथिली लघुकथा गाम आ खेत-खरिहानक संग मध्यवर्गीय नगरीय विकृति, नारी उत्पीड़न, आडंबर, कुत्सित मानसिकता पर प्रहार करैत वैश्विक चिन्तन धरिक यात्रा करैत देखबामे अबैत अछि। चुटकुला आ सामान्य घटना कें अपन विषयवस्तु बनबैवला मैथिली लघुकथा आइ अपन उत्कर्ष पर अछि आ एतबे नहि ओ अपन एकटा शाखा प्रेम समर्पित सेहो निकालि लेने अछि जे 'लप्रेक' नामसं जानल जाइत अछि। यद्यपि हमरा बुझने लप्रेक कोनो अतिरिक्त विधा नहि थिक, लघुकथा मात्र थिक। लप्रेक नाम मात्र हिन्दीक अनुकरण अछि आ मैथिली साहित्य मध्य एकर स्थापन बेछप अछि। की प्रेम लघुकथाक विषय नहि भ' सकैत अछि आ यदि लघुकथामे प्रेम अछि त' ओ लघुकथासं फराक अपन पृथक् अस्तित्व कोना आ किएक स्थापित क' सकैत अछि?

संगहि एखन लघुकथाक स्थान पर 'बिहनि कथा' शब्द सेहो अपन तमाम विवादक संग सोझां आबि रहल अछि। एहि नामकें स्थापित करबामे संलग्न विद्वान लोकनिक मानब थिक जे बिहनि बीयाकें कहल जाइछ आ लघुकथामे बीया नुकायल रहैत अछि, जाहिसं भविष्यमे गाछ आकार ल' सकैत अछि। बीयामे विकास करबाक गुण रहैत अछि मुदा ओ अविकसित रहैत अछि। हम एतहि एहि बातक खंडन करय चाहैत छी जे लघुकथा अविकसित कथा नहि थिक। ई स्वयंमे पूर्ण कथाक नाम थिक आ तें एकरा बीया नहि मानि गाछ मानी त' बेसी नीक। हम बिहनि कथा नामकें उचित नहि मानैत छी आ तें लघुकथाकें लघुकथे सं जानबाक-बुझबाक-लिखबाक प्रयास करैत छी।

आवश्यकता एहि बातक नहि छै जे एकरा लघुकथा कही वा बिहनि कथा, लघुकथा अपन स्तरीयता बनौने रहे, नव-नव विचार परसय, नव-नव विमर्श ठाढ़ करय आ संख्यात्मक नहि, गुणात्मक वृद्धि दिस अपन डेग बढ़ाबय। साहित्यमे ढोल-पिपही बेसी कर्णप्रिय नहि होइत अछि, साहित्य एकांतवासी भ' चिन्तनक कैनवासकें नम्हर क' समाजकें एकटा रचनात्मक दिशा देबाक प्रण थिक आ लघुकथा विधासं जुड़ल रचनाकारकें मात्र छोट-छीन किछु लिखि देबासं बचबाक प्रयास करबाक चाही।

गुलेरी कोनो विधा आ कोनो भाषामे भ' सकैत छथि। ■

पृष्ठ 25 का शेष...

संदर्भ

1. बिडम्बना (भूमिका)- आचार्य रमानाथ झा, पृ.झ.
2. जनार्दन झा 'जनसीदन'-डॉ. रामदेव झा,पृ.41.
3. मैथिली साहित्यक इतिहास-डॉ. जयकान्त मिश्र, पृ.230
4. तत्रैव, पृ.230.
5. जनार्दनझा 'जनसदीन'-डा. रामदेव झा पृ. 47.
6. तत्रैव
7. तत्रैव,
8. मै. सा. इतिहास-डॉ. जयकान्त मिश्र, पृ. 230.
9. जनार्दन झा 'जनसीदन'-डॉ. रामदेव झा, पृ. 89.
10. मै. सा. इतिहास-डॉ. जयकान्त मिश्र, पृ. 230.
11. तत्रैव, पृ. 230-31.
12. 'कन्यादान'-प्रो. हरिमोहन झा, समर्पण पृ.1.
13. मै.सा. इतिहास-डॉ. जयकान्त मिश्र, पृ. 231.
14. मैथिली-साहित्यक समालोचनात्मक अध्ययन- डॉ. दिनेशकुमार झा
15. मै. सा. इतिहास-डॉ. दुर्गानाथ झा 'श्रीश',
16. मै. सा. इतिहास-डॉ. जयकान्तमिश्र,पृ. 231.
17. मैथिली साहित्यक इतिहास-डॉ. बालगोविन्द झा 'व्यथित' पृ.48
18. मै. सा. इतिहास-डॉ. जयकान्तमिश्र, पृ. 232.
19. तत्रैव, पृ. 233.
20. तत्रैव पृ. 233
21. मै.सा. इतिहास -डॉ. दुर्गानाथझा 'श्रीश',पृ. 347.
22. मै. सा. इतिहास-डॉ. जयकान्तमिश्र,
23. उपन्यास ओ सामाजिक चेतना-डॉ. जयकान्तमिश्र,पृ 4.
24. मै. सा. इतिहास- डॉ. दुगानाथझा 'श्रीश',पृ. 34.
25. मैथिली सा. इतिहास-डॉ. जयकान्तमिश्र,पृ. 347.
26. तत्रैव,
27. मै.सा. इतिहास -डॉ. दुर्गानाथझा 'श्रीश', पृ.347.
28. मै.सा.इतिहास-डॉ. जयकान्त मिश्र, पृ. 350.
29. मै.सा.इतिहास-डॉ. दुर्गानाथ झा 'श्रीश', पृ.314.
30. मै.सा.इतिहास-डॉ. जयकान्त मिश्र, पृ.224.
31. मै. सा. इतिहास-डॉ. जयकान्त मिश्र, पृ. 232.
32. मै. सा. इतिहास-डॉ. दुर्गानाथ झा 'श्रीश',पृ.356.
33. मै.सा. इतिहास- डॉ. जयकान्त मिश्र, पृ. 334.
34. मै.सा. इतिहास- डॉ. दुर्गानाथ झा 'श्रीश',पृ. 351.
35. तत्रैव, पृ. 352
36. मै. सा इतिहास-डॉ. जयकान्त मिश्र, पृ. 235.
37. मै. सा. इतिहास-डॉ. दुर्गानाथझा'श्रीश', पृ. 354.
38. तत्रैव, पृ.356.
39. तत्रैव, पृ. 360.
40. तत्रैव.
41. तत्रैव, पृ. 395.
42. मै.सा. इतिहास-डॉ. जयकान्तमिश्र, पृ. 236.
43. तत्रैव, पृ. 365.
44. तत्रैव, पृ. 358.
45. तत्रैव.
46. तत्रैव,पृ. 360.
47. तत्रैव, पृ. 360.
48. उपन्यास ओ सामाजिक चेतना- डॉ. अमरेश पाठक, पृ.33.
49. मै.सा. इतिहास- डॉ. दुर्गानाथ झा 'श्रीश', पृ. 361-62.
50. तत्रैव, पृ. 355.
51. तत्रैव, पृ. 376.
52. तत्रैव, पृ.356 .
53. तत्रैव, पृ. 376-77.
54. तत्रैव, पृ. 367.
55. तत्रैव, पृ. 371.
56. तत्रैव, पृ. 374-75.

आत्माक कथा थिक 'किस्त-किस्त जीवन'

✍ प्रमोद कुमार पासवान

लेखक मैथिली विभागक सहायक प्राध्यापक छथि। उमा पांडेय महाविद्यालय, पूसा, समस्तीपुर मे।

आत्मकथा लिखब कथा जकां सोझ नहि थिक। कथा लिखब सोझ थिक, से हम नहि कहैत छी, मुदा आत्मकथा लिखब तं महाकठिन थिक। संसार मे के एहन प्राणी होयत जकर अपन कथा नहि होयतैक? प्राणी समाजक अंग थिक, तं ओकर कथा ओहि हिसाबें समाजोक कथा थिकैक। मुदा वैह प्राणी समाजक अंग होइतो स्वयं मे स्वतंत्रो थिक, तें ओकर कथा खासो कथा थिकैक - खास जीवनक खास कथा। जहिना खास जीवन मे बहुत एहनो घटना-घटित होइत छैक जे गोप्य होइत छैक, मुदा ओकर झाइं व्यक्तित्व पर देखाए भ' जाइत छैक, तहिना खास जीवनक कथामे किछु अकथ कथा सेहो छैक, मुदा प्रभाव ओकर गोप्य नहि रहि पबैत छैक। विवेच्य विषय आत्मकथा नहि आत्माक कथा 'किस्त-किस्त जीवन' थिक जकर रचनाकार छथि- डॉ. शेफालिका वर्मा हिनक जन्म 9 अगस्त, 1943 ई. के बंगाली टोला, भागलपुर मे भेल आ शिक्षा एम.ए. पी.एचडी. (पटना विश्वविद्यालय)।

हिनक अधिकतर रचना करुण रस सं भरल अछि। हिनक प्रकाशित कृति 'विप्रलब्ध' (कविता संग्रह), रेखा (संस्मरण संग्रह), स्मृति एकटा आकाश (कथा संग्रह), 'यायावरी' (यात्रा वृतान्त), भावांजलि (काव्यप्रगति) अछि। 'ठहरे हुए पल' (हिन्दी संग्रह)। वर्ष 2004 ई. में डॉ. शेफालिका वर्मा के चेतना संमिति पटना द्वारा 'यात्री चेतना पुरस्कार' सं पुरस्कृत कयल गेल एवं वर्ष 2012 ई. में 'साहित्य अकादमी', दिल्ली द्वारा 'किस्त-किस्त जीवन' पोथी पर 'साहित्य अकादमी पुरस्कार' सं पुरस्कृत कयल गेलहि। एहि पोथिक आमुख सं स्पष्ट होइत अछि जेओ नित डायरी लिखैत छथि तें अपन किस्त-किस्तक अनुभव कें बटोरि लेलनि। बाल्यकालक गणित विषयक समस्या हो वा संगति शिक्षक पंडित वाजपेयी जीक व्यवहारक मूक विश्लेषण सभ बिन्दुपर पोथीक फुजल पन्नो जकां स्पष्ट प्रस्तुति। युवती वयसमे प्रवेश करैत काल कोनो अनचिन्हार युवकक नजरि देखि कऽ अपन ब्रह्मास्त्रक (थूक फेकबाक) प्रयोग करैत छलहि। ओना एहि अस्त्रक शिकार विवाह सं पूर्व ललन बाबू सेहो भेल छलाह बाद मे जिनका संग दाम्पत्य सूत्रमे बान्हल गेलीह। नव प्रकारक रक्षा सूत्रके विषय मे पढ़ि अकचका गेहलुं, नीक नहि लागल मुदा, एहि रचनाक प्रासंगिकता पर प्रश्नचिन्ह नहि लगाओल जा सकैत अछि। प्रवेशिका उत्तीर्ण कयलाक पश्चात् शेफालिका जी नहि पढ़ए चाहैत छलीह। ललन बाबूक विशेष प्रेरणा सं जहिना-तहिना स्नातक धरि शिक्षा ग्रहण कयलनि। तत्पश्चात् घर-गृहस्थी आ साहित्य साधना मे लीन भ' गेलीह। साहित्य मे विशेष योगदानक लेल दरभंगा मे डॉ. दिनराजी शांडिल्य द्वारा 'विद्या वारिधी' सम्मान सं सम्मानित कयल गेलीह। खन-खन मन पड़िते कपार पर रेघा उगि जाइत छैक।

संपर्क : उमा पांडेय महाविद्यालय, पूसा, समस्तीपुर (बिहार)
मो. : 9534882994

लेखकक महत्ता आ परिपक्वताक जांचक कसौटी यैह थिकैक जे 'अकथकथा' कें तेना प्रस्तुत कयल जाइक, जे ओकर जीवन तरूकें झमारि देने होइक आ कि झुमा देने होइक। ई विशिष्ट लेखन कौशले सं सम्भव छैक। जे हिनका मे कुटि-कुटि कें भरल छनि। ई तं भेल लेखकक पक्षक विषय। पाठकक पक्ष मे आत्मकथा वैह श्रेष्ठ मानल जा सकैत छैक, जाहिमे लेखकक समकालीन समय, समाज आ ओकर संस्कृतिक सहज स्वभाविक सजीव चित्र सोझां मे झलकि जाइक। लेखकक जिनगीक विशेष घटना कें पाठक अपनो घटना बुझ' लगैक। जत' कथामे पात्रकें उभारल जाइत छैक, अपनाकें उखेरल जाइत छैक, उधेसल जाइत छैक, से पाठक कें अपन कथा बुझि पड़य। तें कहलौ कथा लिखबा सं आत्मकथा लिखब बेसी कठिन छैक। ई सभ तं आत्मकथाक गुण-दोष भेल। मुदा शेफालिका जीक 'किस्त-किस्त जीवन' हमरा आत्मकथा कहां लागल हमरा तं ई हुनक आत्माक कथा बुझि पड़ल। सोझे आत्मा सं बहरायल उद्‌गार। आत्मा जेना निबंध-निर्लेप होइत अछि आ ओकर तार सोझे परमात्मा सं जुड़ल रहैछ, तहिना हुनक ई आत्माक कथा हमरा उन्मुक्त, निश्चल, निर्मल लागल अछि आ एकरो तार सोझे परमात्मा (ललन बाबू) सं जुड़ल लगैत अछि। आत्माक अदृश्य अनुराग ताग सं जुड़ल हुनक जीबट भरल जीवनक ई सम्मोहक सतरंगी गुड्‌डी मैथिली साहित्यकाश मे अगराइत-उधिआइत अपन अपरूप छटा-छिड़ियाबैत रहत।

आब प्रश्न उठैत अछि जे हुनक आत्मकथा सं समाज कें की भेटत वा कि भेटल? कोनो व्यक्ति खाहे ओ महान हो वा नहि, ओकर जीवन सं शिक्षा लेल जा सकैत अछि। शेफालिका जी त' मर्मज्ञ छथि जीवनक मर्मज्ञ, साहित्यक मर्मज्ञ आ सिनेहक मर्मज्ञ। पुरुष प्रधान समाजमे नारीक एहन दृढ़ता देखि वर्तमान काल बालाकें अवश्य नव दिशा भेटत। हुनक जीवनक दर्शन कें कण-कण मे समा लेल जा सकैत अछि। एहि पोथीक, भाषा मनोरम आ प्रवाहमयी अछि। एतेक अविराम कृति रहलाक पश्चात् एहिमे किछु त्रुटिक दर्शन सेहो भैल। शेफालिका जी अपन जीवनक कचोट कें नुका लेली ओ फुजल मानसिक प्रवृत्तिक महिला छथि, चरित्र उत्तम मुदा पारदर्शी। सहज अछि जे एहि सं हुनका किछु सामाजिक उपहासक अनुभव भेल हेतनि। साहित्यकारक रूप मे उपेक्षाक शिकार अवश्य भेल हेती तकरा मौन त' कयल जा सकैत छल मुदा से नहि कयल गेल। भ' सकैत अछि ओ मैथिल समाजक मध्य कोनो अनुत्तरित प्रश्न नहि उठबय चाहैत छथि। सम्पूर्ण सार अछि जे रचना सारगर्भित ओ सोहनगर लागल।

अतएव शेफालिका जी भनहिं अपन जीवनकें किस्त-किस्त मे क' कए विस्तृत फेहरिस्त तैयार कयलनि अछि, मुदा हुनक समस्त व्यस्त जीवन हमरा जानैत, ओहि अलमस्त प्रशस्त स्वर्गस्थ जीवन धन ललन बाबूक तिल-तिल नूतन पुण्य स्मृति मे विलगित भेल चल गेल अछि। ■

संदर्भ

1. समय साल, जुलाई-अगस्त 2010, पृ.-45
2. डॉ. शेफालिका वर्मा केर ईमेल
3. किस्त-किस्त जीवन, डॉ. शेफालिका वर्मा

पोथी भेटल

1.	दु:स्वपनक बाद	कविता संग्रह	रमण कुमार सिंह	किसुन संकल्प लोक, सुपौल
2.	फूजल आँखिक स्वपन	कविता संग्रह	रोमिशा	किसुन संकल्प लोक, सुपौल
3.	आकार लैत शब्द	कविता संग्रह	केदार कानन	किसुन संकल्प लोक, सुपौल
4.	व्योममे शब्द	कविता संग्रह	केदार कानन	किसुन संकल्प लोक, सुपौल
5.	पहाड़ आ अन्य कविता	कविता संग्रह	विभूति आनंद	किसुन संकल्प लोक, सुपौल
6.	परिचिति	कविता संग्रह	सुष्मिता पाठक	किसुन संकल्प लोक, सुपौल
7.	इजोतक बाट	कविता संग्रह	सुष्मिता पाठक	किसुन संकल्प लोक, सुपौल
8.	जल धरतीक अनुरागमे बसैत अछि	कविता संग्रह	नारायणजी	किसुन संकल्प लोक, सुपौल
9.	पाथरक शहर	कविता संग्रह	नन्दिनी पाठक	किसुन संकल्प लोक, सुपौल
10.	हमरेसं रंग	कविता संग्रह	निवेदिता झा	शेखर प्रकाशन, पटना
11.	अहीं त' कहने रही	कविता संग्रह	डॉ. शेफालिका वर्मा	नवारम्भ, पटना/मधुबनी
12.	सुखाल मन तरसल आँखि	कविता संग्रह	मुन्नी कामत	पल्लवी प्रकाशन, सुपौल
13.	एखन धरि	कविता संग्रह	अंशुमान सत्यकेतु	नवारम्भ प्रकाशन, पटना/मधुबनी
14.	तें किछु आर	कविता संग्रह	अरुणाभ सौरभ	नवारम्भ, पटना/मधुबनी
15.	खोंता आ चिडै	उपन्यास	मायानंद मिश्र	किसुन संकल्प लोक, सुपौल
16.	दिक्पाल	संस्मरण	महेंद्र	किसुन संकल्प लोक, सुपौल
17.	द्रुतविलंबित	कथा संग्रह	मन्त्रेश्वर झा	किसुन संकल्प लोक, सुपौल

चंदा झाक मिथिला भाषा रामायण मे स्त्री-पक्ष

✍ डॉ. बिभा कुमारी

असिस्टेंट प्रोफ़ेसर (तदर्थ), आई.पी. कॉलेज फॉर वुमेन, दिल्ली विश्वविद्यालय, बिहार लोक सेवा आयोग द्वारा सहायक प्राध्यापक (हिन्दी) मे सेहो चयनित। एखन धरि कुल सात गोट पोथी प्रकाशित, जाहि मे दू टा मैथिली कविता संग्रह। हिन्दी साहित्यक आलोचनाक सशक्त हस्ताक्षर।

महाकवि चंदा झा मैथिली साहित्यक मूर्धन्य कवि छथि। 1831 ई. मे मिथिलाक भूमि कें चन्द्र-ज्योत्स्ना सं आह्लादित करबाक लेल एहि दिव्य पुरुषक जन्म दरभंगा सं किछु दूर पिंडारूछ गाम मे भेल। विद्यापतिक परवर्ती काल मे ओ अपन साहित्यिक प्रतिभाक बलें जाहि साहित्यिक राज-पथक निर्माण कएलन्हि, अद्यावधि मैथिली साहित्य ओहि पर अबाध गति सं चलि रहल अछि। ओ मैथिली मे रामकाव्यक परंपराक स्थापना केलन्हि।

श्रीरामक संग मिथिलाक संबंध अटूट अछि, मुदा तैयो प्राचीन मैथिली साहित्य मे रामचरितक चित्रण ओहि अनुपात मे नहि भेल अछि। तकर बहुत रास ऐतिहासिक कारण गिनाओल जा सकैत अछि। मैथिली मे श्रीराम पर केन्द्रित वंदना विषयक पदक रचना करबाक श्रेय सर्वप्रथम वैष्णव कवि गोविंद दास कें छनि। 18म-19म शताब्दी मे मैथिली साहित्य मे राम विषयक पदक रचना समकालीन वैष्णव संत साहेब रामदास, लक्ष्मीनाथ गोसाईं इत्यादि लोकनि प्रचुर संख्या मे केलनि। एहि परंपरा कें एकटा सुदृढ़ आधार प्रदान करबाक सम्पूर्ण श्रेय देल जाइत छनि कवीश्वर चंदा झा कें। 19म शताब्दिक अंतिम चरण मे कवीश्वर रचित 'मिथिला भाषा रामायण'क सर्वप्रथम प्रकाशन भेल, ओहि समय धरि भारतक प्रमुख भाषा सभ मे रामायणक प्रकाशन भ' चुकल छल, मुदा मैथिली मे एकर अभाव छल, ओहि अभावक पूर्ति कवीश्वर चंदा झा अपन 'मिथिला भाषा रामायण' सं कएलनि।

मिथिला भाषा रामायणक अतिरिक्त हुनक जीवनकाल मे वाताह्वान, पुरुष-परीक्षा (मैथिली अनुवाद) गीत सप्तशती आदि ग्रंथ प्रकाशित भेल। हुनक मृत्युक पश्चात किछु गीत सभक संकलन भ' सकलनि। तैयो ई नहि कहि सकैत छी जे हुनक समस्त कृति प्रकाशित भ' गेलनि। साहित्य स्रष्टाक रूप मे त' कवीशवर चंदा झा महान छथिहे, मुदा ओही संग हुनक इतिहास दृष्टि ओ अनुसंधान कार्य सेहो अत्यंत महत्वपूर्ण छनि। ओ मिथिलाक प्राचीन ग्रंथक अनुसंधान-संकलन, प्राचीन विद्वानक परिचय संकलन, विद्यापतिक गीत ओ अन्यान्य ग्रंथक संग्रह, प्राचीन मैथिल काव्य-नाटकक अनुसंधान कयलनि। ओ मिथिलाक व्यवस्थित इतिहास लिखय चाहैत छलाह। ओ वास्तव मे मैथिली साहित्यक आधुनिक कालक युग स्रष्टा छलाह।

आधुनिक मैथिली साहित्यक विकास मे कवीश्वरक योगदान नव प्रस्तुतीकरणक' प्रेरणाक सूत्रपात कएलक। मैथिली काव्य रचनाक क्षेत्र मे हिनक प्रबंध काव्य 'मिथिला भाषा रामायण' प्रमुख अछि। राम काव्यक रचनाक आधार पर मर्यादा पुरुषोत्तम रामक चरित्रक विश्लेषणक माध्यम सं कवीश्वर सामाजिक जीवनक विभिन्न पक्षक रूपरेखा प्रस्तुत कएलनि अछि।

एतबे नहिं प्रबंध काव्यक अतिरिक्त मुक्तक रचना सेहो पूर्ण मनोयोग सं केलनि अछि। हिनक साहित्य मे यथार्थक चित्र यत्र-तत्र, सर्वत्र भेटैत अछि। बहुत

संपर्क : मकान नं.: 14, गली नं.: 1, भगवान पार्क, झरौदा, बुराड़ी, दिल्ली-110084
मोबाइल: 8800270718, ई-मेल: dr.bibha.kumari2904@gmail.com

दिन धरि मैथिली साहित्य पर श्रृंगार आ भक्ति भावक आधिक्य देखल गेल, मुदा नहू-नहू जन-साधारणक समस्या साहित्य मे आबए लागल। कवीश्वर चंदा झा आधुनिक मैथिली साहित्य मे भाषाक सरलता, स्वच्छता, सहज अभिव्यक्ति एवं मार्मिक शैलीक प्रयोग संग व्यंग्यक प्रयोग कय जन-जन कें मैथिली साहित्य सं जोड़बाक यत्न केलनि। वाताह्वान मे वर्णित मिथिलांचलक विभिन्न गामक, माछक, नदी-धारक, गाछ सभक नाम आ चर्चा, विभिन्न व्यंग्यात्मक लोकोक्तिक प्रयोग स्पष्ट करैत अछि जे संस्कृत बहुल भाषाक प्रयोग-प्रवाह कें तोड़ि कवीश्वर आधुनिक मैथिली साहित्यक युग प्रवर्तक भेलाह।

चंदा झा कहिया सं कविता रचए लगलाह, हिनक सबसं पहिल रचना कोन थीक, आदि प्रश्नक उत्तर बूझबाक कोनो साधन नहि अछि। मुदा ई अवश्य पता चलैत अछि जे जीविकार्थ ओ सर्वप्रथम नरहनि राज्य मे नियुक्त भेल रहथि आ ओ राज्य पुरातत्वान्वेषक प्रतिभाक अत्यधिक अनुकूल रहए। ओहिठाम चंदा झा पं. खगेश शर्माक 'काशी-शिवस्तुति'क टीका लिखने रहथि, आ नरहनि राज्यक प्राचीन इतिहास सेहो लिखने रहैथ। भरिसक कवीश्वरक सभ सं पहिल कृति यैह थिक। मुदा कवीश्वर अपन जेहि कृति सं बेशी लोकप्रिय भेलाह ओ कृति थिक- 'मिथिला भाषा रामायण'। एकर रचना सम्पन्न भेल 1886 ई. मे आ प्रकाशित भेल 1892 ई. में, तदुपरान्त एकर अनेक संस्करण बहराइत रहल अछि।

मिथिला जानकीक भूमि रहल अछि आ तें एहिठाम कवि साहित्यकार लोकनि सीताक प्रधानता दैत रामक शक्तिक रूप मे हुनकर चित्रण कएलनि अछि। सीताक नैहर मिथिला अछि, ताहि सं कवि हुनक कन्या रूपक चित्रण ओहिना करैत छथि जेना कि ओ अपन बेटी वा बहिन होथि, सीताक नैहर मिथिला मे होइबाक कारणें कवि हुनका पर विशेष अधिकार बूझि, हुनका अपन लोक मानि हुनका सं याचना करैत छथि आ निहोरा करैत छथि जे ओ अपन नैहरक लोक कें सदति मदति करथि।

कवीश्वर चंदा झाक 'मिथिला भाषा रामायण 'रामचरित मानस'हि जकां 'अध्यात्म रामायण'क आधार पर लिखल गेल अछि। रामायण सात काण्ड मे विभक्त अछि तथा प्रत्येक काण्ड मे अनेक अध्याय अछि। सम्पूर्ण ग्रंथ मे चौपाई तथा दोहा छंदक प्रधानता अछि, मुदा बीच-बीच मे अनेकानेक छंदक प्रयोग सेहो कएल गेल अछि।

मिथिला भाषा रामायण मे स्त्री पक्षक अध्ययन करब हेतु सर्वप्रथम केन्द्रीय स्त्री चरित्र सीताक दिस ध्यान देब उचित बुझना जाइछ। मिथिला भाषा रामायण मे बालकाण्ड सं लए उत्तरकाण्ड धरि सीताक संताप, दुख, पीड़ा, कुंठा, संत्रासक चित्रण अछि। बालकाण्ड मे यज्ञस्थल पर सीता कें चिंता छनि जे रावण एवं वाणासुर सदृश जगत विजयी जखन धनुष नहि छूबि सकलाह तखन केकरा मे ई शक्ति होइतैक जे धनुष भंग कए सकत। एहिठाम सीता तत्कालीन सामाजिक व्यवस्थाक अनुकूल एक कन्या रूप मे चित्रित कएल गेलीह अछि, जिनका समाज सं यैह संदेश भेटल छन्हि जे स्त्रीक जीवनक परम उद्देश्य विवाह अछि, सीताक विवाहक निर्णय धनुष-भंग सं लेल जएत, एहनि मे धनुष भंग मे विलंब भेला पर हुनका चिंता मे उगडुम करैत चित्रित कएल गेलन्हि अछि। सीता संग समस्त समाज विशेष रूप सं स्त्री लोकनि चिंतित भ' गेलीह, जनक सेहो एकटा पुत्रीक पिता रूप मे बेकल आ अधीर बुझाय पड़ैत छथि। एहि सम्पूर्ण प्रसंग मे ई स्पष्ट अछि जे कन्याक जीवनक एकमात्र आ परम् उद्देश्य विवाह के मानल गेल अछि आ स्वयं कन्या, हुनक माता-पिता आ समाज विवाह मे आब' बला बाधा सं आशंकित देखाओल गेल छथि। मुदा तखनहि कवीश्वर संकेत दए छथि जे ओहि ठाम रामचन्द्र उपस्थित छथि, हुनक गुरु हुनका धनुष भंगक आज्ञा देलनि, हुनका मे धनुष खंडित करबाक शक्ति छनि-

"भङ्ग धनुष रव चङ्ग भुवन सब रङ्ग अवनि पुनि।

चाप टुटल परिताप छुटल कह लोक अमृत ध्वनि।[1]

धनुष भंगक संगे जे प्रसन्नता व्याप्त होइछ ओहो समाज मे कन्याक विवाहे के ओकर परम सौभाग्य मानबाक धारणाक समर्थन करैछ। एतबे नहि कन्याक विवाह ओहि पुरुष सं करब जे शिवक धनुष कें खंडित करताह, एहि प्रतिज्ञाक माध्यम सं स्पष्ट होइत अछि जे सामाजिक व्यवस्था मे स्त्री कें अबला मानल जाइत अछि आ तें ओकर विवाह परम बलशाली सं करेबाक प्रतिज्ञा कएल जाइत अछि। एहेन मे पति-पत्नीक संबंध मे समानताक स्थान पर स्त्रीक स्थिति पुरुषक अधीन देखबा मे अबैत अछि। युग, समाज, परिवेश व्यवस्था आदिक जीवंत चित्रण मिथिला भाषा रामायण मे भेल अछि। पुरुष प्रधान समाज मे स्त्रीक स्थिति पुरुषक अधीन मानल गेल अछि, ओकरा अबला बूझल गेल अछि आ तें ओकरा मे ग्लानि भावक चित्रण कएल गेल अछि। अपन अपहरण भेला पर सीता स्वयं के अपराधिनी मानैत छथिन, आ हुनका लगैत छनि जे हमर अपराधक कारणें राम हमरा त्यागि देलनि अछि-

चंदा झा कहिया सं कविता रचए लगलाह, हिनक सबसं पहिल रचना कोन थीक, आदि प्रश्नक उत्तर बूझबाक कोनो साधन नहि अछि। मुदा ई अवश्य पता चलैत अछि जे जीविकार्थ ओ सर्वप्रथम नरहनि राज्य मे नियुक्त भेल रहथि आ ओ राज्य पुरातत्वान्वेषक प्रतिभाक अत्यधिक अनुकूल रहए। ओहिठाम चंदा झा पं. खगेश शर्माक 'काशी-शिवस्तुति'क टीका लिखने रहथि, आ नरहनि राज्यक प्राचीन इतिहास सेहो लिखने रहैथ।

"हा लक्ष्मण! किछु अहंक न दोष।
भल करइत हम कयलहुं रोष।।"[2]

आजुक वैश्वीकरणक युग मे जहन कि सम्पूर्ण विश्व एक टा गाम बनि गेल अछि आ ओहि मे समस्त स्त्रीक बीच, 'ग्लोबल सिस्टरहुड' सन संबंध पाओल गेल अछि, हम कहि सकैत छी जे किछु-किछु एहने सन संबंध ओहू युग मे छल, अशोकवाटिका मे सीता आ त्रिजटाक मध्य जे अपनैती अछि तकर मूल मे एहने सन भाव बुझना जाइछ। आन देसक अपरिचित स्त्री होइतो त्रिजटा सीता सं सखी बहिनपा सन आत्मीयता रखैत छथिन। सीतो जाहि रूपें हुनका सं आत्मनिवेदन करैत छथि जे विरह आर नहि सहल जाइत अछि, काठक चिता सजा दिअ, ओहि पर सूति हम प्राणान्त क लेब, ओ तेहने बूझि पड़ैछ जेहन कि एक स्त्री अपन आत्मीय सखी सं विरह सं दुखित भए आत्मनिवेदन करैत छथि। सीताक कुभाखा सुनि त्रिजटा फेर अपन सखी होएबाक दायित्व पूर करैत हुनका बोल भरोस दिअ लगैत छथिन जे रामक दूत हनुमान लंका मे आबि चुकल छथि, ओ तेहन उपद्रव कएलनि अछि-जाहि सं राक्षस समाज संत्रस्त अछि-

"त्रिजटा कहल सुनु जानकी नवीन कथा बानर विशेष वर वाटिका उजारलक।
रक्षक प्रबल रण दक्ष-लक्ष-लक्ष खेत मुइल मूर्च्छित कतो रावण पुकारलक।"[3]

मैथिल स्त्रीक परंपरा रहल अछि ओ अपन सुख-दुख कें गाबि कए व्यक्त करैत छथि। सीतो अपन मोनक दुख कें गाबि कए व्यक्त करैत चित्रित कएल गेलीह अछि जे अपन सुरक्षा लेल पति आ देओर पर निर्भर रहि हुनक आस मे कानि-कानि कए दिन काटि रहल अछि, आ सभटा नीक-बेजाय लेल भाग्य कं उत्तरदायी मानैत छथि-

"केहन विधि लिखल विपति तनि भाल। कुल पवित्र कुल कामिनी हमरहि, कठिन विपति जंजाल।।"[4]

उत्तरकाण्ड मे जहन राज्याभिषेक भेलाक पश्चात सीताक जीवन मे सुखक क्षण आब लेल छल त' सीता कें निर्वासित कए देल गेल। तहन सीता पहिल बेर रामक निर्णयक औचित्य पर संदेह व्यक्त करैत छथिन, प्रश्न करैत छथिन जे हमरा लेल ओ दशानन सं, कपिक सेना बना युद्ध केलनि, हमर अग्नि परीक्षा लेलनि आ तइयो हमरा निर्वासित क देलाह।

"करुणागार उदार प्राणपति, वन देल दोष लगाय रे,
देवर दोष विधिक हम की कहु, जनिघर धर्म न न्याय रे।
हमरहि हेतु दशानन मारल, कपि गण सङ्ग लगाय रे।।
तखन पतिव्रत हमर देखल सभ, अनल मे गेलहुं समाय रे।[5]

सीताक अतिरिक्त अन्य पात्रक माध्यम सं सेहो ओ स्त्री पक्ष कें उजागर केलनि। कौशल्या, कैकेयी आ सुमित्रा तीनू सपत्नी रहितौ आपसी प्रेम आ सहयोगक भाव बहिन सन राखैत छथि। यज्ञक पायस जहन कौशल्या आ कैकेयी कें देल गेलनि त' सुमित्रा अनुपस्थित छलीह, हुनका एला पर कौशल्या आ कैकेयी दूनू गोटे अपन-अपन हिस्सा मे सं हुनका आधा-आधा द' देलथिन।

सीता कें रामक आज्ञा सं अग्नि प्रवेश कराओल गेल आ ओ ताधरि अग्नि मे रहलथि जाधरि राम-रावणक संग्राम समाप्त नहि भेल। सम्पूर्ण रामायण मे आदि सं अंत धरि सीताक सुख-दुख, पीड़ा-संताप, विलाप, विरह आदिक चित्रण भेल अछि। मिथिला मे कुमारि कन्यालोकनि अक्षय सौभाग्य एवं नीक घर-वरक कामना सं गौरीपूजा करैत छथि, आ चंदा झा सीतो सं गौरीपूजा करौलनि अछि।

सीताक अतिरिक्त अन्य पात्रक माध्यम सं सेहो ओ स्त्री पक्ष कें उजागर केलनि। कौशल्या, कैकेयी आ सुमित्रा तीनू सपत्नी रहितौ आपसी प्रेम आ सहयोगक भाव बहिन सन राखैत छथि। यज्ञक पायस जहन कौशल्या आ कैकेयी कें देल गेलनि त' सुमित्रा अनुपस्थित छलीह, हुनका एला पर कौशल्या आ कैकेयी दूनू गोटे अपन-अपन हिस्सा मे सं हुनका आधा-आधा द' देलथिन-

"कौशल्या कैकेयी छली तंह दुई भाग कय देलनि।
ततय सुमित्रा पाछां अइली तनिकां नहि किछु भेलनि।
अपन भागसौं दुनु जनि रानी अर्द्ध भाग पुनि कयलनि।
देल सुमित्रा कें तीनू जनि पायस से तंह खयलनि।"[6]

मंथराक माध्यम सं स्त्रीक चरित्रक छल-कपट, ईर्ष्या आदिक चित्रण भेल अछि। ओ कैकेयीक पवित्र मोन मे छलक बीया रोपि देलीह-

"छल भरोस अहं किछु बुधिआरि। कहि सुनि स्वामिनि बैसलहुं हारि।
कंठ सुखाइछ पिअब न पानि। चट पट खसब अटा सौं फानि"[7]

ओ छल-छद्मक बिया अंकुरित भए तेहन विशाल भ' गेल जे कैकेयी अपन सहृदय स्वभाव कें तियागि कठोर भ' गेलीह। रूसि क कोप भवन बैसि गेलीह जे राम कें भरतहुं सं बेशी मानैत छलीह तिनका लेल बोनबास आ भरत लेल राजगद्दी मांगि लेलीह। एहि प्रकार सं चंदा झा स्त्रीक ममतामायी आ कठोर दुनू रूपक सहज चित्रण केलनि अछि-

"हमर कहल नहि होयत भूप। डूबि मरब धंसि पोखरि कूप।
गरल अशन कय त्यागब प्रान। संकल्पित जौं होयत आन।
केकयि कठिन वचन सुनि कान, नृप खसला मूर्छित अज्ञान।।"[8]

आरण्य कांड मे शूर्पनखाक रूप मे ओ एकटा स्वतंत्र स्त्रीक चित्रण केलन्हि अछि, जे पहिने राम सं आ तहन लक्ष्मण सं, प्रेम-प्रस्ताव करैत छथि। प्रेम-प्रस्तावक अस्वीकृति पर क्रोध प्रकट करैत छथि-

"जनि बल सौं जितइत छह काम। प्रथमहि तनिकहि खायब राम।
एतगोट दर्प्प हमर वन वास। हमर न

मन मध मानथि त्रास।

सीता पर दौड़ल मुहबाय। धारण कयल भयंकर काय।"[9]

मंदोदरी एकटा धीर, गंभीर स्त्रीक रूप मे चित्रित कएल गेलीह अछि, जे पति कें सदिखन नीक-बेजाए बूझबैत छथिन्ह आ कहैत छथिन्ह जे ओ सीताक बरू अपहरण क' क' आनि लेने होथि मुदा हुनका सीता पर बल प्रयोग नहि करक चाही। एक स्त्रीक दोसर स्त्री सं जे संवेदनाक संबंध होईछ, से सीताक प्रति मंदोदरी मे प्रकट होइत अछि।

"कृपणा मलिना दुर्ब्बल देह। हिनका जीबहु मे संदेह।

अन्न पानि कयलनि अछि त्याग। नहि करती पर-जन-अनुराग।"[10]

चंदा झाक रामायणक प्रकाशन 1856 ई. मे भेल, तावत् स्त्रीक स्थिति मे सुधार हेतु प्रयास, कुरीति सभक विरोध हुअए लागल छल। ई नवजागरणक काल छल, ब्रम्हसमाज, प्रार्थना समाज, रामकृष्ण मिशन, थियोसोफ़िकल सोसाइटी आदिक स्थापना काल छल। सन् 1829 मे भारत मे सती प्रथा विरोधी कानून बनि चुकल छल। परंतु अपन युग के रामकथा युग सं पूर्ण रूपें फराक राखैत रामकथाक सभटा प्रसंग चित्रित केलनि अछि। अहिल्याक पाथर बनि जेबाक अभिशापक प्रसंग, धनुष भंग नहि भेला पर जनकक संगहि सम्पूर्ण समाजक चिंता, सीताक अपहरण, अग्नि-परीक्षा आ राम द्वारा हुनक परित्याग, मेघनादक पत्नी सुलोचनाक सती होएबाक प्रसंग, एहि सब सं बुझना जाइछ, जे समाजक नव-परिवर्तनक अनुसार चंदा झा रामकथा मे सुधारवादी डेग उठेबाक यत्न नहि केलनि आ अध्यात्म रामायणक अनुसारहिं सभ प्रसंग कें यथावत चित्रण कएलनि। 1856 ई. मे मिथिला भाषा रामायणक प्रकाशन भेलासं ओहि पर कोनो युगीन प्रभाव देख मे नहि अबैत अछि। मिथिला सं लंका धरि स्त्री कें पराधीने चित्रित कएल गेल अछि, आ एहि प्रसंग मे ओ तुलसीदासक उक्ति-

'कत विधि सिरजी नारी जगमाही पराधीन सपनेहु सुखनाही' सं मतैक्य रखैत छथि। ओनाहितो स्थिति मे सुधार हेतु सभ सं आवश्यक होइछ, यथार्थ स्थिति के चिन्हब आ स्वीकार करब। आ एहि प्रयास मे चंदा झा पूर्ण सफल रहलाह से कहल जा सकैत अछि। ■

संदर्भ-सूची

1. मिथिला भाषा रामायण, बालकाण्ड, पृष्ठ -43
2. मिथिला भाषा रामायण, अरण्यकांड, पृष्ठ-140
3. मिथिला भाषा रामायण, सुंदरकाण्ड, पृष्ठ-191
4. मिथिला भाषा रामायण, सुंदरकाण्ड, पृष्ठ-192
5. मिथिला भाषा रामायण, उत्तरकाण्ड, पृष्ठ-243
6. मिथिला भाषा, रामायण, बालकाण्ड, पृष्ठ-17
7. मिथिला भाषा, रामायण, अयोध्याकाण्ड, पृष्ठ-74
8. मिथिला भाषा,रामायण, अयोध्याकाण्ड, पृष्ठ-77
9. मिथिला भाषा, रामायण, अरण्यकांड, पृष्ठ-143
10. मिथिला भाषा, रामायण, सुंदरकाण्ड, पृष्ठ-211

तीरभुक्ति

अखिल भारतीय मिथिला संघक शोध पत्रिका

पाठकगणसं अनुरोध

'तीरभुक्ति' मिथिला आओर अहि सं जुड़ल मुद्दा पर मैथिलीमे प्रकाशित हुअय बला जर्नल अछि। अहिमे मैथिली आओर मिथिला सं जुड़ल अकादमिक विशेषज्ञ, लेखक, पत्रकार आ विश्लेषक के शोध रचना पढ़ल जा सकैत अछि। 'तीरभुक्ति' के अहां के सहयोग आ समर्थन भेटैत रहय, अहिमे 'तीरभुक्ति' के सफलता अछि। हम चाहैत छी जे अहां अपन अहि जर्नल के आओर बेसी लोकप्रिय बनाबैक लेल मिथिला, मैथिली आ अहि सं जुड़ल विषय पर रूचि राखय बला पाठक के 'तीरभुक्ति' के वार्षिक सदस्यता लेबाक लेल प्रेरित करी। 'तीरभुक्ति' के सालमे चारि टा अंक प्रकाशित होयत।

मूल्यः एक प्रतिः 25 टाका,
वार्षिक मूल्यः 100 टाका (चारि अंक),
पांच वर्ष (20 अंक): 500 टाका

*(पत्रिका डाक वा कूरियर माध्यमे वा रजिस्टर्ड एयरमेल सं पठाओल जायत, जेकर शुल्क अहि मूल्यक संग जुड़ल अछि) सदस्यता लेल अपन पूरा नाम, पता (पिन कोड सहित), मोबाइल नंबर चेक/ ड्राफ्ट सहित **'अखिल भारतीय मिथिला संघ'** केर नामे कार्यालयक पता पर पठाबी वा*
teerbhuktimaithili@gmail.com
पर मेल करी।

पत्राचार पता :
तीरभुक्ति, 20, कोपरनिकस लेन, मंडी हाउस, नई दिल्ली-110001

सदस्यता क्रमांक ....

दिनांक ....

(केवल कार्यालय प्रयोग हेतु)

हम तीरभुक्तिक नियमित सदस्य बनय चाहैत छी। हमर विवरण निम्नलिखित अछि–

नाम : ....

पता : ....

....

....

मोबाइल नं. ....

उम्र : .... पेशा: ....

शिक्षा : ....

सदस्यता अवधि :

☐ एक वर्ष (100 टाका मात्र)

☐ पांच वर्ष (500 टाका मात्र)

भुगतान :

☐ नगद (विवरण) ....

....

☐ चेक/बैंक ड्राफ्ट (विवरण) ....

....

☐ नेफ्ट (NEFT) (विवरण) ....

....

नोट : चेक/ड्राफ्ट **अखिल भारतीय मिथिला संघ** केर नामे बनाबी। NEFT करबाक लेल बैंक विवरण निम्नलिखित अछि–

बैंक खाता विवरण

नाम : अखिल भारतीय मिथिला संघ
(A khil Bhartiya Mithila Sangh)
खाता संख्या : 11084229861,
आईएफएससी कोड : SBIN0000691
एमआईसीआर कोड : 110002087
बैंक : स्टेट बैंक ऑफ इंडिया
शाखा : पार्लियामेंट स्ट्रीट, नई दिल्ली

तीरभुक्ति प्राप्ति स्थल

दिल्ली : **विजय चन्द्र झा / विद्यानंद ठाकुर**
20, कोपरनिकस लेन, मंडी हाउस, नई दिल्ली, मो. 9650461788, 9717539000

: **प्रकाश झा**
'रंगप्रसंग', राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय, भगवान दास रोड, मंडी हाउस, नई दिल्ली, मो. 9811774106

: **भास्कर ज्योति**
जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय, दिल्ली, मो. 9015753660

गाजियाबाद : डॉ. ममता ठाकुर, मो. 9717258787

गुवाहाटी : प्रेमकांत चौधरी, मो. 9435342658

हैदराबाद : मनोज शांडिल्य, मो. 9866077693

दरभंगा : प्रो. भीमनाथ झा, छपकी परड़ी, लक्ष्मीसागर, मो. 9430827936

झंझारपुर : आनंद कुमार झा, मो. 9939041881

मधुबनी : सुनील कुमार झा, जानकी मैथिली पुस्तक भंडार, मो. 9473115956

मुंबई : विभा रानी, मो. 887970891

पटना : शिव पुस्तक भंडार, विद्यापति भवन, पटना, मो. 9905281145

: किताब कोनचर,
लगिचः सदाकत आश्रम, गोसाईं टोला मुँहपर, पटना- 800010
संपर्कः 9955995509

भागलपुर : प्रो. केष्कर ठाकुर, मो. 9430457204

सहरसा : मुख्तार आलम, मो. 7004955930, 9204216204

मधेपुरा : अरविन्द श्रीवास्तव, मो. 9431080862

कोलकाता : लक्ष्मण झा सागर, मो. 9903879117

सिलचर : स्वाती शाकम्भरी, मो. 9213152822

सुपौल : केदार कानन, मो. 7004917511

रायपुर : मनीष कुमार झा, मो. 9425517092

सर्वतंत्र स्वतंत्र पं. धर्मदत्त (बच्चा) झा

✍ देवानन्द मिश्र

शिक्षा : एमए अर्थशास्त्र, बीएड, एमलीस, शास्त्री संस्कृत साहित्यमे, मिथिलाक्षर प्रवीण शिक्षक, शारदा भवन संस्कृतोच्च विद्यालय नवानी, मधुबनी।

मिथिला चिरकालहि सं न्याय ओ मीमांसाक केंद्र रहल अछि। मिथिला मे न्याय ओ मीमांसक अध्ययन-अध्यापनक परम्परा विशेष रूपें प्रचलित रहल अछि। मिथिला मे एहि दूनू दर्शनक अनेकानेक उद्‌भट विद्वान सभ भेलाह। जाहिमे सर्वतंत्र स्वतंत्र पं. धर्मदत्त (बच्चा) झाक नाम अग्रगण्य अछि। अप्रतिम प्रतिभाक धनी प्रख्यात नैयायिक पं. धर्मदत्त (बच्चा) झा ओहि मैथिल विद्वत्परम्पराक पीढ़ी मे गनल जाइत छथि, जाहि मे ब्रह्मसिद्धिक रचयिता मण्डन मिश्र, तात्पर्याचार्य वाचस्पति मिश्र, उदयनाचार्य, नव्यन्यायक प्रवर्तक तत्वचिन्तामणिकार गंगेश उपाध्याय, व्याख्याकार पक्षधर प्रसिद्ध जयदेव मिश्र, यज्ञपति उपाध्याय, प्रसिद्ध दार्शनिक शंकर मिश्र, तत्व चिन्तामणिक प्रकाश व्याख्याक रचयिता नवीन वाचस्पति मिश्र तथा पदवाक्य रत्नाकर आदि अनेक मौलिक ग्रंथरत्नक प्रणेता गोकुलनाथ उपाध्याय पहिनहि सं अध्यापन तथा ग्रंथ रचना कय धवल कीर्ति अर्जित कयने छथि।

पं. धर्मदत्त (बच्चा) झाक जन्म मधुबनी जिलाक झंझारपुर प्रखंडान्तर्गत नवानी ग्राम मे 1860 ई. मे मानल जाइछ। किछु विद्वान हिनक जन्म 1856 ई. मे कहैत छथि, मुदा नव्य न्यायक इतिहास मे दिनेश चन्द्र भट्‌टाचार्य हिनक जन्म 1860 ई. कहि रहल छथि। अस्तु। हिनक पिता अवदात आ विख्यात कुलक गंगुलिवार मूलक शांडिल्य गोत्रीय पंडित प्रवर बाबूलाल प्रसिद्ध दुर्गादत्त झा छलाह। सुनैत छी जे हिनक पितामह पंडित बबुरिया प्रसिद्ध रत्नपाणि तत्कालीन मिथिलेश महाराज छत्र सिंह, हुनक पुत्र महाराज रुद्र सिंह तथा हुनक पुत्र महाराज महेश्वर सिंहक दानाध्यक्ष तथा द्वार पंडित छलाह। मैथिल भक्ति प्रकाश मे दशमहाविद्याक परिचयात्मक श्लोक मैथिलीगीत तथा उषा हरण नाटिका हिनक प्रकाशित अछि। मूलतः स्मृतिकार रूप मे ई अधिक प्रसिद्ध भेलाह।

मिथिला मे ज्येष्ठ संतानक नाम नहि लेबाक शास्त्रोक्त परम्परा छैक। तें ज्येष्ठ संतान रहने पं. धर्मदत्त झा 'बच्चा' झा नामे प्रसिद्ध भेलाह। जन्मक एगारहम दिन नामकरणक समय हिनक नाम धर्मदत्त राखल गेलन्हि। ग्रंथादि लेखन मे एही नामक प्रयोग केलन्हि जेना व्याप्ति सिद्धान्त लक्षणक गूढ़ार्थ तत्वलोकक मंगल पद्य अछि-

श्री धर्मदत्तकृतिना रचितेन यत्नादेतेन सा मुदमुपैतु जनोऽपि विद्वान्।
बालोपकारकृतमेनमवैत्यसूयातीतो मुदं भजतु चाच्छमयूख चूड़ः।।

तहिना भगवतगीताक गूढ़ार्थदीपिकाक उपसंहार मे लिखैत छथि-

श्री धर्मदत्तविदुषा मैथिलेन यथामति।
गूढ़ार्थ दीपिकालोको विहितोऽस्तु मुदे सताम्।।

हिनक आठम वर्ष पूरा भेला पर उपनयनक उद्योग आरम्भ भेल मुदा

संपर्क : ग्राम+पो:जलसैन, भाया: रुद्रपुर, जिला: मधुबनी, बिहार, पिन-847411
मोबाइल: 9973169030, ईमेल: devanand.dri@gmail.com

दुर्भाग्यवश अकस्मात पिताक देहावसान भय गेलन्हि तें पिती वंशमणि झा नवम वर्ष मे उपनयन करौलन्हि आ बरहि पर विधिवत् हिनक अध्ययन आरम्भ भेल। प्रतिभा विशेषक बल सं बालक बच्चा झा अल्पहि कालमे विशेष छात्र बूझाय लगलाह। वरीय छात्रक त' कथे कोन अध्यापको लोकनि हिनका द्वारा उठाओल गेल शंकाक समाधान श्रमे सं करैत छलाह। एहि तरहें उत्तरोत्तर विद्या प्राप्त कय बच्चा झा अपन गाम सं तीन कोस उत्तर ढाढ़ी ग्रामवासी प्रसिद्ध नैयायिक पं. विश्वनाथ झा सं समय-समय पर व्यधिकरण नामक नव्यन्यायक शास्त्रीय ग्रंथ विशेषक (को5पत्र) विवेचना जे पं. विश्वनाथ झाक कल्पना प्रसूत छल-पढ़लन्हि।

पहिने मिथिलाक गामे गाम संस्कृत विद्यालय रहैत छलैक जाहि मे न्याय, व्याकरण, साहित्य तथा ज्योतिष आदि विद्याक अध्ययन-अध्यापन होइत छलैक जे चतुष्पाठी वा चौपाड़ि कहबैत छल। एहिमे गामक विद्यार्थी तं सहजहि आनो गामक दू-चारि छात्र के राखि ग्रामीण लोकनि हुनक भोजन वस्त्र आ आवास दय विद्याध्ययन मे सहयोग करैत छलाह। ई क्रम बीसम सदीक उतरार्द्ध धरि चलैत रहल। नवानी मे सेहो एहने चौपाड़ि विद्यालय छल, जकर नाम छल 'शारदा भवन संस्कृत विद्यालय' ई विद्यालय बच्चा झाक घरहि पर छल। हिनक पित्ती वंशमणि झा एकर व्यवस्थापक छलाह। एहि पाठशालाक आगू आबिक' बड़ ख्याति भेलैक।

अपना समय मे प्रतिभा विशेष सं आलोकित रहने बालक रहितो बच्चा झा एहि विद्यालयक अपन समकक्ष छात्र सब सं तेना शास्त्र चर्चा करथि जे छात्र लोकनि हिनका समक्ष अप्रतिम भय जाथि।

बच्चा झा श्रमक परबाह केने बिना मनोयोग सं सभ विद्याक अध्ययन केलन्हि। ज्ञान पिपासु बच्चा झा पिलखबारक म.म. बबुजन झाक घर मे डेरा राखि नैयायिक जयधर झा सं पढ़बाक लेल ढेंगा हरिपुर नित्य जाइत छलाह। विवेचना सहित सम्पूर्ण चिन्तामणि हुनकहि सं पढ़लन्हि। पं. जटाधर झा सं नव्य न्याय पढ़ि बच्चा झा प्राचीन न्याय मे सेहो पाण्डित्यक अर्जन हेतु पं. बबुजन झा सं न्याय कुसुमांजलि आओर ओकर वर्द्धमान उपाध्यायक कएल प्रकाश टीका के पढ़लन्हि।

एक बेरि शास्त्रार्थ देखबाक हेतु सौराठक प्रसिद्ध सभा मे हरिहर नाथ महाचार्य आएल रहथि गुरुकल्प हुनका संग उपस्थित लोकक आग्रह पर बच्चा झा मनोविनोदार्थ नव्य न्याय के तीन चारि कक्षा धरि शास्त्रार्थ कयलन्हि। हिनक प्रतिभा सं परितुष्ट भय सदाशय ओ भट्टाचार्य आशीर्वाद दैत कहलथिन्ह जे आब अहां के पुस्तक पसारि ककरो सं पढ़बाक प्रयोजन नहि अछि। आब अध्यापन करू अहां विद्वान भय गेलहुं। तहिया गुरुजनक एहने आशीर्वाद पाणि डत्यक प्रमाण पत्र होइत छल।

पहिने मिथिलाक गामे गाम संस्कृत विद्यालय रहैत छलैक जाहि मे न्याय, व्याकरण, साहित्य तथा ज्योतिष आदि विद्याक अध्ययन-अध्यापन होइत छलैक जे चतुष्पाठी वा चौपाड़ि कहबैत छल। एहिमे गामक विद्यार्थी तं सहजहि आनो गामक दू-चारि छात्र के राखि ग्रामीण लोकनि हुनक भोजन वस्त्र आ आवास दय विद्याध्ययन मे सहयोग करैत छलाह।

एकर बाद बच्चा झा शास्त्रान्तरक अध्ययन हेतु काशी गेलाह आ ओतय म.म. शिवकुमार मिश्र सं व्याकरण, म.म. बालशास्त्री सं वेदान्त तथा म.म. विशुद्धानन्द सरस्वती सं पूर्व मीमांसाक अध्ययन केलन्हि। बच्चा झा शास्त्रार्थ मे अधिक काल उत्तरपक्षहिक आसन पर बैसैत छलाह। गुरुक आज्ञा पाबि मिथिला अयबा काल गुरु हिनका कहलथिन्ह जे अहां पढ़ल आ बिनु पढ़ल सभ ग्रंथ के पढ़ा सकैत छी। गाम एला पर शारदा भवन संस्कृत विद्यालयक प्राचार्य आ हिनक पिसियौत भाई पं. यदुनाथ झाक आग्रह पर मात्र दू दिन व्युत्पत्तिवाहक अध्ययन कएलन्हि मुदा परितोष नहि भेलन्हि आ स्वयं अध्ययन कय परिशीलन करय लगलाह।

नवानी मे अपन पाठशाला मे हिनका सं गाम-गाम आ अन्य प्रांत सं लगभग पचास टा छात्र घरहि पर न्याय आ वेदान्त पढ़य लगलाह। पुण्य श्लोक बच्चा झा अध्यापन सं अवकाश पाबि व्युत्पत्ति वादक विवेचनात्मक व्याख्याक प्रणयन मे लगल रहैत छलाह संगहि नव्यन्यायक मूल ग्रंथ तत्वचिंतामणिक अनुमान खण्डक अभिनव विवेचनाक प्रणयन करैत रहैत छलाह।

पुण्य श्लोक बच्चा झा पहिने जगदीशी .....??..... ग्रंथक विवेचना लिखलहि। पश्चात क्रमश: एही तरहें सिद्धांत लक्षण .....??..... निकलि .... .??..... तथा सामान्य निरुक्ति आदिक विवेचनात्मक प्रकाशन ग्रंथक तत्वालोक नाम सं कएलन्हि। एहि विवेचना मन मे अन्य विद्वानक एकल विवेचनाक संयुक्ति निराकारणो कएल गेल अछि। सम्पूर्ण विवेच्य अनुमान खण्ड ग्रंथक नाम ई तर्कमार रखलैन्हि आ अपन विवेचनाक नाम 'शूढ़ार्थ तत्वालोक'। अध्यापन आ ग्रंथ लेखन हुनक यत्र-तत्र चलैत छल।

पिता आ पित्तीक अवसानक बाद बरगृहस्थीक भार पाबियो के बच्चा झा विद्वाव्यवसाय सं विरत नहि भेलाह। हिनक अध्ययन-अध्यापन आ पाणि डत्यक चर्चा सम्पूर्ण देश मे भ' गेल छल। हिनका सम्मानपूर्वक तत्कालीन महाराज कुमार रमेश्वर सिंह राजनगरक

विद्यालय मे नियुक्त केलन्हि। ओतय अपन अध्यापन कार्य एवं विभिन्न शास्त्रार्थक बल पर मिथिलाक लब्ध प्रतिष्ठ विद्वान एवं मिथिलेश सं विशेष सम्मानित भेलाह। मिथिलेशक आग्रह पर काशी मे हिनक शास्त्रार्थ व्युत्पत्तिवादक राजपुरुष' के शास्त्रार्थ दामोदर शास्त्री संग भेलन्हि आ ताहि मे ओ विजयी भेलाह। जाहि मे हिनक गुरु म.म. शिवकुमार मिश्र आ समसामयिक म.म. जयदेव मिश्र सेहो उपस्थित छलाह। एकर बाद गुजरातक द्वारकामठाधीश जगद्गुरु शंकराचार्यक आग्रह पर सूरत मे तर्कगदाधरी आ प्रामाण्यवादगदाधरी पढ़ौलन्हि। ओही क्रम मे महादार्शनिक काशी हिन्दू विश्वविद्यालयक कुलपति अहमदाबाद निवासी आनन्द शंकर ध्रुव मुक्तावली आदि न्यायशास्त्रक ग्रंथ हिनका सं पढ़लन्हि।

गाम आबि पुन: अपन विद्यालय मे अध्यापनकार्य मे लागि गेलाह। एहि क्रम मे हिनक अनेक लब्धप्रतिष्ठ विद्वान छात्र सभ भेलथिन्ह। शिष्योपशिष्य परंपराक क्रम मे विद्यावाचस्पति शशिनाथ झा, राय, सहदेव झा-चकौती, लक्ष्मीकांत झा-सीमा, षष्ठीनाथ मिश्र-लालगंज आ अपन बालक जगदीश झा। ई लोकनि अधिक ख्याति पओलन्हि। एहि सभ मे सबसं अधिक प्रतिभा सम्पन्न छलाह सहदेव झा। षष्ठनाथ मिश्र अनेक वर्ष धरि नवानीक विद्यालय मे प्राध्यापक रहि अनेक छात्र के कृतविद्य केलन्हि।

पुण्यश्लोक बच्चा झा जेहने उद्भट विद्वान छलाह तेहने उदार आ परोपकारी सेहो। आ तेहने समाजसेवी। गाम मे सब विवादक निपटारा वैह करैत छलाह। ई जावत रहलाह नवानी मे पुलिस वा कोर्ट कचहरीक प्रयोजन नहि पड़लैक। ई न्यायप्रिय व्यक्ति छलाह।

ई बड़ पैघ वैद्य सेहो छलाह। अपन खर्च सं रस-रसायन आ औषधि तैयार करथि आ समाज मे जकरा प्रयोजन होइ तकरा नि:शुल्क बांटथि। ताहि मे ककरो सं कोनो भेद नहि करथि। जाति-धर्मक भेद केने बिना सबहक चिकित्सा करथि। गामक अनेक पथभ्रष्ट युवक के रास्ता पर अनलन्हि। अनेक समाज सुधारक कार्य केलन्हि। स्त्रीवर्गक उत्थान मे सेहो बच्चा झाक महती भूमिका रहलन्हि। मास मे एक दिन ओ विभिन्न टोल पर स्त्री वर्ग सं गप्प करथि आ ओकर उत्थानक लेल अग्रसर रहथि।

उक्त शास्त्रीय आ लौकिक कार्यक अतिरिक्त प्रायश्चित व्यवस्था पर सहो कार्य केलन्हि। यद्यपि ओहि समय मे मिथिलाक कोनो गाम पंडित शून्य नहि छल, तथापि हिनक निर्णय अकाट्य आ सर्वमान्य होइत छल।

सर्वतंत्र स्वतंत्र पं. बच्चा झा अनेक ग्रंथक रचना कएलन्हि जे निम्नवत् अछि–

1. अद्वैतसिद्धि चन्द्रिका (अप्रकाशित) 2. गीताक मधुसूदन सरस्वती कृत दीपिका व्याख्याक गूढ़ार्थ तत्वालोक व्याख्या दोसर प्रकाशन। 3. सुलोचनामाधव चम्पू (काव्य) 4. प्रस्तार विचार (काव्य) प्रोस्थुमस प्रकाशन 5. व्याप्तिपत्रक गूढ़ार्थ तत्वालोक (पंडित भक्तियश विजय द्वारा सद्य प्रकाशित यशोलता संस्कृत तथा विनम्र गुजराती व्याख्या) 6. सिद्धान्त लक्षण गूढ़ार्थ तत्वालोक 7. सामान्य निरुक्ति गूढ़ार्थ तत्वालोक 8. व्युत्पत्तिवाद गूढ़ार्थ तत्वालोक 9. अवच्छेब्दकत्व निरूक्ति गूढार्थ तत्वालोक 10. व्याप्त्यनुगम गूढ़ार्थ तत्वालोक 11. पक्षतागूढ़ार्थ तत्वालोक 12. अवयव गूढ़ार्थ तत्वालोक 13. सव्यभिचार गूढ़ार्थ तत्वालोक 14. शक्तिवाद गूढ़ार्थ तत्वालोक 15. कुसुमाञ्जलि प्रकाश टिप्पणी (चौखम्भा वाराणसी) 16. आनन्दपूर्ण कृत ईश्वरानुमान टीका 17. खण्डनखण्डखाद्य टीका 18. न्याय तात्पर्य टीका व्याख्या।

अध्यापनक क्रम मे सम्पूर्ण देश मे यश आ सम्मान भेटैत रहलैन्ह आ अनेक ग्रंथक रचना करैत रहलाह। सम्मान मे प्राप्त धन सं अनेक यशस्वी कार्य केलन्हि, पोखरिक निर्माण आ तकर यज्ञ क' अनेक विद्वान ब्राह्मण के गुणीक रूप मे बजाय सम्मानित कयलन्हि। संगहि शिवमंदिरक निर्माण केलन्हि जे एखनहुं शारदा भवन संस्कृतोच्च विद्यालय नवानीक प्रांगण मे श्री धर्मेश्वरनाथ शिवमंदिरक रूप मे प्रख्यात अछि।

बच्चाझाक अभिष्ट छलन्हि जे जीवनक अंतिम समय मे काशी जायब, प्रतिदिन बाबा विश्वनाथक दर्शन आ गंगास्नान करब किन्तु ओहि समय मे मुजफ्फरपुर मे धर्म समाज संस्कृत महाविद्यालय स्थापना भेलैक आ महाराज रमेश्वर सिंहक दुराग्रह तथा मिथिला के कलंक सं बचेबाक उद्देश्य सं प्रथम प्राचार्यक पद के सुशोभित केलन्हि।

1918 मे जुलाई मास मे एक दिन सर्वतंत्रस्वतंत्र पंडित बच्चा झा धर्म समाज संस्कृत महाविद्यालय सं डेरा पर आबि तात्पर्य टीकाक तत्वालोक लिखबा मे संलग्न छलाह कि बीचहि मे लघुशंकाक लेल बाहर गेलाह आ ओतहि वाक्हरण भ' गेलन्हि। ओतय उपस्थित व्यक्ति के संकेत सं कहलथिन्ह जे किताब आ कागज बान्हि के राखि दियौक आ पड़ि रहलाह। यावत् डॉ. आबय शोणित वमन भेलन्हि। डॉक्टरक अनुसारे कठिन शास्त्रक चिन्तन केला सं ज्ञान तन्तु टूटि गेलन्हि आ आब औषधि कार्य नहि करतन्हि। किछुए कालक बाद हुनक अवसान भ' गेल। हिनक अवसान सं मिथिलाक अपूरण ीय क्षति भेलैक। ओहन दोसर विद्वान एहि सभ वर्ष मे नहि भ' सकल। ■

संदर्भ

1. सर्वतंत्रस्वतंत्र पंडित बच्चा झा, डॉ. किशोर नाथ झा।
2. मिथिला मे नव्यन्याय का इतिहास, दिनेश चन्द्र भट्टाचार्य
3. व्युत्पत्तिवाद गूढ़ार्थ तत्वालोक, चौखम्भा प्रकाशन
4. तत्वचिंतामणि
5. आत्मकथा, डॉ. सरगंगानाथ झा
6. सुलोचना माधव चम्पू (काव्य)

साहित्यिक क्षुधा मेटाबय लेल लिखैत छी

✍ **अमित मिश्र**

कहियो पढ़ने रही:
साहित्यसङ्गीतकलाविहीनः
साक्षात्पशुः पुच्छविषाणहीनः।

अर्थात साहित्य, संगीत आ कला बिनु मानव बिना नांगरिक पशु जकां अछि। ई कहबामे कोनो असोकर्य नै जे साहित्य आ संगीत मानव जीवनक अभिन्न अंग अछि। साहित्य आ संगीत बिनु जीवनक रूप विकृत भ' जाइत अछि आ मानव मात्र लहास बनि रहि जाइत अछि। कारण जीवंतताक प्रमाण चेतना आ चेतनाक प्रतिफल भेल साहित्य। हमरा लेल देखल, सुनल आ शोधल गेल अमूर्त विचार, अनुभव, आवेग वा कही त' चेतनाक मूर्त बना क' जनमानस बीच परसबाक साधन मात्र अछि साहित्य। हमर लेखन आ लिखबाक हौस एहि बातसं प्रभावित अछि से हम गछैत छी।

"हम किएक लिखैत छी?" एकटा एहन प्रश्न अछि जकर उत्तर हेरब प्रश्नोसं बेसी भरिगर अछि। जखन हम अपन अंतरात्माके प्रतिबिंबित करैत छी त' लागैत अछि जे यैह चेतना, समाजक प्रति कर्तव्य, देशक नागरिक हेबाक कारणे हमर दायित्व, साहित्य प्रेम आ इहो सबसं बेसी सृजनशील प्रवृतिक रहब हमरा कलम उठबै लेल कछमछाबैत अछि। हम लिखैत छी किएक त' बिनु लिखने नै रहि सकैत छी। लेखन हमरा लेल व्यसन अछि जकरा हम कोनो मोलपर छोड़ि नै सकै छी। जहिना ऑक्सीजन बिनु जीयब कठिन अछि तहिना लिखने बिनु हमरा लेल समय काटब कठिन अछि। हम अपन खाली समयकें व्यस्ततम बनेबाक लेल साहित्यक सागरमे उबडुब करैत छी। मोनक अकुलाहटकें शान्त करबाक लेल रचैत छी कोनो नव कविता।

"हम लिखै छी टेमी साहित्यिक जड़बै लए
सूतल समाजमे भाव जागृतिक जगबै लए
भ्रष्ट तंत्रक शोषण आ बन्हन बला सिक्कड़ि
तोड़ि पुरना परिपाटी नव क्रांति उठबै लए"

एहि सभसं फराक गप इहो अछि जे हम कनेक विद्रोही प्रवृतिक सेहो छी। मने मारि-पीट बला विद्रोह नै। हमर विद्रोह रहैत अछि, सत्ताक कुकुरचालिसं, बदलैत समाजक अनटोटल परिदृश्यसं, बिगड़ैत संस्कारसं, छिड़ियाइत रिश्तासं। मने समाजकें उजड़ैत देख हमर कलम विद्रोहक स्वर सप्तम तानमे मजगूत करैत अछि। एहि संदर्भमे मोन पड़ैत अछि हमर गजलक पांति–

"बेसीसं बेसी दुत्कारि देब, और की
मोन नै भरत त' मारि देब, और की
हम सत्ते बाजैत छी बाजिते रहब यौ
घर वा समाजसं बारि देब, और की"

गलत परिवर्तनक विद्रोहसं हमर साहित्यिक यात्रा आरंभ भेल अछि, जखन हम दसम् वर्गक छात्र रही। 2007 मे आएल बाढ़िक कारणे स्कूलक छुट्टी साहित्य दिस मोड़ि देलक।

गीतसं आरंभ भेल हमर लेखन गजल, कथा, लघुकथा, कविताक बाटपर ससरैत बाल साहित्यपर आबि क' ठमकि गेल। तकर प्रतिफल भेल जे हमरा बाल साहित्य तेना ने गछारि लेलक जाहिसं बहराएब मोसकिल अछि।

"अपनामे नेनपन निहारल करै छी
कागतपर नेनाकें पाड़ल करै छी
जतय चिंता ने डर, मात्र प्रेमे भरल
आखरमे ओ दुनियां उतारल करै छी"

जखन हम अपन कविता नेना- भुटकाकें सुनबै छी त' ओकर कौतुहल आ ठोरपर आएल निश्छल, निर्मल मुस्की हमरा बेस आकर्षित करैत अछि। अपन भाषामे पढ़ल कविता वा कथासं ओकर मोनक तृप्तिकें हम प्रत्यक्ष अनुभव करैत छी। सिनेहसं भरल ई अनुभव हमरा बेसीसं बेसी बाल साहित्य रचबाक लेल छटपटाबैत अछि। परिणाम होइत अछि जे व्यक्तिगत व्यस्तताक बादो हम लिखै छी। सच कही त' धीया-पुताकें ठोरपर अपन भाषा, अपन साहित्य चढ़ैत देखबाक लेल लिखैत छी।

लेखन हमर व्यवसाय नै अछि। ई हमर नैसर्गिक गुण अछि। आत्म चिंतनसं आत्मानंद प्राप्त करबाक एकटा बहन्ना अछि। अपन विचारसं विश्वक डेग-डेग बेरएबाक माध्यम अछि। अपन सोचसं, निष्कर्षसं मानव जातिकें अवगत करेबाक सुगम साधन अछि लेखन।

असल जीवनमे हमर मित्र कम अछि। मने हमरा लग मोनक गप कहबाक एक मात्र साधन अछि लिखब। मोनक भाव आ नव-नव चेतनासं अपन मोन हल्लुक करबाक लेल लिखैत छी। अपन संस्कार, ज्ञान आ साहित्यकें भावी पीढ़ी लेल जोगा क' रखबाक लेल लिखैत छी। अपन आत्मसंतुष्टि लेल लिखैत छी। आ लिखैत छी अपन भाषासं भविष्यकें जोड़बाक लेल। हमरा पढ़ि कमसं कम एको गोटे मैथिलीसं प्रेम करथि, एहि आससं लिखैत छी। अंतमे एतबी कहब जे अपन साहित्यिक क्षुधा मेटेबाक लेल लिखैत छी। ■

समस्तीपुर जिलान्तर्गत मध्य विद्यालय, करियन मे प्रखंड शिक्षक। एखन धरि आध दर्जन सं बेसी पोथी प्रकाशित। हिनकर बहुचर्चित बाल कविता संग्रह अछि 'अंशु बनि पसरि जाएब'।

संपर्क : *ग्राम+पोस्ट : करियन, भाया : इलमासनगर, जिला : समस्तीपुर, राज्य : बिहार, पिन : 848117*
मो.: *9122105183,* ***ईमेल:*** amit11193@gmail.com

भोट

– नन्द कुमार झा

खिसएला सं भोट ने भेटत,
मतदाता के ध्यान करु।
छोरु धमकी खुरापात आब
पिछला करनी याद करु।
ई धरती नहि बम बारुद के,
मुर्गा मांछ बोतल दारू के।
भाषा मे नहि संयम राखब,
खुद उड़ि जायब बिना पंखि के।
पानि बहै छै अपन बाट सं,
अपन बाट पर अहुं चलू।
खिसिएला सं...मतदाता के...।।
जे अषाढ नहिं कैलक खेती,
अगहन हाथ माथ पर रेती।
चूल्हा चढल अदहन खौलल अछि,
आब उचित नहि दौरा दौड़ी।
ई गाड़ी आब छुटि गेल अछि,
अगिला गाड़ीक आस करु।
खिसिएला स...मतदाता के...।।
भोर बजैछी खुब तेवर सं,
सांझहि मे टाका चाही।
गारंटी काजक नही लै छी,
ऐहन नेता नै चाही।
चलल छि पीएम बनवालै,
कानून के बुझबा चाही।
कथनी करनी जकर एक नहि,
एहन पीएम नै चाही।
खिसिएला स...मतदाता के...।।

(पूर्व मुखिया करहिया पश्चिमी बलहा राजनगर मधुबनी बिहार)

गजल

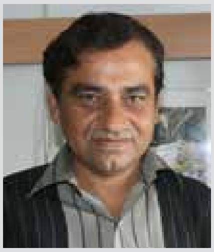

– सदरे आलम गौहर

घपला घोटाला भ्रष्टाचार
सब पार्टी के यैह व्यापार
चारा, व्यापम आ बोफोर्स
भ्रष्ट देखलहुं सब सरकार
पक्ष कें आब विपक्ष कइए
हमें लूटलहुं तोंड लूटह यार
भारत मे हमहो तों छी आब
के आब पायत हमर पार

ताज मुकुट पहिरत आब फेरो
हमर माथे वा तोहर कपार

मुरूख जनता भांग पीने अछि
के अछि ओकर सुध लेनिहार

मंदिर मस्जिद बचाक राख
यैह अछि सत्ता के आधार

तो सब बात कर मंदिर कें
मस्जिद पर हमर अधिकार

धर्म अफीमो सं पैघ निशा
जानइए सउंसे संसार

लाखों कचरमबद्ध करइए
धर्मक छुरा मे बड़ धार

बाहर युद्ध करब जाहि सं
शत्रु बूझत ई संसार

शादी बिआह आ नौत पिहान मे
एक्के छी फेर हम तो यार

क्षमा दया करुणा जं पसरै
स्वर्ग ने भ' जइतै संसार?

(ग्रा.+पो. : पुरसोलिया, जि.: मधुबनी, बिहार, पिन-847226, मो. 9006326629)

अपरिभाषित प्रश्न

– सोनी नीलू झा

हम त' अपने अहांक सोझ
पथर जकां पसारने रहैत छी
अपन उदगारकें

हं अहां ओन कहने छलहुं
तकर अखिआस अछछ हमर
जे अहांक पथार समेटब
एतेक सहज कहां होइत छैक
एहहमे समाहित होइत अछछ
कतेको बह अथी आ
अपरिभाषित प्रश्न
जकर प्रतिउत्तर अछि
पए अहीं लग

नहि हम बिसरलहुं
ओ सपथ जे नेने छलहुं
अहांक संगहि
अकास, पृथ्वी, जल,
आ अग्निकें साक्षि
मानि पाथर के स्पर्श कए

तहन एहि जिनगीक
कर्मकांडमे निमहि रहल छी
अहूं अपन धर्म आ
दाइत्वकें आओर हमहूं
कए रहलहुं अपन कर्म
निमहि रहलहुं अपन धर्म
बढ़ि रहलहुं अपन क्षेत्रमे
निश्छल भावक सङ्ग
अन्तर्मनमे एक दोसरक लए
सम्मानक भावकें
समेटने अपन हिअमे।

**(द्वारा- श्री विपिन कुमार झा, डॉ. सुनील ढींगरा के क्लिनिक के पास, मेन रोड, मंडावली, नई दिल्ली-110092
ईमेल:** sonipiku29@gmail.com
फोन: 8920445915)

कविता, भाषा आ बिम्ब (2)

कोनो भाषा एकटा विज्ञानक स्थूल तत्व नहि होयत अछि बल्कि 'बोली' या 'देशी' शब्दक संयोजन सं ओहि भाषाके धार दैत अछिण भाषा तखने विस्तार पाबैत अछि जेखन ओकरा मे आन-आन भाषाक शब्द संग नव-नव शब्द सेहो जोड़ल जायत अछि। मैथिली मे आन भाषाक शब्द ते आबि रहल अछि, मुदा नव-नव शब्द गढ़ल नै गढ़ल जा रहल अछि। ऐना मे मैथिली भाषाक विकास कोना होयत? चूँकि आजुक काल मे मैथिली मे बेसी कविता लिखल जा रहल अछि ताहि सं सोशल मीडिया पर एकटा 'डिस्कोर्स' भेल जे मैथिली कविता मे देशी शब्द, देशी बिम्बक प्रयोग कोना हेबाक चाही आ लोक अपन-अपन राय खूब लिखलक। जे विचार-विमर्श भेल ओकरा पर गहनता से विचारैक आवश्यकता अछि। फेसबुक पर भेल एहि विमर्शक बिन संपादित अंश हुबहू प्रकाशित क' रहल छी।

– संपादक

मूल पोस्ट

नारायण झा

(10 दिसंबर, 2018)

देशी शब्द, देशी बिम्ब परिचायक भए सकैत अछि मैथिली कविता लेल: ओना मैथिली कविताक परिचिति लेल आओर पक्ष सभ अछि, जे चिंतनक विषय थिक। मुदा, नितांत पक्ष कें ध्यान राखल जएबाक चाही। कतहुं-कतहुं मैथिली कविता कें विस्तार देबाक क्रम मे निजत्वक पहिचान मेटाइत देखल जा रहल अछि। जखन देवनागरी मे लिखल मैथिली कविता अनुवाद भए आन भाषा मे जाएत। लेखक वा भाषाक नाम नहि रहत। तखन ओकर पहिचान लेल अन्य तथ्य मे महत्वपूर्ण तथ्य मैथिली कविता मे प्रयुक्त देशी शब्द आ देशी बिम्ब अनिवार्य अंग कहाए सकैए। राष्ट्रीय-अन्तर्राष्ट्रीय स्तर आधारित कविता लिखेबाक चाही। जाहि सं मैथिली कविताक योगदान विश्व साहित्य मे हो। मुदा एकर अभिव्यक्ति लेल- की अपन देशी शब्द तकबाक खगता नहि छै की...? की अपन स्थानीय बिम्ब तकबाक खगता नहि छै की...? ई हमर विचार थिक। एहि पर अपेक्षित अछि अपने सभक विचार।

टिप्पणी

विकास वत्सनाभः हमर टटका कविता पर आदरणीय रौशन जनकपुरीक सरक एकटा कमेंटक प्रतिउत्तर मे ई सबटा बात काल्हि लिखने रही मे। जतेक प्रश्न अछि एहि पोस्ट मे ओकर उत्तर सभ प्राय: सेहो छैक। एहिठाम राखि रहलहुं अछि। देखी:-

रोशन जनकपुरीः सर, एकटा एंगल अवश्य छैक जे अपने कहलियैक अछि। नव प्रतिमान। सम्भव अछि एहि प्रतिमान कें ताकब। जं कही तं अपेक्षाकृत आसान होएत ताकब। मुदा, अतीतक नॉस्टेल्जिया किएक अबडेरल जाए? वर्तमानक मूल्यांकन अतीतक साक्ष्य बिनु कहां सम्भव होइत छैक? दोसर, अपन भाषीय विशिष्टता सेहो कतहुं ने कतहुं मानस पर रहैत अछि लिखबाक समय मे। अहांक टिप्पणी महत्वपूर्ण अछि। सहमत सेहो होइत छी, मुदा हमरा जनैत नॉस्टेल्जिया मैथिली कविताक श्रृंगार अछि। यैह कविता जखन विश्वक कोनो आन नागरिक पढ़ि रहल होएताह तं सम्भव अछि एहि प्रतिमानक माध्यम सं हम अहां हुनक लगीच ठाढ़ होइ। नेरुदाक कविता पढ़ैत चिलिक संस्कृति किंवा नाजिम हिकमत कें पढ़ैत ईसताम्बूल आ टर्कीक विधि व्यवहार सं परिचित होइत छी। एहि पर विमर्श हुए। अहांक विमर्श सं मोहत्तरी मे बहुत प्रभावित भेल रही। एहिना महत्वपूर्ण टिप्पणी सं दिशानिर्देश दैत रही।

अबधेश झाः प्रिय भाइ नारायण जी, बहुत बात करब एखन संभव नै अछि हमरा लेल। मुदा सहमत छी अहांक बात सं बहुत हद तक। एक बात जोड़ तत्तक्षण आवश्यक अछि जे एखन मैथिली मे बहुत रास कवि कविता लिखबे नै करैत छथि। ओ कैक गोट कविता कैक गोट कवि आ कैकटा भाषा सं बिछीबाइछ, अनुवाद कय

पोस्ट लगा रहल छथि।बड़का-बड़का हमर सबहक पुरोधा जानि अनजानि वाह वाह करैत छथि। एकटा कविता मे कतेक विंब प्रयोग करी। कथ्य कोना राखक चाही। शिल्प समीचीन छै की नै। उपमा, अलंकार वा आन आन चीज पर विचार करब आवश्यक अछि। ताहि लेल प्रत्येक कविक कविता पर फराक फराक बात करब नीक रहत। हम विचार सं सहमत छी।

कृष्णा मिश्र: लिपि सार्वभौमिक तत्व छैक, पछुलका गलती...

असाम के मूल निवासी अखनो धरि अहि बात के मानैत छैक जे ओकर नाट्य कला अधिकांशतः मैथिली भाषा के मदद सं बनल छै जे क्रियान्वयन मे सेहो छैक, एहन की भेल हेतैक जे मिथिला मे सब किछु झंपा तोपा गेलैक... नारायण सर, आहां जे कहलियै इ एकटा पैघ विषय वस्तु छै जाहि पर अधिकांश मैथिल लोकनिक नजरि नहिं जाएत छन्हिण्णआब इ जरुरी छै जे अपना सब अहि संदर्भ के निदान पर उतरि।

अजित झा: अहांक विचार सं पूर्ण सहमत छी।अपन मौलिकता बचल रहै।

काली प्रसाद कर्ण: बिनु भाषणबाजी पूर्णतः सहमत छी। "खगते खगता छै।''

बैकुंठ झा: आवश्यक आ सार्थक विमर्श। देशी शब्द आ देशी बिम्ब नहि रहतैक त विशिष्टता कोना?

ईश्वर करुणः हम त' हिन्दी कविता मे मिथिला के अधिकांश बिम्ब क प्रयोग करैत छी।

पंकज कुमार: उचित गप कहलहुं अछि भैया। अपनेक उद्गार सं पूर्ण सहमत छी। निश्चित रूपसं वैश्विक मुद्दा पर कविताक अधन अछि मुदा ओहिमे देशी शब्द आ बिम्बक समायोजनकें नहि नकारल जा सकैछ किएक कविताक मर्मकें आम पाठक धरि पहुंचेबाक लेल धरती धेने रहनाए आवश्यक अछि।

मीनाक्षी झा: पता नहि किछु गोटे आनक कबिता चोरी क अपन नाम से जोड़ि लैत छथि।

उदय चन्द्र झा विनोदः हेरायल किंवा हेराइत अपन शब्द सभक पुनर्स्थापन सेहो कविताक काज थिकै।

नारायण जी: मैथिली रचनामे नहि बेसी तं नहो भरि एहन माटि अवश्य रहक चाही, जाहिसं ओ रचना जखन आन भाषामे अनूदित भ' आबय तं निर्द्वन्द्व रूपसं कहल जाय सकय जे ई रचना धरतीक ओहि क्षेत्रक थिक, जकर नाम थिक मिथिला।

रोमिशा झा: कविता मे मात्र अपन क्षेत्रीय बिंब आ बात रहला से ओकर वितान कम होएत अछि। दोसर बात जे हरदम नीक लेखक के रचना युगचेतना आ युगबोधक संवाहक होइत अछि सार्वभौमिक संवेदना आ संघर्ष के चित्रण हुनकर दायित्व। अपन भाषा मे जखने लेखक वैश्विक परिदृश्य के समाहित करैत अछि ओ अनायासे अपन भाषा के नव दृष्टि आ नव आयामक संग संवर्धित क' लैत छथि जेकरा कारण कालक्रम मे ओ भाषा वैश्विक स्तर पर ठाढ़ होएबाक योग्यता हासिल क' लैत अछि। हां तखन ई बात अवश्य अछि जे एकरा लेल व्यापक अध्ययन आ मौलिक विचारधारा होएब आवश्यक।

नारायण झा: रोमिशा झा जी, अपने हमर पोस्ट फेर सं पढ़ी... हम तं कहि रहल छी जे मैथिली कविता कें वैश्विक स्तर पर जेबाक चाही आ जाए रहल अछि... मुदा ओ भाव केर अभिव्यक्ति लेल...शब्द आ बिम्ब ओइ भाषाक रहबाक चाहीण्णनहि तं ओकर मौलिकताक ह्रास भए सकैए...ओइ विषय कें व्यक्त करबा लेल की हमरा भाषा मे शब्द आ बिम्ब नहि अछि की... जं ओहन शब्द आ बिम्बक प्रयोगे करबैक तहन मैथिली कविता किएक...ओकर अनुवाद भेला बाद मैथिलीक सुगंधि नहि रहतैक तं...तं ओ मैथिली कविता किएक... ई हम मात्र प्रश्न कएने छी अपना लेल...जे विमर्श हमर काव्य यात्रा कें आओर परिच्छ करबा मे सहयोग देत...आदरणीया।

नारायणजी: रोमिशा झा, अहांक दिशा सुस्पष्ट आ व्यापक अछि, हम तकर आदर करैत छी, काज करैत बाट सोझराए जायत।शुभकामना रोमिशा।

अरुण कुमार लाल दास: अपन देशी किम्ब स किए लोक के परहेज छै पता नहि। हमर मॉटि पाइन मे एहन कोन वस्तु नै अछि जकरा ग्रहण कएला पश्चात लोक बलबान नहि बनि सकैत अछि। तहिना अदौ स हमर मैथिली साहित्य मे कि नहि अछि जाहि पर हम सब गर्व नै करी। अगर सैह अनकर दूध दही मिठगर छै त बेकार हम सब बाबा विद्यापति आ फेर नीचा उतरैत सीढ़ी पर पयर रखैत छी। पता नहि हम अपन साहित्य कें फौलो करैत छी त कतय हमर वितान कम वा निर्धारित भ जाइत अछि। आश्चर्य अछि। अपन माय के दूध पीअब त हम कमजोर कोना भ जायब। हम त यैह कहब हम एहि पोस्ट के लेखक श्री नारायण जीक बात स शत-प्रतिशत सहमत छी। तथास्तु।

मणिकांत झा: यथार्थख्रकविसबहकध सोच सबतरिधबन्हन मुक्तध सीमान स' बाहरध समद्रष्टा।

विनीता ठाकुर: सहमत छी। मैथिली कविता मे अपन माईट पाइन स जुड़ल शब्दक समावेस अत्यन्त जरूरी एतेक नीक शब्द अइछ जकर वर्णन नहि संगहि नया नया रचनाकार के संख्या लगातार बढ़ि रहल अइछ ई एकटा नीक संकेत अइछ मैथिली साहित्य लेल ई नव रचनाकार के प्रोत्साहन आ मार्गदर्शन करबाक चाही ना कि हतोत्साहित ई हमर निजी विचार अईछ जय मिथिला।

सत्यनारायण प्रसाद यादव: निश्चित रूपें कोनो भाषाक मूल साहित्य रचनामे ओहिठामक सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, धार्मिक आदिक परिवेशक उपजल भाव निहित रहैत अछि। कारण जे साहित्य तॅं समाजक दर्पण कहबैत अछि आ ओ समाजक यथार्थ स्थिति तथा भविष्यक कल्पनाशीलता कें अकानैत रहैत अछि। समाजक बदलावक अनुरूप साहित्यमे परिवर्तन सेहो अबैत अछि मुदा ओ अपन मूलता आ उद्देश्य सं नहि भटकैत अछि। निश्चित रूपें मैथिली साहित्यक रचनामे

ओहिठामक शब्द,बिम्ब निहित रहबाक चाही। एहि पोस्टमे आदरणीया रोमिशा झा जीक विचार जे क्षेत्रीय बिम्ब आ बात रहला सं ओकर वितान कम होइत अछि, ताहि सं हम व्यक्तिगत रूपें असहमति जतबैत छी। तकर कारण जे आइ हम सब जाहि मैथिलीक साहित्यक सामग्री आओर महापुरुष लोकनि कें अपन कहैत छी आ अपनाकें गौरवान्वित महसूस करैत छी तकर तॅ मूल आधारे यैह सब छल। जॅ एहि सबहक अभाब रहित त' आइ हमर साहित्य नव आ छुछुन बुझि पड़ैत। चाहे ओ प्राकृत पैंगलम् होए, डाकघाघ होए, सिद्धाचार्य लोकनि होथि, ज्योतिरीश्वर होथि या हुनक वर्णरत्नाकर होए, विद्यापति होथि या गोविन्द दास, सबहक आधार त' यैह थिक नहि तं कतेको प्रान्त एकरा हथियाब' लेल व्याकुल छल। रहल राष्ट्रीय आ अन्तर्राष्ट्रीय परिवेशक आधारित रचना कें त' परवर्ती समयमे सेहो लिखल गेल अछि आ अखनहुँ लिखा रहल अछि। आचार्य सुमन जीक 'दतवती' कें देखि तॅ बहुत किछु स्पष्ट होइत अछि, हुनक आधार त' विदेशी (चीन) रहल मुदा ओ अपन शब्द, शिल्प, भाव आ उद्देश्य सं कतहू नहि भटकलाह। एहि कडिमे यात्रीजी, राजकमल चौधरी, ललित, कुलानन्द मिश्र, हरेकृष्ण झा आदि सब गोटे निश्चित रूपें शामिल छैथ। तें हमरा जनैत जॅ मैथिली साहित्यक रचनामे एहिठामक शब्द, बिम्ब आ परिवेश शामिल रहैए त' ओकर वितान कम नहि बरु आओर बेसी समृद्ध आ मूलताक रूपमे ठाढ रहत।

पंकज कुमार: सत्येन्द्र प्रसाद यादव, वाह! अहांक सूक्ष्म अवलोकन आह्लादित कएलक अछि। कतेक फरीछ कए लिखलहुं अछि।

अबधेश झा: सत्यनारायण प्रसाद यादव जी बहुत गंभीर चिंतन अछि अहांके। सहमति रखैत छी हम।

नारायण झा: धन्यवाद सत्यनारायण जी, नीक लागल अहांक विचार।

सारंग कुमार: अहांक भावना, ध्येय नीक अछि नारायण बाबू। हमरा जनैत, कविता तं स्वत: स्फूर्त होइ छै। अहां नियारि क', सायास राष्ट्रीय/अंतर्राष्ट्रीय कविता लिखि उदाहरण सोझां रखियौ। भ' सकैए ओकर अनुकरण क' मैथिली मे राष्ट्रीय/अंतर्राष्ट्रीय कविक टीम तैयार भ' जाय।

नारायण झा: सारंग कुमार भैया हमर ध्येय अछि...जे कविता मे देशी शब्दक प्रयोग आ देशी बिम्बक प्रयोग...सं हमर मौलिकता बचल रहि सकैए ओकर अनुवादक बादो...

ओना तं कवि कें बुझल हेबाके चाही जे कविता लिखल नहि जाइ छै...कविता लिखा जाइत छै किएक काव्यक तं तिनहि हेतु छैक व्युत्पन्न---जाहि सं काव्य स्वत: जन्मैत छैक

प्रतिभा---जाहि कारणे सेहो कविता जनमि सकैए आ एहि बलें कविताक स्तर पर विचार होइत छैक अभ्यास--- एहि बलें कविता सेहो लिखा सकैए आ स्वत: स्फूर्त कविता कें मांजल जा सकैए।

प्रणाम।

दिलीप कुमार झा: मैथिली कवितामे नब्बे प्रतिशत पुरने लिखल गप के दोहरौलि भ' रहल अछि।कि नारायण झाजी एहि बात सहमति अछि अहांक।

नारायण झा: दिलीप कुमार झा भैया, एहि पर अलग सं विमर्श...एखन एहि पोस्ट पर विचारक खगता अछि...जाहि सं हमर काव्य यात्रा फरिच्छ हएत।

दिलीप कुमार झा: नारायण झा, हम सारंग कुमार जीक गप सं पूरा सहमति रखैत छी।

नारायण झा: दिलीप कुमार झा भैया, हुनक गप तं सार्वभौम सत्य छै...ताहि मे... मैथिली जकां लिखब आ मैथिली कविता लिखब मे फर्क...

कामिनी चौधरी: जे सोचि के लिखल जायत ओ कविता नहि गद्य भ सकैय आ जे कविता हैत ओतय सोचैक समय नहि भेटत। कविता नदीक धारा सन अपने बहैत अछि। जे जाहि क्षेत्रक छैथ ओकर चिंह अपने आप कविता ल के चलत। अलग सं प्रयास करैक कोनो बेगरता नहि।

नारायण झा: कामिनी चौधरी, हमर पोस्ट पर आउ... कविता ननप्लान्ड विधि छियैक ओ कवि कें बुझल रहबाक चाही... ताहि पर नै...बात पर विचार दिऔ।

नारायण झा: लिखेबाक क्रम मे देशी शब्दक प्रयोग आ देशी बिम्बक प्रयोग... सन्दर्भ मे विचार राखू...।

कामिनी चौधरी: हमर बात पर ध्यान दियौ समय रहय त।

कामिनी चौधरी: भाषा के अपना रास्ते बहय दियौ। बांध नहि बनाऊ।

नारायण झा: कामिनी चौधरी, हम बांध के बनेनहार...हम अपन रस्ता लेल विमर्श रखने छी।

आभा झा: हमहूं अपनेक विचार सं सहमत छी मुदा विडम्बना ई छैक जे एहिठाम तऽ... ''मुंडे मुंडे मतिर्भिन्ना'' चरितार्थ होइत अछि। कहबा लेल त' बहुत किछु अछि मुदा छोट मुंह पैघ बात...!

नारायण झा: आभा झा आदरणीया कहबाक चाही...कुंठित भाव नहि रहएण।

आभा झा: प्रतिवाद करबा हेतु एखन अपना कें सक्षम नहि बुझैत छी। समय के प्रतीक्षा करू सबकिछु अनुकूल होएत! जाधरि मिथिला मे अहांलोकनि सन युवा लेखक लेखिकाक जन्म होइत रहतै ताधरि हतोत्साहित हेबाक प्रयोजन नहि अछि! जय मैथिली!

मधुकांत झा: मैथिली कविता के तं दुर्दशा एहेन अछि जे विद्यापति आ एक आध

कवि के छोडि कोनो कविक रचित पांती ककरो कंठ मे नहि बसल। किएक:

1. पद्यक गेयताक अभाव
2. सर्वकालिक सत्यक प्रस्तुतिक दुर्भिक्ष
3. रचना के अद्वितीय संवेदनाक अनुपस्थिति
4. सूक्ष्मतम दृष्टिक अकाल
5. विषयक नवीनताक रौदी

स्वान्त:सुखाय जे लिखै छथि, जकर संख्या मैथिली मे अधिक अछि, तिनकर

कोनो बात नहिं। लेकिन मैथिली मे ओहि रचना के जरूरत अछि जे एहेन विषय कलात्मक ढंग सं प्रस्तुत हो जे संसारक साहित्य लेल अनुपम हो। एहि मे मैथिलत्वक मात्राक माप बहुत उपयोगी नहिं होयत।

अमर कान्त लाल: सहमति संग, मैथिली, ठेंठी मैथली केर अलोपित होइत शब्द आ आओकर ज्ञानक अभावे लोक के मैथिली सं दूर त' नहि क रहल, खेरही, तेवखा, कलउ बुझनाहर आब कै गोटे आ एकर उपयोग करता कै गोटे तुलना आवश्यक, हमर छुद्र ज्ञान परन्च सामयिक सत्य सेहो।

राजीव रंजन झा: भाषागत ओ काव्यात्मक मौलिकताक रक्षार्थ अपन ठेठ शब्द आओर काव्य-शिल्पक अनुसंधान ओ उपयोग आवश्यक। मुदा, ई प्रवाहमान आ अक्षुण्ण रहए ताहि लेल आवश्यक जे एकर अंतरी एतेक पुष्ट करबाक उपक्रम सेहो कैल जयबाक चाही जाहि सं आन आन भाषाक नीक-नीक आओर सुपाच्य तत्वकें उदरस्थ कए ओकरा अपन रक्त-मज्जामे निमग्न क' अपन अस्तित्वकें आओर विस्तार द' सकय। तात्पर्य ई जे भाषा बहैत नीर होइछ। अपन प्रवाहमे बहुत किछु समेटैत जौं आगू नहि बढैत रहत तं मलिन होएबाक खतरासं नहि बचल जा सकैछ।

नारायण झा: राजीव रंजन झा, एकदम परफेक्ट...दोसर बात अहां कहलहुं जे प्रवाहमान आ अक्षुण्ण रहबा लेल एकर अंतरी पुष्ट होअय...जाहि सं आन-आन भाषाक नीक सुपाच्य तत्त्व कें उदरस्थ कें.. .अपन भाषाक विस्तार देल जएबाक चाही. ..परफेक्ट...हम अहांक बात सं सहमत छी, जे हमर पोस्टक निहितार्थ अछि...जेना भाइ. ..टिकट, लाल्टेम, स्कूल, कॉलेज, लॉफर, मासटर (गुजराती शब्द थिकै शिक्षक लेल प्रयुक्त होइत छै) आदि-आदि जे अपन भाषाक रस मे डूबल छैक। तहिना... धन्यवाद।

बिजेता चौधरी: एकदम सहमत छी, नारायण जी। हमरा लगैत अछि जे अपना सभ देशी शब्द आ बिम्ब दूनूक प्रयोग त करिते छी, अपन अपन हिसाबे तहन एहि बहस केर प्रयोन किए?

मधुकांत झा: रचना मे देशज शब्द और बिम्ब संग उपयोगी होयब सेहो आवश्यक।अन्यथा अपच भे जाइछ।

नीरज झा: हम आरंभ सं एहि पोस्ट पर नजेर रखने छी! आब जा के किछु कहबाक हिम्मत भेल! शब्द, पैंच तखन लेल जाय जखन अपना लग नहि होअय! मैथिलीसं समृद्ध शब्दावली बहुत थोड़ भाषा लग होयत, ई हमर मानब अछि! कि बिनु विदेशज शब्दक प्रयोग के अहां वैश्विक

कविता के समकक्ष नहि आबि सकैत छी? विद्यापति वा यात्रीक शब्द वा बिम्ब कि वैश्विक नहि? टैगोर वैश्विक नहि? वस्तुतः ई सभ हीन मानसिकता के ऊपज थिक! नितांत क्षेत्रीय होइतो कवि सहजता सं वैश्विक भ' सतैत छथि, बशर्ते अपन भाषिक मौलिकता नहि त्यागथि! वैश्विक विचार, विमर्श लेल अपन भाषिक पहिचान सं समझौता करब समीचीन नहि!! ■

शोध पत्र जमा करबाक लेल दिशा-निर्देश

- **शोध-पत्र एमएस वर्डमे मंगल वा कृतिदेव फॉण्टमे 14 पॉइंट साइजमे टंकित करायके ई-मेल करू।**
- **शोध-पत्र लिखैत काल सन्दर्भक स्पष्ट उल्लेख करू। पुस्तकक सन्दर्भ, पत्र-पत्रिकाक सन्दर्भ, प्रकाशन वर्ष आ संस्करणक अंकित हैब अनिवार्य अछि। सन्दर्भक लेल ए.पी.ए.-छठम शैली (APA 6th Edition) के उपयोग करब अनिवार्य अछि।**
- **शोधपत्र पूर्ण रूपेण मौलिक हेबाक चाही, जेकर घोषणा-पत्र संलग्न हेबाक चाही, नहि त' शोध-पत्र पर विचार नहि कयल जायत।**
- **शोध-पत्रक प्रकाशन संपादक-मंडल पर निर्भर अछि। संपादक-मंडल के संतुष्ट हेबाक बादे शोध-पत्र प्रकाशित कयल जायत।**
- **शोध-पत्रक आरंभमे शोध-सारांश (बेसी सँ बेसी 100 शब्द) आ अंतमे निष्कर्ष अवश्य लिखू।**
- **पोथी-समीक्षाक लेल संपादकक लग कार्यालय कें पता पर पठाबी।**

बथान (एनिमल फार्म)

जॉर्ज ऑर्वेल
अनुवाद : विनीत कुमार झा

एखन धरि अहां पढ़लहुं जे कोना बथान मे सं मनुख सभके भगा देल गेल आ माल-जालक राज भेल। नेपोलियन एकदम सं ओहि बथानक नेता भ' गेल। 'इंग्लैण्डक माल-जाल' नामक कविता सभ कियो गाबैत छल। पवनचक्की बनि गेल। जॉर्ज आर्वेलक प्रसिद्ध उपन्यास 'एनिमल फार्म' केर सातम खंडक धरि अनुवाद पछिला अंकमे प्रस्तुत छल। नवम खंडक अनुवाद प्रस्तुत अछि।

बॉक्सरक चिरल सुम कें ठीक होय मे बड समय लागि गेल। विजय पर्वक समारोह खत्म होय के आगिला दिन सं ओ पवनचक्की फेर सं बनायब शुरू क' देने छल। बॉक्सर एक दिनक छुट्टी लेबाक लेल मना क' देने छल आ ओकरा इज्जतक सवाल बना लेने छल जे कियो ओकरा तकलीफ मे नै देखय। सांझक काल ओ क्लोवर के असगरे मे बतौलक जे सुम ओकरा बड़ तकलीफ द' रहल अछि। क्लोवर जड़ी-बूटी चबा-चबा क' ओकर पुलटिस बनाबैत छल आ ओकरा सं बॉक्सरक सुम के इलाज करैत छल। ओ आ बैंजामिन, दुनू मिल क' बॉक्सर सं कम मेहनत करय के आग्रह करैत छल। क्लोवर ओकरा बताबैत छल, 'घोड़ेक फेफड़ा सदिक्खन काज नै रहि सकैत अछि,' मुदा बॉक्सर सुना-अनसुना क' दैत छल। ओ बतौलक जे जिंदगीमे ओकर एकटा महत्वाकांक्षा अछि- जखन ओ रिटायरमेंटक उम्र धरि पहुंचय, पवनचक्की के अप्पन आंखि सं बनैत देखय।

शुरू-शुरू मे जखन माल-जाल बथानक लेल पहिलुक बेर कानून बनायल गेल छल ते घोड़ा आ सुग्गैरक लेल रिटायरमेंटक उम्र बारह बरख, गायक लेल चौदह बरख, कुकुरक लेल नौ बरख, भेड़क लेल सात बरख आ मुर्गी आ हंसक लेल पांच बरख तय कल गेल। बूढ़ लेल उदार पेंशनक लेल सहमति भेल छल। एही समय हालत ई छल जे एखन धरि कोनो भी माल-जाल रिटायर भ' के पेंशन नै पाबि रहल छल, मुदा बहुत काल सं एही मामला पर बड़ चर्चा भ' रहल छल। आब फलोद्यानक बगल बला छोट सन खेत के जौ के खेती लेल अलग क' देने सं, ई अफवाह पसरय लागल छल जे बड़का खरबौनी के एक कोन के चारू कात बाड़ लगा के ओकरा सेवानिवृत माल-जाल के चरय के ठाम बनाबैक छल। बताओल गेल छल जे घोड़ा के लेल पांच पौंड अनाज आ ठार मे पंद्रह पौंड सूखल घास आउर सार्वजनिक छुट्टी पर एकटा गाजर आ संभव हुए ते एक सेब पेंशनक रूपमे देल जायक छल।

बॉक्सरक बारहम जन्म दिन अगिला बरख गर्मीक बाद पड़ैत चल। एही बीच जिनगी मोश्किल सं भरल छल। ठारक मौसम पिछला बरखक तरहे ठिठुराबय बला छल आ खायके पहिने सें बेसी कमी छल। एक बेर फेर सुग्गैर आ कुकुरक अलावे सबके राशनमे कटौती क' देल गेल। स्क्वीलर स्पष्ट केलक जे कि राशनक नाप-तौल क' समानता आनब पशुवादक सिद्धांतक खिलाफ होयत। किछु हुए ओकरा दोसर माल-जालक आगू ई सिद्ध करय मे कोनो परेशानी नै भेल जे लागय चाहे जे किछु, मुदा खाय-पीबय मे कोनो कमी नै छल। हालांकि राशनमे फेरबदल करब बेसी जरुरी बुझल गेल। (स्क्वीलर कखनो भी कटौती नै कहि फेरबदल कहैत छल), मुदा जोंसक दिनक तुलनामे देखल जाए ते आश्चर्यजनक सुधार भेल अछि। अप्पन तीख, तेज आवाजमे ओ विस्तारसं हुनका आगू सिद्ध केलक जे ओ जोन्सक दिनक तुलना मे बेसी जौ, सूखल घास आ बेसी कद्दू भेट रहल अछि, ओ आब कम घंटा काज करैत अछि, आओर ओ आब बेसी क्वालिटी के पानि पीबाक भेट रहल अछि, हुनकर जीवन काल बढ़ गेल अछि, हुनकर बाल-बच्चा बेसी अनुपात मे शिशु अवस्था पार क' के जीवैत अछि, जे आब हुनकर थान मे बेसी पुआल अछि आ हुनका पिस्सू कम सताबैत अछि। माल-जाल एकर

संपर्क : ग्राम+पोस्ट: आनंदपुरा, भाया: ग्वालपाड़ा, जिला: मधेपुरा, बिहार-852115
मो. 9911364316

एक-एक शब्द पर विश्वास क' लैत अछि। सत ते ई छल जे आब जोंस आ ओ सब किछु जेकर प्रतीक छल, हुनकर स्मृति मे लगभग उतरि चुकल छल। ओ जानैत छल जे आय-काल्हि जिनगी दुश्वार अछि आ ओ अक्सर भूखल आ बिना ओढना-बिछौना के रहैत अछि आ ओ जखन नै रहैत अछि ते काज मे जुतैत रहैत अछि मुदा एही बात मे कोनो शक नै अछि जे बीतल दिन बड ख़राब छल। हुनका ई विश्वास क' के नीक लागैत छल। एकर अलावा, ओही दिन ओ गुलाम छल आ आब ओ आजाद अछि, आ एही सं सभटा फर्क पड़ैत अछि। स्क्वीलर ई बतायब कखनो नै बिसुरैत अछि।

आब खाय बला बेसी बढ़ गेल छल। शरद ऋतुमे चारि सुग्गैर्नियां एक संग चारि टा बच्चा के जन्म देलक। कुल मिला के इकतीस सुग्गैर के जन्म देलक। नन्हां सुग्गैर चितकबरा छल आ चूंकि बथान मे सिर्फ नेपोलियन टा एकटा सुग्गैर छल, जेकरा बधिया नै केल गेल छल, ताहि सं ई पता लगायब मोश्किल नै छल जे ई बच्चा केकर औलाद अछि। ई घोषणा करल गेल जे बाद मे जखन ईटें आ लकड़ी कीनल जायत, फार्म फार्म हाउसक बगीचामे एकटा स्कूल बनाओल जायत। एखन नन्हा सुग्गैर के नेपोलियन अपने सं फार्म हाउसक भंसा घरमे पढ़ा-लिखा रहल छल। ओ बगीचामे अभ्यास करैत छल। ओकरा सं कहल गेल जे ओ दोसर नन्हा माल-जालक संग नै खेलय। लगभग, एही दिनमे, ई कानून बना देल गेल जे जखन सुग्गैर आ दोसर माल-जाल बाट मे भेटय ते दोसर माल-जाल एक दिस ठाढ़ भ' जाय आ इहो कि सुग्गैर के, चाहे ओ कोनो स्तरक हो, आब रवि दिन अपना मूंछ पर हरिहरका रिबन लगाबय के सुविधा होयत।

बथानक लेल ई बरख खूब सफल रहल, मुदा पाय के तंगी तकर बादो बनल रहल। स्कूलक इमारत लेल ईटें, रेती, चूना कीनैक छल। पवनचक्कीक लेल मशीनरी कीनैक लेल बचत शुरू करैक छल। आ फेर लैंप जलाबैक लेल तेल छल। घरक ले मोमबती छल। नेपोलियन के अपना लेल चीनी छल (ओ दोसरा सुग्गैर के एही आधार पर चीनी लेबाक लेल मना केने छल जे एही सं ओ मोट भ' जायत) आ फेर पचीस टा चीज छल जेकरा बदलवाक छल, जेना औजार, कील, डोरी, कोयला, लोहा-लंगड़ आ कुक्कुरक लेल बिस्कुट। सूखल घासक एकटा गट्ठर आ अल्लूक फसलक किछु हिस्सा बेचि देल गेल, अंडा के ठेका चार सौ अंडा सं बढ़ा क' छह सौ अंडा प्रति सप्ताह क' देल गेल। एही सं मुर्गी के सेबैक लेल एतेक कम अंडा भेटल जे ओ मुश्किल सं अप्पन संख्या बराबर राखि पाबैक लेल चूजा द' सकल। दिसंबर मे घटायल गेल राशन फरवरी मे फेर घटा देल गेल। तेल बचाबैक दृष्टि सं थाना पर लालटेन के ल' जायब मना क' देल गेल। सुग्गैर पहिलुका तरहे सुविधा भोगैत रहल आ ओ पड़ल-पड़ल मोटा रहल छल। फरवरी के आखिरी दिनक एक दुपहर के एक गरम, गाढ़, घना, भूख जगा दय बला खुशबू भनसाघर सं आयल, जोंसक काल सं उजाड़ पड़ल कलालखाना सं बिखरब शुरू भ' गेल छल। मालजाल आय धरि एहन खुशबू नै सूंघने छल। कियो बाजल जे ई जौ पकय के महक अछि। मालजाल भूख सं परेशान भ' हवा के सूंघलक आ हैरान भेल जे के ओकर राति के खाना के आय गरमागरम सानी तैयार कल जा रहल अछि। मुदा कोनो गरम सानी देखा नै पड़ल। अगिला रवि दिन ई घोषणा क' देल गेल जे आब सं सभटा जौ सुग्गैर के लेल आरक्षित रहत। फलक बगीचा के बगल बला खेत मे पहिने सं जौ बोअल जा चुकल छल। ई खबर पसैर गेल छल जे आय-काल्हि सभटा सुग्गैर के रोजाना एक पिंट बीयरक राशन भेट रहल अछि। नेपोलियन अपने आधा गैलन बीयर लैत अछि। ओकरा ई सदिक्खन क्राउन डर्बी सूपक प्लेट मे परोसल जायत अछि।

मुदा जों ओतय सहैक लेल जीवनक तकलीफ बेसी छल, ते हुनका किछु हद धरि तसल्ली छल जे आय-काल्हिक जिनगी मे बेसी मान-मर्यादा अछि। आब बेसी गायब-बजायब होयत छल, बेसी भाषण होयत छल, बेसी जुलूस निकालल जायत छल। नेपोलियन ई आदेश देने छल जे हफ्ता मे एक बेर स्वैच्छिक प्रदर्शन जेहन नाम बला कोनो चीज मनाओल जाय। एकर उद्देश्य ई छल जे बथानक संघर्ष आ सफलता के मनाओल जा सकय। एक निर्धारित काल पर सभटा माल-जाल अपन-अपन काज छोड़ दैत छल आ सेना के टुकड़ीक तरहे बाड़क चारदीवारी मे चारू कात मार्च करैत छल। एही मे सूग्गैर नेतृत्व करैत छल। ओकर पाछां घोड़ा, फेर गाय, फेर भेड़ें आ ओकर बाद दड़बाक प्राणी रहैत छल। कुक्कुर जुलूसक बाम-दहिन चलैत आ सबसें आगू नेपोलियक कारी मुर्गा मार्च करैत छल। बॉक्सर आ क्लोवर सदिक्खन अपन बीच सुम आ सींग बला बड़का हरियर झंडा लेल चलैत छल। एही पर लिखल रहैत छल, 'कामरेड नेपोलियन अमर रहय।' एकर बाद नेपोलियनक सम्मानमे रचल गेल कविता सभक पाठ कल जायत छल आ फेर स्क्वीलरक भाषण होयत छल, जाहि मे ओ खाद्यान्नक उत्पादनमे हाल मे भेल वृद्धि के लेखा-जोखा दैत छल। एही मौका पर बंदूक सं एकटा गोली दागल जायत छल। भेड़ एही स्वैच्छिक प्रदर्शनक सबसें पैग भक्त छली, आ जों कियो शिकायत करैत छल (जखन कोनो सुग्गैर आ कुक्कर आसपास नै होयत छल ते कोनो माल-जाल सेहो कहैत छल) जे एकरा सं सामल के बरबादी होयत अछि आ देर धरि सर्दी मे ठिठुरैत ठार रहय पड़ैत अछि, ई तय छल जे भेड़ 'चारि टांग नीक, दू टांग खराब'क अप्पन रागमे

ओकरा शांत क' दैत छल। कुल मिलाके माल-जाल के एही समारोहमे आनंद आबैत छल। बेर-बेर ख्याल दिलायब जायब हुनका सबके सुखकर लागैत छल जे किछु हुए, ओ सचमुच अप्पन मालिक अछि आ ओ जे किछु करैत अछि, अप्पन भलाई के लेल करैत अछि। ताहि सं एही गीत सं, जुलूस सं, स्क्वीलरक नम्हर लिस्ट सं, बंदूकक गूंज सं, मुर्गाक कुकडू-कूं सं आ झंडाक फहराबय सं ओ बिसुरि जायत छल जे हुनकर पेट, अकसर खाली रहैत अछि।

अप्रैलमे बथानके गणतंत्र घोषित कल गेल आ एकरा संग राष्ट्रपतिक चुनाव जरूरी भ' गेल। एही पदक लेल एकहि उम्मीदवार छल- नेपोलियन। ओकरा निर्विरोध चुनि लेल गेल। ओहि दिन सुनयमे आयल जे किछु आओर दस्तावेज भेटल, जाहि सं स्नोबॉल आ जोंसक बीच सांठ-गांठक आओर ब्यौरों पर सं परदा उठैत अछि। आब ई पता चलल जे स्नोबॉल दांव-पेच सं तबेलाक लड़ाई मे हारय टा के कोशिश टा नै केने छल, जेना पहिने माल-जाल कल्पना केने छल, ओ ते खुलेआम जोंसक दिस सं लड़ि रहल छल। दरअसल, ओ मनुखक फ़ौजक असली नेता छल। आओर जखन ओ लड़ाईक मे हमला केने छल ते ओकर होठ पर यहि शब्द छल, 'मानवता अमर रहय।' किछु माल-जाल के एखनो ख्याल होयत जे ओ स्नोबॉलक पीठ पर घाव देखने छल, ओ घाव नेपोलियनक दांत के गड़बैक निशान छल।

गर्मीक काल मोसेस, काला कौवा अचानक बथानमे वापस आबि गेल। ओ कतेक बरख बाद घुरल छल। आब ओ बिलकुल पहिनुक तरहे छल। कोनो काज-धाज नै करब आ ओही तरहे मिसरी पर्वतक पुरना राग अलापैत छल। ओ एकटा ठूंठ पर जा बैसइत, अपन करिया पंख फड़फड़ाबैत आ जे भी ओकरा सुनैक लेल तैयार भ' जाय, ओकरा आगू घंटा भरि बक-बक करैत छल।

'ओतय, उम्हर, कॉमरेड्स,' अपना नमहर चोंच सं ओ आसमान दिस इशारा क' के कहैत छल, 'ओही दिस जे कारी बदल देखा डद' रहा अछि नै, ओहि के पार अछि मिसरी पर्वत, एक एहन सुखद देश जतय हम बदनसीब के अप्पन सं हमेशा के लेल छुट्टी भेटतण' ओ एतय धरि दावा करैत छल जे एक बेर ओ अप्पन ऊंच उड़ान पर ओतय जा चुकल अछि, ओ खुद बनमेथीक सदाबहार खेतक झाड़ मे ऊगल अलसीक खली आ गुड़ देखने अछि। कतेक रास मालजाल ओकरा पर भरोस करैत छल। ओ अपने सं तर्क देलक जे एही समां हुनकर जिनगी भुखमरी आ हाड़-तोड़ मेहनत सं बहाल अछि, ही ई ठीक आ उचित नै अछि जे कत्तो एकटा सुखद संसार सही बसल अछि? मोसेसक प्रति सुग्गैरक व्यवहार के बुझय मे सभके उलझन भ' रहल छल। ओ सब उपेक्षा सं ई घोषणा क' देलक जे मिसरी पर्वतक ल' क' ओकर खिस्सा खाली दिमागक उपज अछि, एकर बादो बिना कोनो कामकाज केने, रोजाना चुल्लू भर बीयरक भत्ता पर ओकरा बथान मे रहय लेल देल गेल।

सुमक चोटमे आराम आबि गेला के बाद बॉक्सर पहिने सं बेसी मेहनत करैत छल। सत मे, ओही बरख सब माल-जाल नौकर तरहे काज केलक। बथानक नियमित काजक अलावा, पवनचक्की के फेर सं बनाबैक छल, फेर मार्च मे नन्हका सुग्गैरक लेल स्कूलक मकानक काज शुरू क' देल गेल। कतेक बेर अधपेट खायके संग काजमे नम्हर समय गुजारब मोश्किल होयत छल मुदा बॉक्सर कखनो विचलित नै होयत छल। ओ नै ते अप्पन शब्द सं आ नै कत्तो काज सं एहन कोनो संकेत देलक जे ओकरा मे आब पहलुक जेना ताकत नै रहल अछि। आब ओकर मुंह-कान सेहो पहिने सं बदलल नजरि आबैत छल। ओकर खालक चमक पहिलुका तुलनामे कम भ' गेल छल, आ ओकर विशाल पुट्ठा सिकुड़ गेल लागैत छल। बाकी माल-जाल बताबैत अछि, 'वसंत ऋतुक घास आबैत-आबैत बॉक्सर पहिलुका जेना भ' जायत,' मुदा वसंत आयल आ गेल, बॉक्सरक हालत ताहिने रहल। कतेक बेर खदानवाली ढलान पर ओ कोनो पैग चट्टान के अप्पन बाहुबलक सहारे धकैलैत छल, ते साफ लागैत छल, जे सिर्फ काज करैक लागल ओकरा ओकर पइर पर ठाड़ केने अछि। एहन काल मे ओकर होंठ बुदबुदाबैत देखल जा सकैत छल, 'हम आओर कठिन परिश्रम करब', ओकर आवाज संग छोडि चुकल छल। एक बेर फेर क्लोवर आ बैंजामिन ओकरा चेतैने छल जे स्वास्थ्यक ख्याल राखय, मुदा बॉक्सर एही गप के कोनो मोजर नै देलक। ओकर बारहम जन्मदिन आबय बला छल। पेंशन पर जाहि सं पहिने ओ पाथरक नीक-सन भंडार जमा क' दैत चाहैत छल। ओकर बाद जे किछु हुए, ओकरा ओकर परवाह नै छल।

गरमीक एक सांझ भेला के बाद अचानक बथान मे हवा उड़ल जे बॉक्सर के किछु भ' गेल अछि। ओ पवनचक्कीक लग एकटा पाथर घसीट क' ल' जायक लेल असगरे गेल छल। दुर्भाग्य सं अफवाह सत निकलल। किछु मिनट बाद कबूतर फड़फड़ाबैत खबर आनलक जे, 'बॉक्सर खैस पडल अछि। ओ पसलीके बल खसल अछि आ ठार नै भ' सकत।'

बथानक आध माल-जाल ओहि ऊंचका दिस दौगल जतय पवनचक्की ठार छल। ओतय परल छल बॉक्सर, गाड़ीक बमके बीच, गर्दन बाहर निकलल छल। ओ अपने माथ के नै उठा पाबि रहल छल। ओकर आंखि पथरा गेल छल, आ पूरा देह पसीना सं लथपथ छल। ओकर मुंह सं खूनक एकटा पातर लकीर बहि के आबि रहल छल। क्लोवर ओकरा लग ठेगुनक बल झुकल छल।

'बॉक्सर,' ओ चिकरल, 'कोना छी?'

'ओह, हमर छाती' बॉक्सर रकम आवाजमे बाजल, 'कोनो परवाह नै, हमरा लागैत अछि, अहां हमर बिनो पवनचक्की पूरा क' लेब। आब ते पाथरक नीक ढेर जमा भ' गेल अछि। अहां के ओहिनो अगिला मास जेबाक छल। अहां से सत कहू ते हम आब अपन रिटायरमेंटक बाट देखि रहल छी। आ शायद बैंजामिन सेहो ते बूढ़ भ' चलल, ओ ओकरो ओहि काल रिटायर क' देत। तखन दुनूक संग रहत।'

'हमरा तुरंत मददक जरूरत अछि,' क्लोवर बाजल, 'दौडू, स्क्वीलर के जा के बताबी।'

बाकी सब माल जाल स्क्वीलर के खबर दैक लेल बथान दिस दौड़ल। सिर्फ क्लोवर ओतय रहल आ बैंजामिन बॉक्सरक लग बैसल, बिना किछु बाजल, अप्पन नम्हर नेंगरी सं माछी उड़बैत रहल। लगभग पंद्रह मिनट बाद स्क्वीलर आबि गेल। ओ सहानुभूति आ चिंता सं भरला छल। ओ बतौलक जे नेपोलियन के अप्पन बथानक सबसं बेसी निष्ठावान कामगारक संग भेल एही दुखद दुर्घटनाक पता चलल अछि, ओ बड व्यथित भ' गेल छैथ। ओ बॉक्सरक इलाजक लेल विलिंगडनक अस्पतालमे भेजहि के व्यवस्था क' रहल अछि। एही पर माल-जाल कनि बेचैन भ' गेल। आय धरि मौली आ स्नोबॉलक अलावा आर कियो बथान छोड़ के कखनो नै गेल छल। हुनका ई सोचि के नीक नै लागि रहल छल जे हुनकर बीमार संगी मनुखक हाथ मे जाय। ओना, स्क्वीलर हुनका सभके समझा-बुझा देलक जे बथानमे जे किछु केल जा सकैत छल, ओकर तुलना मे विलिंगडनमे मवेशी चिकित्सक बॉक्सरक इलाज बेसी संतोषजनक तरीके सं क' सकत। लगभग आध घंटाक बाद, बॉक्सरक हालत कनि संभलक। ओ बड मोश्किल सं अप्पन पइर पर ठार भ' सकल, आ लंगड़ाबैत अप्पन थानकक दिस चलल। क्लोवर आ बैंजामिन ओकरा लेल नीक तरहसं पुआल बिछा क' ओकर बिछौना तैयार केने छल।

अगिला दू दिन धरि बॉक्सर अप्पन थान मे पडल रहल। सुग्गैर गुलाबी दवाक एकटा पैग शीशी भिजवा देने छल। ओकरा ईई बाथरूममे दवाई के डिब्बा मे भेटल। क्लोवर बॉक्सर के खाय क बाद दू बेर ई दवाई दैत छल। सांझक काल ओ बथान मे ओकरा लग बैसइत छल, ओकरा सं गप करैत छल, जबकि बैंजामिन ओहि पर सं माछी उड़बैत छल। बॉक्सर बाजल जे किछु भ' गेल, ओहि पर अफसोस नै करू। जों ओ जल्दी नीक भ' गेल ते ओ अगिला तीन बरख धरि जीबाक उम्मीद क' सकैत अछि आ ओ आगू आबय बला आरामक दिन देखि रहल अछि, जेकरा ओ पैघ चरागाहक एकटा कोन मे बिता सकत। ई पहिलुक बेर होयत जे ओ फुर्सत सं पढि-लिखि सकत आ अपन ज्ञान बढ़ा सकेत। ओ बतौलक जे ओ अप्पन जिनगीक बाकी दिन वर्णमालाक बाकी बचल अक्षर सीखय मे लगा दैक चाहैत अछि।

बैंजामिन आ क्लोवर ते बॉक्सरक संग सिर्फ काजक काल के बाद रहि सकैत छल, मुदा यहि दुपहरक काल छल जखन ओकरा ल' जेबाक लेल एकटा गाड़ी आयल। सब माल जाल एकटा सुग्गैरक देखरेख मे कद्दूक खेतक खरपतवार निकालैक काज मे जुटल छल। टखने सभके बैंजामिन के बथान दिसक मकान दिस सं तेजी सं भागैत आबैत देखि के हैरानी भेल। ओ पूरा गला सं जोर सं रेंक रहल छल। सब पहिलुक बेर बैंजामिन के इत्ते उत्तेजित देखने छल आ पहिलुक बेर लोक ओकरा भागैत देखने छल। 'जल्दी करू, जल्दी करू।' ओ चिकरल। 'जल्दी आऊ, ओ बॉक्सर के ल' क' जा रहल अछि।' सुग्गैरक आदेशक परवाह केने बिना सबटा माल-जाल काज छोडि के बथान दिस दौड़ल। हां, ओतय अहातामे एकटा बंद गाड़ी मे राखल छल, जाहि मे घोड़ा जुतल छल। गाड़ी के दुनू दिस किछु लिखल छल आ चालकक गद्दी पर बैसल बड़का हैट पहिने धूर्त-सन लागय बला एकटा लोक बैसल छल। बॉक्सरक थान खाली छल।

माल-जाल वैन के चारू दिस भीड़ लगाके ठार भ' गेल। 'अलविदा, गुड बाय, बॉक्सर' सब मिलके बाजल।

मुर्खाबा सब! कामचोर! बैंजामिन चिकरल, ओ अप्पन छोट-छोट सुम सं धरती खोदय मे आ आगू-पाछू हुए लागल। मुर्खाबा! नजरि नै आबैत छौ, एही गाडी के दुनु दिस की लिखल छै?'

ई सुनि के सभटा माल-जाल रुकी गेल। एकदम सन्नाटा छा गेल। मुरियल हिज्जे करि के पढ़ब शुरू केलक। मुदा बैंजामिन ओकरा एक दिस धकेलब आ श्मशानी सन्नाटा मे पढ़ब शुरू केलक।

'अल्फ्रेयड सिमौंड्स, घोड़ा कसाई आ हड्डीक गोंदक निर्माता, विलिंगडन। चाम आ हड्डी चूरक विक्रेता। कुक्कुरक सप्लायर। अहां के बुझय मे नै आबैत अछि, जे एकर सबके की मतलब अछि? ओ बॉक्सर के बूचड़खाना ल' के जा रहल अछि।'

मालजाल मे डर सं एकटा चीख निकलि गेल। तखने गद्दी पर बैसल आदमी घोड़ा के चाबुक मारलक आ गाड़ी रकम-रकम अहाता सं बाहर जाय लागल। सबटा मालजाल गला फाडैत ऊंच आवाज मे चिकरैत ओकर पाछां दौड़ल। क्लोवर धक्का-मुक्की क' के आगां दिस आबि गेल। गाड़ी आब तेज गति मे आबि गेल छल। क्लोवर अप्पन भारी-भरकम देह के गति दैक लेल सीधे दौडैक कोशिश केलक। 'बॉक्सर,' ओ चिकरल, 'बॉक्सर! बॉक्सर' आ ठीक ओहि काल गाडीक पिछला खिड़की सं बॉक्सरक उज्जर-डडीर बला चेहरा नजरि आयल। ओ शायद बहरक हल्ला-गुल्ला सुनी लेने छल।

'बॉक्सर,' क्लोवर तेज आवाज मे चिकरल। जल्दी बाहर आबू। ओ अहां के अहां के मौतक लग ल' जा रहल अछि।' सबटा माल जाल चिल्लाबय लागल, 'बॉक्सर, बाहर आबू, बॉक्सर, बाहर आबू।' मुदा गाडी स्पीड मे आबि चुकल छल आ हुनका सं दूर भेल जा रहल छल। ई पता नै छल जे बॉक्सर के क्लोवरक कहल किछु बुझि मे आयल की नै?

मुदा, क्षण भर बाद खिड़की सं बॉक्सरक चेहरा गायब भ' गेल आ गाड़ी मे सं जोर-जोर सं पइर पटकैक, टापैक आवाज आबय लागल। ओ पइर सं दरवाजा तोड़ के बाहर आबय के कोशिश क' रहल छल। एकटा समय छल जखन बॉक्सरक पइर गाड़ी के माचिसक डिबियाक तरहे तहस-नहस क' दैत छल। मुदा अफ़सोस। ओकर ताकत ओकर संग छोडिक चलि गेल छल आ फेर एकाएक खत्म भ' गेल। हताश भ; माल जाल गाडी के दुनू घोड़ा सं चिरौरी करब शुरू क' देने छल, जाहि सं ओ गाड़ी रोकि दिए, 'कॉमरेड्स, कॉमरेड्स,' ओ चिकरलक। 'अप्पन भायके मौतक मुंहमे नै ल' क' जाऊण' मुदा मूर्ख जानवर एतेक अज्ञानी छल जे बुझि मे नै आयल जे भ' की रहल अछि। ओ अप्पना कान पट-पटैलक आ अप्पने चाल तेज क' देलक। बॉक्सरक चेहरा खिड़की मे दोबारा देखाह नै पडल। जा धरि केकरो सूझतिये जे आगू बढि के पांच सलाख बला गेट बंद क' दिए, टा धरि बड देर भ' चुकल छल। अगिला पल गाडी गेटक बाहर छल आ तेजी सं सड़क पर जा कर नजरि सं ओझल भ' गेल। बॉक्सर के फेर कहियो नै देखल गेल।

तीन दिन बाद बताओल गेल जे ओ विलिंगडनक अस्पतालमे चलि बसल। हालांकि ओकरा घोड़ा के भेंट सकय बला बेहतरीन इलाज उपलब्ध कराओल गेल। स्क्वीलर दोसर माल-जाल के ई गप कहलक। ओ कहलक जे ओ बॉक्सरक अंतिम घड़ीमे ओकर सिरहाने पर छल।

'ई हमर जीवनक आय धरि देखल गेल सबसं बेसी करुण दृश्य छल।' स्क्वीलर अप्पन पइर के उठा क' नोर पोंछैत बाजल, 'हम आखिरी पलक संग ओकर सिहराने आर छलहुं, आ जखन ओकर अंत आयल, ओ एतेक कमजोर छल जे बाजि नै सकैत छल, ओ हमर कान मे फुसफुसायल जे ओकर सबसं बेसी तकलीफ ई जो पवनचक्कीक पूरा होय सं पहिने ओ जा रहल अछि। बगावतक नाम पर आगू बढ़ू। बथान अमर रहय। कॉमरेड, नेपोलियन अमर रहय। नेपोलियन हमेशा ठीके कहैत अछि, यहि ओकर अंतिम शब्द छल, कॉमरेड्स'।

ओतय पहुंचके स्क्वीलरक लहजा कनि बदलि गेल। ओ एक पलक लेल चुप भ' गेल। अपन गपआगू बढाबै सं पहिने शक नजरि सं चारू दिस अप्पन छोट-छोट आंख घुमैलक।

ओ बतौलक जे ओकर जानकारी मे ई गैप आयल अछि जे बॉक्सर के ल' जायत काल एकटा वाहियात आ मूर्खतापूर्ण अफवाह पसारल गेल छल। किछु माल जाल देखने छल जे बॉक्सर के ल' जाय बला गाडी पर 'घोड़ा कसाई' लिखल छल, एही सं सब एही नतीजा पर जा पहुंचल जे बॉक्सर के बूचड़खाना भेजल जा रहा अछि। ई ते बिलकुल असंभव अछि, स्क्वीलर बतौलक, कोनो माल जाल एतेक मूर्ख होयत। ओ नंगरी हिलाबैत आया बाम-दहिन फुदककैत धूर्तता सं चिकरल जे निश्चित ओ अप्पन प्रिय नेताजी के एकरा सं बेसी काजक लेल जानैत छी? मुदा, एकर स्पष्टीकरण बिलकुल सरल अछि। पहिने ओ गाडी बूचड़खानाक संपत्ति छल, फेर ओकरा घोड़ा डॉक्टर कीन लेलक। ओ आय धरि लिखला नाम के पेंट नै करौने छल। एही सं सबटा गलती भेल।

ई सुनिके माल-जाल के बड राहत भेटल। आओर जखन स्क्वीलर बॉक्सर कें मरैत कालक ब्यौरा बारीकी सं बताबय लागल, आ ई कहय लागल जे ओकर कत्ते नीक सं देखभाल भेल आ नेपोलियन सेहो कीमतक रत्ती भारि परवाह केने बगैर ओकरा लेल महंग दवाय मंगौलक, ते सबके आख़िरी शक मिटा गेल। ओ अपने कॉमरेडक मरय सं जे दुःख महसूस क' रहल छल, ई सोचि के कनि कम भ गेल जे चलू, ओ खुशी-खुशी मरल।

अगला रवि दिनक भोर बैठक मे नेपालियन अपने सं हाजिर भेल आ बॉक्सरक सम्मानमे एकटा छोट-सन भाषण देलक। ओ बतौलक जे हुनकर बिछुड़ल संगीक शव बथान मे दफनाबैक लेल आनब संभव नै छल। ताहि सं ओ ई आदेश देने छल जे फार्म हाउसक बगीचा मे जयपत्रक एकटा पैघ सन माला बनाओल जाय आ बॉक्सरक सारा पर राखल जाय। आओर किछु दिन मे सुग्गैर बॉक्सरक सम्मानमे एकटा यादगार दावत राखहि के सोचने अछि। नेपोलियन अप्पन भाषण बॉक्सरक दू टा प्रिय सूत्रवाक्यक याद दियाबैत ख़त्म केलक, 'हम आओर बेसी परिश्रम करब' आ 'कॉमरेड नेपोलियन सदिक्खन ठीक कहैत अछि' ओ बाजल जे ई सूत्रवाक्य सभटा माल-जाल अप्पन जीवनमे उतारि लेब चाहत।

भोजक दिन विलिंगडन सं किरानाक गाड़ी आयल आ फार्म हाउसमे लकड़ीक एकटा पैघ-सन पेटी सौंपल गेल। ओही राति ओतय जोर-जोर सं गाबय के आवाज आबैत रहल। ओकर बाद लागल, जेना मारि-पिट आ झगड़ा चलि रहल हुए। साढ़े ग्यारह बजे गिलास टूटैक आवाजक संग सब किछु शांत भ गेल। अगिला दिन फार्म हाउसमे दुपहर धरि कोनो हरकत नहि छल, आ ई खबर पसैर गेल छल जे कत्तो-नै-कत्तो सं सुग्गैर व्हिस्कीक एकटा आउर पेटी कीनय के लेल पाय के जुगाड़ क' लेने अछि। ■

(क्रमशः)

पद्मश्री श्रीमती गोदावरी दत्त सं बातचीत

मिथिला पेंटिंग या मधुबनी पेंटिंग भारतीय सांस्कृतिक-कला व बिहारक धरोहर छी। आय अपन पहचानक कारण इ विशुद्ध भारतीय कला मं शुमार अछि। मां जगदम्बा, जगतजननी सीता जी क वरदान व आशीर्वाद सेहो एहि कला क प्राप्त अछि। नागरिक सम्मान सं विभूषित पद्मश्री गोदावरी दत्त जी क वर्ष 2019म राष्ट्रपतिक कर कमल सं 16 अप्रैल क पद्मश्री पुरस्कार प्राप्त भेलेनि। एहि सं पूर्व 12 अप्रैल 2019 क ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय क दीक्षांत समारोह म डी.लिट मानद उपाधि सेहो देल गेलैन। मधुबनी पेंटिंग मिथिला क्षेत्रक साथ सीमावर्ती नेपाल म सेहो प्रचारित व प्रसारित अछि। एहि चित्रण म जटिल ज्यामितिय संरचना एकर विशेषता छी। मिथिलाक धार्मिक रीति-रिवाज, उत्सव, पर्व, त्योहार, मांगलिक कार्यक्रम म बिना मधुबनी पेंटिंग क पूर्ण नहि मानल जायत अछि। **गोदावरी दत्त जी केर पेंटिंग आ जीवन सं संबंधित विविध पक्ष पर तीरभुक्तिक लेल बातचीत कयलनि अछि रूपेन्द्र कुमार झा जे सीतामढ़ी जिलाक परिहार प्रखंडक वीडियो छथि। प्रस्तुत अछि एहि वार्ताक मुख्य अंश...**

प्रश्न : आपके जन्म कतऽ भेल?

गोदावरी दत्त : जी, बहादुरपुर गांव (दरभंगा), नवम्बर, 1930 ई.।

प्रश्न : विवाहक स्थान (ससुराल)?

गोदावरी दत्त : रांटी (मधुबनी)।

प्रश्न : मधुबनी पेंटिंगक कि विशेषता अछिजे एकरा भारतीय कला म एकटा विशिष्ट स्थान प्राप्त भेल?

गोदावरी दत्त : मिथिलाक संपूर्ण सांस्कृतिक पहचान एहि कला म चित्रित होयत अछि। ताहि सं आय विश्व भरि म एकर अपन अलग पहचान अछि।

प्रश्न : मधुबनी पेंटिंगक प्रेरणा कतऽ स भेटल?

गोदावरी दत्त : हमरा एकर प्रेरणा अपन माय स्व. सुभद्रादेवी सं प्राप्त भेल। ओ सशक्त महिला, हमर 'कला-गुरु' छलैथ। विवाह, उपनयन, मुंडन आदि शुभ मांगलिक कार्य म मायक संग बचपने सं चित्रकारी करैत छलौव।

प्रश्न : मधुबनी पेंटिंग म मुख्यरूप सं विषय-वस्तु कि होयत अछि?

गोदावरी दत्त : देखु माछ जे दरभंगा राजक राजकीय चिन्ह छलैनि, धनुष, डमरू, राम, कृष्ण, लक्ष्मी, सरस्वती, शिव, दुर्गा, गौरीशंकर, अहिपन, कोहबर, तांत्रिक, मरनी, गोदना वा सूर्य, चन्द्रमा (प्रकृति) आदिक चित्रण होयत अछि।

प्रश्न : एहि पेंटिंगक राजकीय संरक्षण आ प्रोत्साहन पर अपनेक कि विचार अछि?

गोदावरी दत्त : तत्कालीन रेलमंत्री स्व. ललित बाबु के प्रेरणा सं ओहि समयक प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी एहि कला व कलाकार क बारे म जानय लेल भास्कर कुलकर्णी क भेजने छलाह। जितवारपुर (मधुबनी) म एहि कला व कलाकार सबसं परिचय केलाह। महासुंदरी देवी सेहो साथ देलखिन। हमरा सं नहि मिल सकला कारण जे ओहि समयम औरतक घर स बाहर पुरुष सं बातचीत नीक नहि मानल जायत छल। बाद म सहायक निदेशक एच.पी. मिश्रा जी जे उड़ीसाक एहनिहार छलाह आ जगन्नाथ मिश्र जी सं एहि कला पर विस्तृत बातचीत भेल।

प्रश्न : पुरस्कारक जानकारी देल जाउ जे अपनेक राज-सरकार स प्राप्त भेल?

गोदावरी दत्त : हमरा छह गो राजकीय पुरस्कार प्राप्त भेल। वर्ष 1972 ई. सं राज सरकार सं पुरस्कार भेटऽ लागल। 1980 ई.म तत्कालीन राष्ट्रपति नीलम संजीव रेड्डी जीक हाथ सं राष्ट्रीय पुरस्कार भेटल। एखनि धरि बिहार म्युजियम म हमर पेंटिंग प्रधानमंत्री जी सेहो देखलाह आ सराहना केलैथ। वर्ष 2006म 'शिल्प गुरु' सम्मान सेहो प्राप्त भेल।

प्रश्न : नवतुरिया महिला/ पुरुष कलाकार एहि पेंटिंगक सिखऽ लेल कतऽ संपर्क करता?

गोदावरी दत्त : मधुबनी म भारत सरकारक कार्यालय ऐहि वास्ते अछि। आब किछु निजी संस्थान सेहो मधुबनी, रांटी, जितवारपुर, दरभंगा आदि म प्रशिक्षण दऽ रहल छैथ। एखनि धरि 1 जून सं 25 जून तक एहि रांटी (मधुबनी) म सोनेलाल जनता पुस्तकालय म ट्रेनिंग चलत। स्वयं हमहुं 7 बेर जापान म एहि पेंटिंग क प्रदर्शन कैलौव। साथहिं प्रशिक्षण सेहो समय-समय पर दैत छी।

प्रश्न : युवा पीढ़ीक अपनेक कि संदेश देबय?

गोदावरी दत्त : हम कहब चाहै छी जे नवतुरिया पुरुष आ महिला कलाकार अपन इ मधुबनी पेंटिंग मऽ रूचि लियऽ, चित्रकारी क नव ऊंचाई पर लऽ जाऊ। आय नवतुरिया कलाकार सब मधुबनी आ दरभंगा स्टेशन पर मिथिला पेंटिंग सं सौंदर्यीकरण केलाह। ई प्रशंसनीय अछि। सब कियो उत्साह आ उमंग सं एहि पेंटिंग क प्रचार-प्रसार करू। साथहिं 'मिथिला' ऑनलाइन बाजार पर जुड़ि कऽ अपन उचित पारिश्रमिक पर पेंटिंग बिक्रय क सकय छी।

साड़ी, दुपट्टा, पर्दा, बर्तन आदि पर मिथिला पेंटिंग क चित्रण एकर नबका आयाम छी। इ पेंटिंग प्रकृति स जुड़ी अछि। गेरू मिट्टी, सिंगारक डंठल सं पियर रंग डिबिया क कालिख स कारी रंग, चाउर क पीसकऽ पीठार आ सिंदुर आदि सं सेहो चित्रण, बांसक कमची, माचिसक तिल्ली सं होयत अछि। एहि क्रम मऽ एकटा अष्टद्रव्य अरिपन सेहो प्रसिद्ध अछि।

निश्चितरूप सं ई पेंटिंग दिनो-दिन प्रसिद्धि प्राप्त करत। अपनेक सं बातचीत उत्साहवर्द्धक रहल, हृदय सं आभार। ■

चेतना समिति, पटना द्वारा आयोजित अंतरराष्ट्रीय मैथिल संस्था सम्मेलनक अवसर पर समितिक अध्यक्ष विवेकानन्द झा, अखिल भारतीय मिथिला संघक अध्यक्ष विजयचन्द्र झा आ आन अतिथिगण

वयोवृद्ध साहित्यकार श्री गोविन्द झा कें अखिल भारतीय मिथिला संघक दिश सं सर गंगानाथ झा सम्मान प्रदान करैत संघक अध्यक्ष विजयचंद्र झा आ आन गणमान्य लोकनि

चेतना समिति द्वारा आयोजित अंतरराष्ट्रीय मैथिल संस्था सम्मेलनमे उपस्थित विविध मैथिल संस्था सवहक प्रतिनिधिगण

प्रकाशक आ मुद्रक विजयचंद्र झा द्वारा अखिल भारतीय मिथिला संघक दिशसं मकान नंबर एच-435, गली नं. 7, ई-ब्लॉक, संगम विहार, नई दिल्ली-110062 सं प्रकाशित आ जे.के. ऑफसेट, बी-278, ओखला इंडस्ट्रीयल एरिया, फेस-1, नई दिल्लीसं मुद्रित।
संपादक : विनीत कुमार झा 'उत्पल'